CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हिन्दी वैद्यकल्पतरु ग्रन्थमाला

वाजीकरकल्पतरु

HOW TO ATTAIN MANHOOD & WOMANHOOD.

लेखक व प्रकाशक

वैद्य जटाशङ्कर लीलाधर त्रिवेदी.

सम्पादक " वैद्यकल्पतरु "

अहमदाबाद.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri Funding: MIDF

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

" हिन्दीवैद्यकल्पतरु ग्रन्थमाला " पुष्प १.

वाजीकरकल्पतरु.

अर्थात्

पुरुषत्व और स्त्रीत्व प्राप्त करानेवाले सर्वोत्तम नियम व उपाय।

२३२

लेखक व प्रकाशक

वैद्य जटाशङ्कर लीलाधर त्रिवेदी

सम्पादक, " वैद्यकल्पतरु "

अहमदाबाद.

प्रथमावृत्ति १०००. सन १९१४.

मूल्य रु. ०—८—०.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इस ग्रन्थ संबंधी सर्व प्रकारका हक
स्वाधीन रक्खा गया है.

Acc. Eo8
804

अहमदाबाद शाहपुर नवी पोळमें दलपतराम मकनदासने
अपने "प्रजाहितार्थ" मुद्रालयमें मुद्रांकित किया।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हिन्दी साहित्य सम्मेलन
कार्यालय।

अनुवादकका निवेदन।

भारतवर्षकी राष्ट्रभाषा हिन्दी है। जैसे भिन्न २ प्रान्तके रहनेवाले अपना साधारण परिचय देनेके समय अपनेको अमुक प्रान्तके निवासी कहते हैं; किन्तु विशेष परिचय देनेके समय अपनेको "हिन्दी" हिन्दुस्थानके निवासी ही कहते हैं; वैसेही भारतके भिन्न २ प्रान्तवाले अपनी मातृभाषारूपसे अमुक भाषाको स्वीकार करनेपरभी राष्ट्रभाषारूपसे अपनी भाषाको "हिन्दी" ही कहेंगे। सारांश कि हिन्दी हमारे राष्ट्रकी भाषा है, उसके ऊपर राष्ट्रके हरएक व्यक्तिका अधिकार है, और उसकी सेवा करना हरएक राष्ट्रीय व्यक्तिका कर्तव्य है। इसी विचारसे मान्यवर वैद्यराज जटाशंकर लीलाधर त्रिवेदीजीने कुछ समयसे हिन्दीकी सेवाके विचारसे और अपने विचारोंको भारतवासियोंमें प्रचार करनेके विचारसे १९१३ जनवरीसे "हिन्दी वैद्यकल्पतरु" मासिक पत्र प्रकाशित किया है। गुजराती भाषामें आप कोई १९ वर्षसे "वैद्यकल्पतरु" नामक मासिक पत्र निकाल रहे हैं, जिसके ३००० से ऊपर ग्राहक हैं, उसीका एक हिन्दी संस्करण निकालने लगे हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जिसमें "वैद्यकल्पतरु" के प्राचीन समयके व वर्तमान समयके लेखोंका अनुवाद व कुछ स्वतन्त्र लेख प्रकाशित हो रहे हैं। मान्यवर वैद्यराजजीने मासिक पत्रके सम्पादनके उपरान्त गुजराती भाषामें वैद्यक सम्बन्धी कई ग्रन्थ लिखे हैं। आपके द्वारा लिखे हुए उन ग्रन्थोंमेंसे एक छोटासा ग्रन्थ आज हम हिन्दी पाठकोंकी सेवामें उपस्थित करते हैं।

एक भाषासे दूसरी भाषामें अनुवाद करनेपर पूर्वकी भाषा की कुछ टून या महावरा प्रायः दूसरी भाषामें आ जाता है। यह दोष इस पुस्तकमें भी होगा; किन्तु अनुवादककी मातृभाषा गुजराती है, उसने इसको गुजराती भाषामेंसे अनुवाद किया है, वह गुजरात प्रदेशमें बैठकर इसको लिख रहा है, वह अल्पज्ञ होनेके उपरान्त कुछ प्रमादी है; साथही उसका यह एक प्रकार नवीन यत्न है, इन सब बातोंका विचारकर और इसको प्रोत्साहन व योग्य उपदेश देने पर हिन्दीकी अधिक सेवा करनेके लिये वह उद्यत है, ऐसे अनेक विचारोंको हृदयमें स्थान देकर हिन्दीके उदार समालोचक व पाठक इस पुस्तकमें रही हुई त्रुटियोंके लिये उसे अवश्य क्षमा प्रदान करेंगे.

माधव शर्मा—अनुवादक.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्रस्तावना।

इस संसारमें शरीर व मनको आरोग्य एवं आनन्दित रखकर तंदुरुस्त, सुन्दर और सदाचारी सन्तति-प्रजाकी वृद्धि करना यह मनुष्यजातिका प्रधान व महानमें महान् कर्तव्य है। संसारमें सब प्रकारके सुख और सब प्रकारकी उन्नतिका आधार शारीरिक व मानसिक बलके ऊपर रहा हुआ है। यह बात हमारी ओरसे अनेकवार कही गई है। और शास्त्र प्रमाणसे एवं तर्क प्रमाणसे अथच प्रत्यक्ष प्रमाणसे भी यह बात सिद्ध हो चुकी है। हरएक प्रकारका सुख या दुःख सम्पत्ति या विपत्ति इन सबोंका पूर्वजन्मके कृत्य या संस्कारके साथ सम्बन्ध रहता है, ऐसे मतका स्वीकार करनेसे उसमेंसे भी यही सार निकलता है, कि पूर्व जन्ममें उत्तमकृत्य या उत्तम विचार किये हुए हों तो दूसरे जन्ममें वैसेही संस्कारवाली मण्डली-जातिमें जन्म होता है, और जन्म होनेके पीछेके कृत्य व विचारोंमें भी पूर्वजन्मके उत्तम या अधम संस्कारोंकी अभिवृद्धि किस प्रकार होती है? यह विचार करने योग्य बात है, उस विचारमेंसे एक ऐसी आवश्यकीय कुञ्जी अपने हाथमें आजाती है, कि यदि उसका यथायोग उपयोग किया जाय, तो उस कुञ्जीसे एक मूल्यवान संदूकका पवित्र खजाना प्राप्त हो सक्ता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मनुष्यके संस्कार किम्वा अच्छी बुरी, वासनायें शरीर और जीवके संयोगसे संघटित होती हैं। जैसे शरीर जीवात्माके द्वारा जीवित है; वैसेही जीवात्मा शरीरके आधारसे ही कार्य कर सक्ता है, और शरीरके सर्व धर्मोंका अनुसरण करके चलता है। संस्कार बंधानेके लिये शरीर और जीवके योगमें उन्हें विविध प्रकारके खानपान मिलते हैं। खानपान जीवके संस्कार संघटित करनेमें सहायता करते हैं, और वृत्तियोंको अच्छे बुरे कार्यों तरफ ले जानेवाला भी खानपान ही है; किन्तु संस्कार संघटित करनेवाले अर्थात् मनुष्यके स्थूल और सूक्ष्म शरीरमें अच्छी या बुरी वृत्तियोंको, गुणको और स्वभावको सिञ्चन करनेका प्रधान साधन खानपान ही हैं, कि जिसके द्वारा शरीरके तत्त्व संगठित होते हैं, अतएव पूर्वजन्मके संस्कारोंके पक्षमें भी यही बात सिद्ध होती है, कि इस जन्ममें या पूर्वजन्ममें जो संस्कार संगठित होते हैं, वेही संस्कार सुख दुःखके कारण होते हैं, और संस्कार संगठित करानेवाली शारीरिक व मानसिक वृत्तियां हैं; किन्तु वे वृत्तियां जिस प्रकार शिक्षा व समागमसे बनती हैं, उसी प्रकार आहार विहारके साथ उनका घनिष्ट सम्बन्ध है,

इन सब बातोंका संक्षेपमें यही सार है, कि शारीरिक और मानसिक शक्ति यही सुख या दुःखका कारण है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

शारीरिक व मानसिक शक्तिको सुख दुःखका कारण कहनेका यही अर्थ है, कि केवल उन्मत्त होनेवाली शक्ति यह कुछ उन्नतिका सत्य साधन नहीं है। उन्मादी व पागल मनुष्योंमें शारीरिक बल सामने बढता है; किन्तु इससे यह कभी नहीं कहा जा सक्ता कि वे बलकी बातमें श्रेष्ठ हैं। जो शक्ति मनुष्यके विचारको और विवेकबुद्धिको नियममें, नीतिमें और निश्चयमें रखती है, और वैसी सच्ची शक्तिके तत्वोंको बढाना यही शारीरिक व मानसिक उन्नति है, वही मनुष्यत्व है, और वही धर्म किम्वा कर्तव्य है। वैसी उत्तम शक्ति किस प्रकार प्राप्त करना? इस उद्देशको सामने रखकर मैने "युवावस्थानो शिक्षक, ब्रह्मचर्य, बाललग्न, आरोग्य रहेवाना उपायो" प्रभृति पुस्तकें लिखी हैं, यह पुस्तक भी उसी उत्तम उद्देशका परिणाम है। वाजीकर उपाय लिखकर लोगोंको विषय या व्यभिचारके मार्गकी ओर ले जाना यह मेरी इस पुस्तकका कदापि उद्देश नहीं है। इस पुस्तकको प्रकाशित करनेका यही हेतु है, कि इसमें बताये हुए नियम व उपायोंके पालन करनेसे स्त्रीपुरुष शरीरसे सुघड, सुदृढ और सुन्दर बने! एवं वैसी ही उत्तम सदाचारी सन्तति-प्रजाके उत्पन्न करनेके लिये शक्तिमान हों।

मैने "सारी सन्तति" नांवकी पुस्तक लिखी है, जिसमें सभी आवश्यक विषयोंको लेकर स्त्रीपुरुषोंके लिये ध्यानमें

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

रखने योग्य नियम बताये गये हैं। जिसे वार २ पढनेकी मैं सिफारश करता हूं। मेरी यह पुस्तक भी उसी विषयकी पुष्टि देनेवाली है। जैसे उस पुस्तकमें नियम बताये गये हैं, वैसे इस पुस्तकमें उपाय बतानेका यत्न किया गया है। इन उपायोंका नाम मैंने "वाजीकरकल्पतरु" रक्खा है, वह उचित ही है; क्योंकि स्त्रीपुरुषोंको परस्पर प्रीति उत्पन्न हो वैसे उपायोंका वाजीकरणके विषयमें समावेश होता है, और शारीरिक अवयवोंकी द्रढता, सुंदरता और सुघड़ता ये सब प्रीति व हर्षको उत्पन्न करनेवाली वस्तुयें हैं। जहांपर उन वस्तुओंका अभाव है वहांपर परिपूर्ण प्रीति और हर्षका भी अभाव रहता है, और जहां प्रीति और हर्षका अभाव रहता है, वहांपर उत्तम बालकोंके उत्पन्न होनेकी संभावना नहीं हैं। शारीरिक आरोग्य और उसके द्वारा सुन्दर प्रजा उत्पन्न करनेके लिये हमारे देशवासी समझदार व समर्थ हों, यही इस विषयका प्रधान उद्देश है। फिर जो उपाय इस निबन्धमें दिये गये हैं, वे ऐसे हैं कि जिससे तरुण स्त्रीपुरुष अपने गुह्य रोगोंका सुधार करसकें, अपने शारीरिक अवयव और अंगोंको सुदृढ व सुन्दर रख सकें, और संसारका सुख अच्छी तरहसे सम्पादन कर सकें। इन उपायोंको लक्षमें रखकर उसका उपयोग करनेसे इस प्रकार प्रधान व गौण दोनों हेतु पूर्ण होंगे।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

स्त्रीपुरुषोंके विवाह किम्वा संसार सुखका हेतु अच्छी तरहसे पूर्ण करनेके लिये निरोगी स्त्रीपुरुषोंने पूर्ण वयमें आनेके पश्चात् विवाह करना या संसारमें पड़ना चाहिये। कुदरत व सत्शास्त्रकी यही आज्ञा है। मैंने अपने मासिक-पत्रमें व पुस्तकोंमें इस बातपर वारम्वार स्मरण कराया है, उसी बातको फिर यहांपर स्मरण कराता हूं। निरोगी व योग्य वयके दम्पति-स्त्रीपुरुष संसारमें जिस सुखको भोगते हैं उसका अनुभव विचारे भाग्यहीन रोगी व कच्ची वयमेंही संसारमें पड़कर दुःखी होनेवाले दम्पति-स्त्रीपुरुषोंको कहांसे होसक्ता है? हिन्दूसंसारमें बहुतसे दम्पति-स्त्रीपुरुष ऐसी अधमदशाको भोगते हुए देखे जाते हैं, कि उनकी जिन्दगी पशुसे भी अधिक भ्रष्ट बनी हुई हमें मालूम होती हैं। यूरोप अमेरिकाके उच्च कुटुम्बोंके इतिहासको पढकर, और वहां जाकर आये हुए सज्जनोंके मुखसे सुनकर, हमें उन लोगोंकी शारीरिक शिक्षा सम्बन्धी जो उपाय किये जाते हैं, उसके लिये हर्ष होता है। और दूसरी ओर अपने देशके शिक्षित कुटुम्बोंमें भी शारीरिक शिक्षाकी ओर बेपरवाही रहती है, उसको देखकर खेद होता है, इग्लेंड प्रभृति देशोंमें कुछ ऐसे भी उच्च कुटुम्ब हैं कि जो अपने लड़के लड़कियोंको वड़ी उम्मर तक ससारकी भ्रष्ट वातोंसे दूर रखते हैं। उन्हें बड़ी उम्मर तक केवल शा-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

रीरिक व मानसिक शिक्षा दीजाती है,और इन दोनों प्रकारकी उत्कृष्टता प्राप्त होनेपर पूर्ण वयमें योग्य पति पसंद करनेके लिये छुट्टी दी जाती है। वहांपर भी निम्नश्रेणीके लोगोंकी अपूर्ण वयकी लड़कियां संसारकी भ्रष्ट बातोंमें पड़तीं होंगी। अपूर्ण वयसे सांसारिक बातोंमें पड़नेसे व अपूर्ण वयमें ही संसारी बननेको उत्सुक होते हैं, और उसमें फसकर नष्ट भ्रष्ट होजाते हैं। अपना वर्तमान समयका हिन्दूसंसार तो इस भ्रष्टतामें उदाहरणरूप होरहा है,और अपनी सांसारिक स्थिति पूर्णरूपसे पतित होरही है। नये व पुराने,राजा व रंक इन सभी हिन्दुओंकी सांसारिक स्थिति अत्यन्त अधम होरही है। जब पुराने विचारके लोगोंने बालविवाह प्रभृति दुष्ट व हानिकारी पृथाओंसे अपना संसार भ्रष्ट कररक्खा है; तब नवीन विचारके बाबूओंने अपूर्ण शिक्षाके परिणामसे योग्यताके बिना ही अवधिके उपरान्त स्वतंत्रता लेकर संसारकी दुर्दशा कर रक्खी है। इससे दोनोंमेंसे कोई भी एक दूसरेको कुछ कहनेकी स्थितिमें नहीं है।

इन सब बातोंका सार यही है, कि अपने समाजकी शारीरिक दृढताकी नींव, बहुत समयसे बिगड़ी हुई चली आती है। उसमें अतियोग, व्यभिचार, उससे होनेवाली व्याधियें और उपाय करनेकी बेपरवाही अथच अज्ञानता इन सबोंने एकत्र मिलकर संसारकी दुर्दशा कर रक्खी है,। ऐसी दशामें

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बिचारे पुरुषत्वहीन पुरुष पुरुषत्वके लिये मारे २ फिरते हैं, और वैद्य डाक्टरोंके शरणागत हो रहे हैं; किन्तु मूलसे बिगड़ा हुआ बीज सुधर नहीं सक्ता और शोचनीय जिन्दगी खतम हो जाती है। समाजके दुर्भाग्यसे लोगोंको बहुत ही विपरीत सलाह मिलती हो ऐसा भी देखा जाता है और ऊंट-वैद्य तथा विज्ञापनिये बिचारे अज्ञानी लोगोंको आड़े रास्तेपर ले जाकर उनमें थोड़ा बहुत पुरुषत्व रहा हुआ हो उसका भी नाश करते हैं, शक्ति देनेवाला गोलियें, धातुपुष्टिकी गोलियें, पुरुषत्व देनेवाली गोलियें, ऐसी उत्तेजक दवाओंने मनुष्य-जातिमें पुरुषत्व बढ़ानेके बदले कम किया है, ऐसा यहांपर विना कहे नहीं रहा जाता। ऐसी दवायें प्रायः ऐसे गुणवाली रहती हैं, कि मनुष्यकी इन्द्रियोंको किम्वा नसोंको जितने जोरसे जागृत करती हैं, उतनेही और उससे भी अधिक जोरसे उन नसोंको फिर शिथिल बना देती हैं। निर्बल मनुष्योंको योग्य औषध और खानपानको सहायता चाहिये; किन्तु वह खानपान और वे दवायें कैसे स्वभावकी होनी चाहिये, उसके लिये अज्ञानी लोगोंको योग्य सलाह मिलनेके बहुत कम स्थान देखे जाते हैं, और जिन्दगीके समान एक अमूल्य वस्तुको दिन दहाड़े दावमें लगाने जैसा व्यवहार अर्थात् व्यापार बढ़ा हुआ है, यह कोई कम लज्जाकी व दुःखकी बात नहीं हैं!

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मैंने इसी लिये इस पुस्तकमें जिन २ औषधियोंका संग्रह किया है, ये विशेषकरके क्षणिक उत्तेजक या क्षणिक लाभ देनेवाली नहीं; किन्तु शरीरके समस्त विभाग व मर्मस्थानोंको दृढ बनानेवाली होकर शरीरमें स्थायी शक्ति देनेवाली हैं। केवल थोड़े ही नुस्खे कामी पुरुषोंके तात्कालिक आनन्दके लिये दिये गये हैं, और उन नुस्खोंका कामी-विषयी पुरुषोंने ही उपयोग करना चाहिये। नियमपूर्वक चलनेवाले विवेकी व सदाचारी लोगोंके लिये उन नुस्खोंका उपयोग जरूरी नहीं है।

पुरुषोंने अपने पुरुषत्वकी किस प्रकार रक्षा करना चाहिये? और स्त्रियोंने अपने स्त्रीत्वको किस प्रकार सम्पादन करना चाहिये? उसके लिये विवेककी मर्यादामें रहकर दिखाये जा सकें वैसे उपाय इस निबन्धमें बतानेका यत्न किया गया है। अर्थात् पुरुषत्व और स्त्रीत्वकी प्राप्तिके लिये जो २ खानपान, औषधोपचार और आहारविहारके नियमोंको जाननेकी आवश्यक्ता है, वे सभी इस पुस्तकमें लिखे गये हैं। यदि विवेकी व धार्मिक स्त्रीपुरुष स्वल्प सूचनाओंके ऊपरसे विशेष समझ सकेंगे, और इस पुस्तकमें की हुई सूचनाओंके अनुसार तरुण स्त्रीपुरुष अपने पुरुषत्वकी और स्त्रीत्वकी रक्षा करनेके लिये प्रयत्न करेंगे तो मैं अपना प्रयत्न सफल समझूंगा।

वैद्य जटाशङ्कर लीलाधर त्रिवेदी।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

श्रीधन्वन्तरये नमः ।

वाजीकरकल्पतरु ।

How to Attain Manhood & Womanhood.

प्रकरण १.

पुरुषत्व और स्त्रीत्व ।

स्त्री पुरुषके युगल स्वाभाविक प्रेरणासे किम्वा कुद-रतने उनमें स्थापित किये हुए धर्मसे गुप्त व्यवहार अर्थात् विहार करते हैं । कुदरतके स्थापित किये हुए इस धर्मका प्रधान हेतु वंशवृद्धिके अतिरीक्त अन्य कुछ हो यह हमें नहीं मालूम होता । और विवाहके पश्चात् स्त्री पुरुषके युगलको स्वाभाविक रीतिसे जो प्रबल इच्छा होती है वही उसके हेतुका प्रत्यक्ष उदाहरण है । इस प्रकार उत्तम सन्तान उत्पन्न करके कुदरतकी सृष्टिकी शोभामें और उसकी आबादीमें अभिवृद्धि

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

करना यह विवाहका अर्थात् स्त्रीपुरुषोंके संयोगधर्मका प्रधान हेतु–मतलब है। इस संसारके समस्त कर्तव्य किम्वा हिन्दुधर्मशास्त्र जिसको "गृहस्थाश्रम" कहते हैं उसको चलानेमें स्त्री और पुरुष दोनोंकी समान आवश्यक्ता सिद्ध होती है और उसासे सदैव साथमें रहकर गृहस्थाश्रम धर्म उत्तमतासे चलानेके लिये स्त्री पुरुषोंके युगलमें अन्योन्य एक प्रकारकी आकर्षण शक्ति रक्खी गई है। उस आकर्षण शक्तिको साधारण लोग "काम" अर्थात् इच्छा इस नामसे पहिचानते हैं। हर्ष और प्रीतिके द्वारा उस इच्छाको पोषण मिलता है। स्त्री पुरुषोंके संयोगका एक तीसरा हेतु भी कहा जाता है; किन्तु वह हेतु सबसे गौण अर्थात् निकृष्ट पक्षका है। वह हेतु यह कहा जाता है कि नर व मादाके युगलोंका सम्बन्ध केवल विषय वासनाकी तृप्तिके लिये होता है। कुदरतका ऐसा स्वभाव किम्वा हेतु नहीं है; किन्तु अनेक मनुष्योंमें वंश परम्परासे विषय वासनाकी वृत्ति अर्थात् आदत्त पड़ी हुई है और वैसी आदत्तके आधीन होनेवाले मनुष्य ही केवल ऐसा विचार रखते हैं। इस निकृष्ट प्रकारके हेतुमें भी यदि वे युगल नीति व नियमसे चलते हैं तो उसमें भी उनको एक प्रकारका

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

आनन्द मिलता है, इतनाही नही; किन्तु उस गौण हेतुसे संसारका आरंभ करके भी यदि वे अपने जातिधर्म और गुणको संभाल रखते हैं तो वे निकृष्ट हेतुमेंसे उत्कृष्ट प्रकारके फलको सम्पादन करनेके लिये भाग्यशाली बनते हैं।

किन्तु संयोग धर्म किम्वा विवाहका यह हेतु किस प्रकार पूर्ण होसके यह अत्यन्त सूक्ष्म विषय है और उसे संक्षेपमें समझानेका कठिन कार्य हमने अपने ऊपर लिया है। संसारमें स्त्री पुरुषोंके जिन २ युगलोंमें अपनी २ जातिके अङ्ग और उनके गुणधर्म सम्पूर्ण रीतिसे परिपक्वताको पहुंचे हो और वैसे सम्पूर्ण गुणधर्मवाले अङ्गोको प्राप्त करके उनका नीति व नियमसे उपयोग करना जानते हैं वैसे ही युगल कुदरतकी इच्छाको पूर्ण कर सकते हैं और वेही "पुरुषत्व" और "स्त्रीत्व" ऐसे पदको प्राप्त करनेके अधिकारी हैं।

पुरुषत्व।

पुरुषत्व अर्थात् पुरुषपन किम्वा मरदके समस्त गुण-धर्मोंका होना। नरनारीके सामान्य गुणोंके उपरान्त पुरुषोंमें खास पुरुषत्वके गुण रहते हैं और स्त्रीमें खास स्त्रीत्वके गुण रहते हैं। इन गुणोंमें जितनी न्यूनता रहती है उतनी ही

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पुरुषत्व किम्वा स्त्रीत्वमें अपूर्णता समझनी चाहिये । पुरुषत्वकी किम्वा स्त्रीत्वकी ऐसी अपूर्णता अनेक वार वंशपरम्परासे चली आती है और वारम्वार नीति और नियमोंके उल्लंघन करनेसे एवं व्यभिचार तथा अत्याचारसे तृप्त होती है जो आगेके प्रकरणोंमें दिखाई जायगी ।

वीर्यका रक्षण और उसका योग्य उपयोग यह पुरुषत्वका प्रथम लक्षण है । कई लोग अति विषय भोगको पुरुषत्व मानते हैं; किन्तु ऐसा मानना मूर्खतायुक्त है । अति विषयासक्ती यह पुरुषत्वकी नहीं; किन्तु निर्वलताकी निशानी है । जैसे अतिक्रोध और असहनता ये निर्वलताके लक्षण है और शान्ति तथा सहनता ये वहादुरी किम्वा वलवानपनेके चिन्ह है; वैसेही अति स्त्रीलम्पटता यह पुरुषत्वकी न्यूनताका लक्षण है और नियमितता किम्वा इन्द्रिय संयमन ये पुरुषत्वके चिन्ह है । जैसे आहार अर्थात् खाने पीनेके पदार्थोंकी आदत पड़ती है; वसेही विहार अर्थात् स्त्रीसेवनके कार्यमें भी एक प्रकारकी आदत पड़ती है; जिससे वारम्वार विषयकी प्रेरणा किम्वा इच्छा हुआ करती है । इसका यह मतलब नहीं कि ऐसे पुरुषोंमें पुरुषत्वका बल है । वास्तविकमें वह बल नहीं;

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

किन्तु निर्बलता है और आदत या व्यसनके कारण वे ऐसे विकारोंके आधीन होते हैं।

जैसे तमाखु और मदिराके व्यसनियोंको इच्छा होनेपर उस वस्तुके विना चल नहीं सक्ता। और यदि वह वस्तु नहीं मिल सक्ती तो उसका मन उस वस्तुके पीछे भ्रमण किया करता है। उसी प्रकार व्यभिचारी किम्वा स्त्रीलम्पट कामी पुरुषोंको वारम्वार कामकी इच्छा होती है और वह इच्छा जब पूर्ण होती है तभी ही वे शान्त होकर वैठते हैं।

शरीरकी समस्त इन्द्रियां आदतके आधीन होती है। होजरीको भी जिस खुराककी आदत पड़ती है उसके विना अन्य खुराक उसमें पड़ता है तो होजरीके ज्ञानतन्तु तुरन्त मगजको शिकायत करते हैं। रोगी मनुष्योंको खुराकमें परिवर्तन करना ठीक नहीं मालूम होता उसका भी यही कारण है। क्या दुग्ध प्रभृति खुराकसे पोषण नहीं मिलता? सामने पोषण तो अधिक मिलता है; किन्तु होजरीको दुधकी आदत नहीं रहती तो उसको भीतरके तन्तुओंके द्वारा मिले हुए समाचारके आधारसे निर्बल मन प्रथम उसको स्वीकार करना नहीं चाहता और वहाना बताता है; किन्तु धीरे२ लेने लगता

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

है और आदत पड़ जाती है; तब वही वस्तु उस होजरीको सात्म्य अर्थात् अनुकुल हो जाती है और पीछे वैसी वस्तुको वह प्रसन्नतासे लेता है। इस प्रकार हरएक अवयव किम्वा इन्द्रियां आदतके आधीन होते हैं। जननेन्द्रियां भी आदतके आधीन रहती हैं; इस लिये वारम्वार स्त्रीसेवनकी इच्छाका होना यह पुरुषत्व नहीं, किन्तु मनकी निर्वलता है।

स्त्री पुरुषके अन्योन्य धर्मके सम्बन्धमें "पुरुषत्व" का अर्थ यही होता है कि शरीरमें वीर्यका सम्पूर्ण परिपाक होनेके पश्चात् उत्तम प्रजाको उत्पन्न करनेका हेतु प्रथम लक्षमें रखकर सम्पूर्ण स्त्रीत्वमें आई हुई और ऋतुवाली होनेसे पतिको मिलनेके लिये पूर्ण रीतिसे आतुर होनेवाली स्त्रीके कुदरतके नियमोंका अनुसरण कर होनेवाले सम्बन्धके परिणामसे ग्लानी, पश्चाताप और अभाव नहीं; किन्तु दोनों ओरसे सम्पूर्ण सन्तोष, हर्ष और प्रसन्नताकी अभिवृद्धि हो यही "पुरुषत्व" है। ऐसे पुरुषत्वको प्राप्त करनेके लिये वीर्यकी रक्षा करनेकी आवश्यक्ता है इस लिये "वीर्य" के सम्बन्धमें यहां पर विवेचन करना आवश्यक है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वीर्य।

वीर्य यह क्या वस्तु है?

वीर्य यह खान पानका अन्तिम परिणाम है। हम लोग जो कुछ खाते पीते हैं उसमेंसे रस, रक्त, मांस, मेद, अस्थि, मज्जा और वीर्य ये क्रमशः उत्पन्न होते हैं। शरीरका समस्त बल उस वीर्यमें है। वीर्य यही शरीरका सत्व, तत्व किम्वा शरीरका राजा है। खान-पानके पश्चात् उसके ऊपरोक्त कथनानुसार रुपान्तर होते २ एक मास व नव घटिकामें वीर्य बनता है ऐसा प्राचीन वैद्यक आचार्योंका सिद्धान्त है। पाचन शक्तिके बलानुसार और खानेके पदार्थोंके गुणानुसार उस अवधिमें न्यूनाधिकता होती होगी; किन्तु साधारण तोरसे एक मासकी अवधि कही गई है वह सम्भवित है। वीर्य यह एक प्रवाही सत्व है और वह सम्पूर्ण शरीरमें रहता है।

गुण और वर्ण.

शुद्ध वीर्य ठंडा, स्निग्ध, चिकना, शहदकी गन्धवाला, स्वादसे मीठा, व घट्ट है और रंगसे स्फटिक जैसा सफेद व पारदर्शक है। ऐसे गुणवाला और रंगवाला वीर्य शुद्ध है और उसमें जितना परिवर्तन हो उतना उसमें दोष समझना चाहिये।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अशुद्ध वीर्य.

अशुद्ध वीर्य रंगसे मैला रहता है किम्वा शरीरके दोषके अनुसार भिन्न२ रंग और वर्णवाला हो जाता है। दोषीवीर्य दुर्गन्धी मारता है, पतला हो जाता है और उसके प्रमाणमें चिकनाई भी कम हो जाती है। इतना ही नहीं; किन्तु अति गरम खुराक खानेवालोंका वीर्य गरम रहता है। ऐसा अशुद्ध वीर्य उत्तम सन्तान उत्पन्न करनेके लिये कामका नही हैं। यह ठीक है कि ऐसे दोषी वीर्यसे भी गर्भ रहता है; किन्तु उस गर्भमेंसे जो प्रजा उत्पन्न होती है वह बुद्धि, बल, पराक्रम और सदाचारमें अपूर्णतावाली होती है। जिस प्रकार ठंडे देशोमें विशेष बलवान प्रजा उत्पन्न होती है जैसे कि इंग्लांड, जर्मनी, अमेरिका, प्रभृति देशोमें उस प्रकार ठंडे वीर्यमेंसे बलवान सन्तति उत्पन्न होती है। इस लिये खुराक ऐसा रखना चाहिये कि वीर्यमें गरमी प्रवेश करने न पावे।

उत्पत्ति.

वीर्य सम्पूर्ण शरीरमें रहता है; किन्तु वह किस प्रकार आकर्षित होकर बाहर आता है। यह समझने योग्य है। जैसे दूधमें घृत और उसमें रस गुप्त-तासे रहा हुआ है। वैसेही वीर्य भी शरीरमें गुप्ततासे रहा हुआ है। जैसे दूधका सहज मन्थन करनेसे उसमें घृत अलग निकल अता

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

है और उसको यन्त्रमें डालनेसे उसमेंसे रस भिन्न पड़ता है वैसेही शरीरमेंसे वीर्य निकल आता है और कम वीर्यवाले शरीरमेंसे अधिक प्रयत्नसे भी थोड़ा वीर्य आता है। जिस प्रकार दस्त व पिसावका जुलाव लेनेसे दस्त व पिशाव होते हैं उसी प्रकार वीर्यका भी शरीरमें जुलाव लगता है और सम्पूर्ण शरीरमेंसे खीचकर शरीरके एक भागमें एकत्र होता है। जैसे हरड़, एरंडीका तेल इत्यादि वस्तु दस्तके जुलाव करनेवाली है और सौरा, ककड़ीके बीज, शीलाजीत प्रभृति पिशावके जुलावकी वस्तुओमें; वैसेही स्त्रीसमागमका संकल्प, स्मरण, स्पर्श, आलिंगन प्रभृति स्त्री सम्बन्धी समस्त चेष्टायें वीर्यका-जुलाव करती हैं। इसके ऊपरान्त खानपानकी कई वस्तुयें भी वीर्यका जुलाव करती है, अर्थात् वीर्यको बढाकर और उत्तेजन देकर उसको बाहर निकलनेकी गति देती हैं। ऐसी अनेक वस्तुयें है; जिनमें दूध, ऊरद, भीलामा और आंवला प्रधान है।

बालकमें वीर्य रहता हैं या नहीं और रहता है तो प्रकट क्यों नहीं होता? यह सहज प्रश्न होता है। वास्तविकमें देखा जाय तो बालकके शरीरमें भी वीर्य रहता है; किन्तु सूक्ष्मताके कारण दिखाई नहीं देता और बाहर भी नहीं आता।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पुष्पका उदाहरण इसके लिये ठीक होगा। पुष्पोंकी कच्ची कलियोंमें भी गन्ध रहती हैं; तथापि वह गन्ध मालूम नहीं होती। जब वे कलियां पककर फूलती है तभी ही उसकी यथार्थ गन्ध प्रकट होती है। इसी प्रकार बालकोंके शरीरमें वीर्य रहता है; किन्तु वह सूक्ष्मताके कारण प्रकट नहीं होता। जब बालक तारुण्यको पाकर खीलते हैं तभी ही उनमें वह (वीर्य) प्रकट होता है। ऐसा होने पर भी जैसे कच्चे फुल या पुष्पकी कच्ची कलीको तोड़कर उसको गरमीमें रख छोड़नेसे वह कुछ पकता है और उसमेंसे सुगन्ध भी आती है; किन्तु वह सुगन्ध मीठासरहित और मनको प्रसन्न न करे वैसी रहती है। वैसेही बालकोंमें वीर्य पूर्ण रीतिसे पक हुए पहिले यदि वे कृत्रिम उपायों द्वारा किम्वा बाहरकी गरमी देकर वीर्यको खेंचनेका प्रयत्न करता है तो वीर्य खीचकर आंता है सही; किन्तु वह वीर्य कच्चा रहता है। जैसे कच्चे फल या पुष्पमें वास्तविक खूबी नहीं रहती; वैसेही बालक भी यदि पक्की उमरमें आनेके पहिले धातुको खीचनेका कार्य करते हैं तो वे अपनी जीन्दगीकी वास्तविक खूबी और पुरुषत्वके सच्चे आनन्दको गुमा देते हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वृद्धावस्थामें वीर्य बंद पड़ता है; क्योंकि उस वयमें वायुका जोर बढने लगता है। वायुका स्वभाव रसको पोषण करनेका और उसको सूखानेका है इससे वृद्ध पुरुषोंकी धातु सुख जाती हो ऐसा भी अनुमान होता है। यदि वायुको दूर करनेका उपाय किया जाय तो वृद्धमें भी धातु बननेका संभव है। पौनसो २ और उससे भी अधिक उमरके पुरुषोंमें चैतन्यवाला वीर्य देखा गया है। अर्थात् उस अवस्थामें भी पुरुष प्रजा उत्पन्न कर सक्ता है। इस परसे ऐसा सार निकलता है कि यदि शरीरकी योग्य संभाल रहे तो वह भिन्न २ कार्य करता रहता है।

वीर्यका वजन.

मनुष्यके वीर्यके बल और वजनके अनुसार उस वीर्यसे उत्पन्न होनेवाले बालक बलवान किम्वा निर्बल रहते हैं। ऐसी शोध की गई है कि पुरुषके एक समयमें निकले हुए वीर्यमें सरासर चार करोड़ जन्तु रहते हैं। वीर्यको सूक्ष्मदर्शक यन्त्रसे देखनेपर ये जन्तु प्रत्यक्ष गतिवाले दिखाई देते हैं। वीर्यमें जो जीवन है वह ये जन्तु ही है। यदि ये जन्तु बलवान व पुष्ट रहते हैं तो वह वीर्य पुष्ठ समझा जाता है। और ऐसे बलवान वीर्यसे उत्पन्न होनेवाले बालक भी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बलवान होते हैं। यदि वीर्य कम रहता है तो उसके प्रमाणमें जन्तु अर्थात् चैतन्यके परमाणु कम रहनेके सबबसे वैसे वीर्यसे रहा हुआ गर्भ कम जीवनवाला उत्पन्न होता है। कम जीवनवाले मनुष्य दुर्बल रहते हैं और दुर्बलताके सबबसे ही शीघ्र रोगके पञ्जेमें फस जाते हैं।

फिर एक समयके वीर्यपातमें २॥ तोला वीर्य बाहर पड़नेकी संभावना है। क्षीण वीर्य और विषयी पुरुषोंमें वीर्य कम रहता है जिससे उनके शरीरमेंसे इतने वीर्य निकलनेकी संभावना नंही हैं: तथापि जो पुरुष वीर्यकी अच्छी तरहसे रक्षा करने वाले हैं और नियमिततासे ही वीर्यका उपयोग करनेवाले हैं उनके शरीरमेंसे एकवारके समागममें २॥ तोला वीर्य बाहर पड़ता है। यह २॥ तोला वीर्य कितने खुराकमेंसे कितनी अवधिमें बनता होगा उसका भी विद्वानोंने अंदाज कर लिया है। ८० रतल खुराकमेंसे २ रतल खून बनता है और २ रतल खूनमेंसे २॥ तोला वीर्य बनता है। जितने समयमें एक मन खुराक खाया जाय उतने समयमें २॥ रुपैयेभर नवीन वीर्य बनता है। इस सब अंदाजका सार यही है कि एक मन खाये हुये खुराकका सत्व एक समयके स्त्रीसमागममें

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

निकल जाता है। तन्दुरस्त मनुष्य प्रतिदिन सरासर १॥–२ रतल उत्तम खुराक खाय तो ४० वें दिन ८० रतल खुराक खा सके। इस हिसाबसे ४० दिनमें एकवार वीर्यका व्यय अर्थात् खरचा हो वहां पर्यन्त समान हिसाब रहे; किन्तु यदि उससे छोटी२ मुद्दतमें वीर्यका खरचा हो तो अन्तमें शरीरका क्षय हो यह स्पष्ट है। जिस प्रकार लोग पैसे सम्बन्धी आय व्ययका हिसाब रखते हैं, करकसर रखते हैं और पैसे इकट्ठे करते हैं; उसी प्रकार शरीरमें होनेवाले आय व्ययका हिसाब बहुत कम मनुष्य रखते हैं यह अत्यन्त शोककी बात है। द्रव्य सम्बन्धी स्थितिमें अपनेमेंसे थोड़े ही मनुष्य दिवाला निकालते हैं; किन्तु वीर्य सम्बन्धी व्यवहारमें तो विशेष मनुष्य दिवालियेपनेका कार्य करते हैं। आयसे व्यय अधिक करते हैं और अन्तमें युवावस्थामें ही निर्बल बन कर पुरुषत्वहीन हो जाते हैं।

स्त्रीत्व।

स्त्रीत्व यानी क्या?

स्त्रीत्व अर्थात् स्त्रीपन किम्वा स्त्रीके गुण। स्त्री जातिमें जो गुण धर्म होने चाहिये उनका नांव स्त्रीत्व है। यह खास गुणमें जितनी न्यूनता होगी उतनी ही स्त्रीत्वमें अपूर्णता समझनी चाहिये और वह अपूर्णता संसारधर्म

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

किम्वा प्रजा उत्पन्न करनेके काममें बाधा करनेवाली होती है। जैसे स्त्रीत्वकी अपूर्णता वंशपरम्परासे उतरती है वैसेही नीति-नियमके उल्लंघन करनेसे और क़ुदरती धर्मके पालनमें दुराचार या अत्याचार करनेसे भी वृद्धिको पाती है। रजोधर्ममें आनेके पश्चात् और स्त्री जातिके खास अंग सर्वांशमें विकसित होनेके पश्चात् अपने लिये योग्य ऐसे पतिके साथ संसार धर्मका नीतिके नियमोंसे पालन करना उसका नांव स्त्रीत्व अर्थात् स्त्रीपन है।

आर्तव अर्थात् दस्तानके गुण.

गर्भस्थानकी सूक्ष्म नसमेंसे प्रतिमास वहनेवाले खूनको ऋतु, आर्तव किम्वा दस्तान कहते हैं। स्त्रीका आर्तव ससलेके रुधिरके जैसा लाल, लाखके रंग जैसा और कपड़े पर पड़नेसे धोनेपर दाग न रहे ऐसा हो तो उसे शुद्ध समझना। मैला, फीका, ग्रन्थियों वाला और दुर्गन्धवाला दस्तान दोषवाला होनेसे वह गर्भधारणके कार्यमें नहीं आता। जिससे ऐसे आर्तववाली स्त्रीको गर्भ नहीं रहता और कदापि रहता है तो उसमेंसे जो प्रजा-सन्तति होती है वह रोगी होती है। तन्दुरस्त दशामें स्त्रीका यह खून प्रवाही रहता है और रोगी दशामें वह खून बंधकर ग्रन्थियां

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पड़ जाती है। गर्भ रहता है तब दस्तान बंद होता है और बाहर बहनेके बदले वह दस्तान गर्भाशयमें जाकर गर्भका पोषण करता है और पोषणकी जब जरुरत नहीं रहती; तब वह कुदरती रीतिसे दस्तानरुपसे बाहर पड़ता है; किन्तु गर्भ रहनेके पश्चात् भी खून देखा जाय तो वह किसी दोष किम्वा अनियमित वर्तनका परिणाम है ऐसा समझना चाहिये।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्रकरण २.

संयोग धर्म।

संयोग धर्म अर्थात् प्रजा उत्पन्न करनेके लिये सहगमन करनेकी स्त्री पुरुषमें कुदरतने रक्खी हुई इच्छा। वह इच्छा कुदरती अर्थात् स्वाभाविक होनेसे उसे हम धर्म अर्थात् कर्तव्य कहें तो अनुचित नही है। आर्यधर्मशास्त्रकारोंने उस कार्यको उसी लिये धर्मकी क्रियाओमें दाखिल किया है और धर्मकी क्रिया होनेसे ही कुदरती नियमोंका अनुकरण कर उसके लिये नियम बाधे हुए हैं।

इस सम्बन्धमें कुदरतका क्या नियम हैं? यह इस निबन्धके प्रवेशक विषयमें संक्षेपमें निवेदन किया गया है। हरएक प्राणीके नर व मादा अपने ऋतुकालमें ही सहगमन करते हैं उसके सिवाय नहीं। वे साथ रहा करते हैं फिर भी वे कुदरतके नियमसे विरुद्ध विहार नहीं करते। मनुष्य जातिको भी यही कुदरती नियम लागु होता है; किन्तु वे पशुमेंसे मनुष्य हुए हैं जिससे उन्होंने अपने वर्तनमें अपनी बुद्धिसे सुधार किया है और मनुष्य अपने व्यावहारिक बुद्धिबलसे ज्यों २ सुधार व बुद्धि कौशल्यमें आगे बढता जाता है त्यों २ वह कुदरतके

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सुखकारी नियमोंसे दूर जाता हो ऐसा जगत्के इतिहास द्वारा मालूम होता है। पीछे उसके उस वर्तनको आप सुधार कहें या बीगाड कहें।

संयोग धर्मका १ प्रथम व प्रधान हेतु "प्रजोत्पत्ति" (२)
हेतु. दूसरा "कुदरती इच्छा" पूर्ण करनेका हेतु कहा जाता है वह गौण अर्थात् मध्यम प्रकारका है और ३ विषय लम्पट लोग "विषय वासनाकी तृप्ति" में ही संयोगधर्मकी प्रधानता मानते हैं। संयोग धर्मका यह अधम प्रकारका हेतु संसारके अधिक भागमें माना जाता है और वर्तनसे तो वैसा ही सिद्ध हुआ है; क्योंकि संसारमें स्त्रीपुरुषोंकी अधिक संख्या जन्म-जन्मान्तरोंके पड़े हुए खराब संस्कारोंसे ऐसा मानती है कि उनका सम्बन्ध विषय सुखके लिये हुआ है; किन्तु हमने प्रथम कहा है उस प्रकार "विषय" यह तो केवल "व्यसन" है। और संयोग धर्मका वास्तविक हेतु सुन्दर, सदाचारी व सुदृढ प्रजा उत्पन्न करनेका है। कुदरती हाजतका उसीमें समावेस होता है; क्योंकि प्रजा उत्पन्न करनेके हेतुसे ही उस इच्छा या हाजतकी प्रवृत्ति होती है; किन्तु वह इच्छा कृत्रिम न होकर स्वाभाविक होनी चाहिये, रोगी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मनुष्यको दस्त व पीशाबकी बारम्बार इच्छा होती है वैसे ही विकारी स्त्री पुरुषोंको संभोगकी इच्छा बार २ हुआ करती है और इससे वैसे स्त्री पुरुष विकारी अर्थात् व्यसनी व रोगी है ऐसा स्वतः सिद्ध होता है।

समय.

संयोगधर्म संभालनेका समय मनुष्य स्वयं निश्चित करे उससे कुदरतका स्वाभाविक क्रम ही निश्चित करे वह अधिक योग्य व उचित होगा। प्राणीमात्रमें संयोग-धर्मकी प्रेरणा कुदरतने रक्खी है। हर एक प्राणीमें वह इच्छा उनकी अमुक उमर, अमुक अवस्था व ऋतुमें उत्पन्न होती है। मनुष्य जातिमें भी उस इच्छाकी प्रबलताके लिये निश्चित समय होना ही चाहिये। स्त्रियोंका ऋतुधर्म अर्थात् रजस्वलापनेकी अवस्था यह उसका प्रमाण है। रजस्वला धर्ममें आनेके पश्चात् ही स्त्री प्रथम संयोग धर्मके योग्य होती है। इतनाही नही; किन्तु पीछे भी जब २ वह रजस्वला हो कर शुद्ध होती है तब २ वह पतिके समागमके योग्य होती है और स्त्रीमें सहगमनकी इच्छा भी उस समयपर विशेष बलवान होती है। स्त्री जातिकी स्वभाव सिद्ध इच्छा यही संयोग धर्मका योग्य समय है। संयो-गधर्मके सम्बन्धमें पुरुषोंने विशेष करके स्त्रियोंकी शारीरिक

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

स्थितिका, रजस्वलापनेकी अवधिका, और उसकी इच्छाका अनुसरण करना चाहिये। यह समय और यह नियम कुदरती धर्मके अनुसार चलने वाले सदाचारी व नियम पालन करने वाले युगलोंके लिये हैं। जो व्यभिचारी व कुदरतके नियमोंको उल्लंघन करके चलने वाले हैं उनका वर्तन और उनकी इच्छा स्वाभाविक नहीं; किन्तु कृत्रिम होनेसे वे ऐसे किसी भी प्रकारके नियमका पालन नहीं करते और उससे ऐसी विकारवाली स्त्रीयोंकी इच्छा यह कोई कुदरती इच्छा नही हैं।

खास गर्भाधानके लिये संयोग धर्मका पालन करना यह संयोग धर्मका सर्वोत्तम नियम है और ऋतुस्नाता स्त्रीको प्रतिमास किम्वा ऋतु प्राप्तिके समयमें प्राप्त होना यह संयोग धर्मका मध्यम नियम है। इन दो नियमोंका उल्लंघन करके स्त्री पुरुष किसी भी प्रकारके नियमके विना सम्बन्ध करते हैं उसमें किसी कुदरती नियम या कुदरती इच्छा नहीं होती। वंश परम्परासे मिले हुए विकार, आदत व पागलपनसे किये हुए वर्तनसे विषयवासनाकी कृत्रिम इच्छाका यह परिणाम है और वैसी कृत्रिम इच्छाके आधीन होनेसे मनुष्य अर्थात् पुरुषत्व और स्त्रीत्वके नाश होनेके साथ ही शारीरिक व आत्मिक

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उन्नतिमें दिन प्रतिदिन मनुष्यजाति अधोगतिको प्राप्त हो उसमें आश्चर्य क्या है ? ऐसी कृत्रिम इच्छायें, वासनायें, और लालसायें बढनेसे ही मनुष्य जातिकी आयु कम हुई है । पुरुषत्व कम हुआ है और विकार तथा व्याधियोंकी अभिवृद्धि हुई है। यह ठीक है कि पूर्व शरीरके संस्कारोंसे सुदृढ हुए विकारोंका एकदम त्याग करना यह बहुत कठिन है और उससे विषय लम्पटतामें मस्त रहनेवाले युवान युगलोंके आगे गर्भाधान और मासिक संयोगधर्मके उत्कृष्ट नियम और सदाचारकी बातें करनी यह हवामें किल्ले बांधनेके समान है । थोडे ही समयसे प्रवेश किये किम्वा एक आध पेढीसे वारसेमें मिली हुई सीगारेट या चाह जैसी वस्तुयोंके व्यसनोंको जब वर्तमान समयकी निर्बल मनकी प्रजा छोड़ नहीं सक्ती; तब जो शारीरिक संस्कार अनेक पिढियोंसे वारसेमें चले आते हैं और दिन प्रतिदिन बढते जाते हैं वे संस्कार सरलतासे कैसे छूट सक्ते हैं ? किन्तु जिस क्रमसे वे संस्कार पड़े हुए हैं उसी क्रमसे उसें कम करके अन्य उत्तम संस्कार और सदाचारकी आदत पाड़ना यही हमारे इस उपदेशका हेतु है । मनुष्य जाति चाहे तो अपने विकारोंको एकवार नहीं; किन्तु धीरे २ वस कर सक्ती है, मनुष्यजाति चाहे तो अपने आचरणमें इस प्रकार

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सुधार करके विषयलम्पटताका जो खराब रीतिसे पुरुषातन मान बैठी है, उसका त्याग करके नियममें रह सके और वैसा होनेपर वह नियमिततामें सहस्रगुना आनन्द प्राप्त कर सके।

संयोगधर्मके योग्य समयको समझ ब्रह्मचर्यके नियमोंसे मिल सक्तो है। प्राचीन समयमें ना. क. ब्रह्मचारीगण अपनी सम्पूर्ण जीन्दगी पर्यन्त ब्रह्मचर्यका पालन कर दीर्घायु भोगते थे। अन्य सभी लोग सामान्य ब्रह्मचर्य व्रतका धारण करते थे। वे महिनेमें एकही वार अर्थात् गर्भाधान करनेके निमित्त योग्य समयमें संयोगधर्मका पालन करते थे। संक्षेपमें पुरुषत्वकी रक्षाके लिये, उत्तम बलवती प्रजा उत्पन्न करनेके लिये, भिन्न२ रोगोंके हुमलोंमेंसे वचने व शरीरको सुदृढ रखनेके लिये और दीर्घायु भोगनेके लिये स्त्री पुरुषोंने अपने विहार सम्बन्धी वर्तनमें अत्यन्त नियमित रहनेकी आवश्यक्ता है।

संयोगका महिमा.

नर और मादाके संयोगधर्मकी वहुत भारी महिमा है। हरएक कुदरती धर्मकी बड़ाई कुदरती नियमकी हदमें रहनेवालेसे ही समझी जा सक्ती है। ज्यों२ उस नियमका नहीं पालन होता; त्यों२ उसकी महिमा कम होती है और लोकसमाजकी दृष्टिसे वह कार्य साधारण

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पैसा मालूम होता है। संयोगधर्मके सम्बन्धमें भी ऐसा ही बनता है। उत्तम पराक्रमी बालक उत्पन्न करनेका कुदरतका सर्वोत्तम हेतु ये लोग भूल रहे हैं; किन्तु आखिर विषयसुख फिरवा रतीसुखका मतलब भी ये लोग भूल रहे हैं। लोग पर स्त्री गमनको अनीति और व्यभिचार कहकर धिक्कारते हैं और हम भी ऐसे कृत्यको धीक्कारते हैं;। किन्तु स्वस्त्री गमनमें अतियोगका होना यह भी अनीति व व्यभिचारका कृत्य है। अति विषयसे लाम्पट्य भाव बढता जाता है और सृष्टिमें लम्पट प्रजाकी वृद्धि होती जाती है। जिसका यही अर्थ हो सक्ता है कि इस जगत्में लम्पट व विकारी सन्ततिकी अधिक वृद्धि होती जाती है जिसके लिये लम्पट अर्थात् विषयी माता-पिता उत्तरदाता है। संयोगकी महिमाको लम्पट व निर्लज्ज प्रजा उत्पन्न करना यह नहीं हैं; किन्तु सुन्दर, सदाचारी और पराक्रमी बालक उत्पन्न करना यही है। संयोगकी महिमा विषयवासनाको बढानेसे नहीं; किन्तु उसको नियममें रखनेसे रक्षित हो सक्ती है। संयोगकी महिमा इन्द्रियोंको भडकानेवाली उत्तेजक दवाओंसे नहीं बढ सक्ती; किन्तु आहार सम्बन्धी कुदरती नियमोंके पालन कर नियमित रहनेसे रक्षित हो सक्ती है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अज्ञानी मनुष्योंने इन कुदरती नियमोंका उल्लंघनकर संयोग धर्मकी महिमाको कम किया है और जब ऐसे कुदरती सदाचार और नियमोंका उल्लंघनकर हमलोग नामर्द—नपुंषक जैसे बने हुए हैं; तब पुरुषत्व देनेवाली वाजीकर दवाओंको प्राप्त करनेके पीछे हमलोग फांफां मारता हैं और शक्ति देनेवाली गोलियों, धातुपुष्टिकी गोलियों और कच्चरापटी गोलियोंकी लालचमें पड़कर पुरुषत्व प्राप्त करनेकी आतुरतामें फस जाते हैं; क्योंकि वैसी गोलियोंसें लाभके बदले हानी अधिक होकर सामने खराबी होती हैं। इस प्रकार एक पवित्र धर्मको हम लोग अपनी ही मूर्खतासे और अनीतिसे भ्रष्ट करते हैं। संयोगधर्मकी महिमाके रक्षण करनेका यदि कोई उत्तमसें उत्तम मार्ग हो तो वह यही है कि पुरुषोंने इस कुदरती नियमका अच्छी तरहसे पालन करना।

विषय सुख.

तब विषय सुखके समान कोई सुख या आनन्द है या नहीं? वह है; किन्तु उस आनन्दके वास्तविक स्वरुपका बहुत कम सदाचारी दम्पत्ति—स्त्री पुरुष अनुभव कर सक्ते हैं। अवयवोंकी सम्पूर्ण आरोग्यताके विना और परस्पर सम्पूर्ण प्रीतिके विना रतिसुखका सच्चा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

आनन्द कभीभी प्राप्त नहीं हो सकता। लम्पट व विषयी लोग प्रतिदिन विषयमें अन्ध बनते हैं और उसमें वे एक प्रकारका आनन्द मानते हैं। उन्हें एक प्रकारका आनन्द मिलता है फिर भी वैसा आनन्द हरएक विषयमें प्राप्त करनेका है। मदिरा पीनेवालोंको और गांजा फुंकनेवालोंको भी एक प्रकारके आनन्दका अनुभव होता होगा उसीसे वे प्रतिदिन उन वस्तु-ओंके लिये लालायित होते हैं। इस लिये मदिराके व्यसनमें जो आनन्द मिलता है उसें भी क्या सच्चा सुख या आनन्द कहना चाहिये ? कदापि नहीं। सच्चा आनन्द और व्यसन ये दोनों भिन्न २ बातें है। इन्द्रियोंके लिये सच्चे आनन्दकी वस्तुयें और व्यसनकी वस्तुयें अनेक रहती है। बेला नासिकाके सुगंधी लेनेवाले तन्तुओंको अधिक आनन्द देता है और उस समय मगजमें जानेवाले तन्तु मगजको तर बना देते हैं; किन्तु वेलेकी बार २ इच्छा नहीं करते। उन्हीं तन्तुओंको तमाखुकी आदत पाड़िये और फिर देखिये कि नासिकाके तन्तुओंको उसके सिवाय नहीं चलता। क्योंकि तमाखुकी बार २ सुगन्धी लेनेकी आदतसे तन्तुओंको व्यसन पड़ जाता है। वीर्य अर्थात् धातुको ले जानेवाली नाड़ियोंके लिये वही नियम ठीक

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हो सकता है। वार२ एक कार्यके करनेसे इन्द्रियां एक आदतके आधीन हो जाती है और साधारण स्मृतिके होतेही उसके तन्तु गरम हो जाते हैं। यह कुछ रतिसुखकी इच्छा नही है; किन्तु केवल व्यसन है। व्यसनी लोगोंके आनन्दसे आप सच्चा आनन्द मानिये और उनके व्यसनकी वस्तुओंको सत्य सुखकी वस्तुयें मानिये तो अतिविषयासक्तिको भी सुखकी वस्तु मानिये।

विषयसुखका आधार मस्तिष्ककी शक्तिके ऊपर रहा हुआ है। मस्तिष्कके दो भागोमेंसे एक भागमें प्यार और संसारसुखके पोषण करनेवाले तन्तु रहते हैं। ये तन्तु मगजके पीछेके भागमें रहे हुए हैं इस पीछेके हिस्सेके कदके अनुसार पुरुषमें न्यूनाधिक शक्ति रही हुई है और उन तन्तुओंके उपयोग व घसारेसे भी उसमें शक्ति कम होती है। मगजके उस भागको "विषयवासनाकी इन्द्रि" ऐसा नांव दे तो भी दे सक्ते हैं विषयवासनाके उस अवयवकी आकृतिकी पूर्णता २८ से ४० की वयमें पूर्ण होती है। यह अवयव जैसे अधिक प्रफुल्लित रहता है; वैसेही अपनी स्त्री और कुटुम्बकी ओर प्रेमवासना अधिक प्रबल रहती है और स्त्रीत्वके तथा पुरुषत्वके

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विशेष गुण रहते हैं। जिनका यह भेजा आकृतिमें छोटा रहता है उनके चलने फिरनेकी और बोलनेकी रीति खराब व विचित्र प्रकारकी रहती है। इस प्रकार बालकका मगज छोटा या बड़ा होना यह मातापिताओंके आधारपर है; किन्तु मगज बड़ा होनेपर भी उस मगजके तन्तु परिपूर्ण पक्व होनेके पहिले और मगज पूर्ण खीलनेके पहिले वह घीसने लगे तो उस मस्तिष्कमें संसार सम्बन्धी प्यार और विषयसुखकी पूर्ण अभिलाषा कभी भी उत्पन्न नहीं हो सक्ती। इस परसे ऐसा सिद्ध होता है कि मस्तिष्कके उन तन्तुओंका जैसे बने वैसे अधिक समयपर और नियमीत उपयोग होनेसेही विषयसुखका सच्चा आनन्द मील सक्ता है। विषयवासनावाले मातापिता-ओंसे उत्पन्न हुई सन्ततिमें सम्भोगकी वृत्ति शीघ्र २ जागृत होतीहै; इतनाही नहीं; किन्तु विषयवासनावाले स्त्रीपुरुषोंके समागमसे भी विषयवासना शीघ्र स्फुरीत होती है। विषय वासनाके शीघ्र जागृत होनेसे उसका उपयोग भी शीघ्र होने लगता है और शीघ्र उपयोग होनेके कारण युवानीका शीघ्र अन्त आकर बुढापा आ जाता है? इस लिये स्त्री पुरुषोंने अपनी वाजीकरण शक्ति अर्थात् संभोग शक्ति दीर्घ-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

समय पर्यन्त स्थायी रखनेके लिये उस शक्तिका जैसे बने वैसे कम उपयोग करना चाहिये। संभोगके स्वाभाविक वेगको कृत्रिम व्यसनके समान कर डालनेसे उसकी सच्ची विज्ञतका नाश होता है और संभोगके अन्तमें उत्साह व आनन्द बढनेके बदले अभाव व अनादर उत्पन्न होनेके साथ २ शरीरके सत्वका अकालमें नाश होनेका मानो खेद होता हो उस प्रकार सामने पश्चात्ताप होता है और अन्य अनेक दुःख व व्याधियां उत्पन्न होती है।

इस "वाजीकर कल्पतरु" जैसे निबन्धमें वाजीकरणके पौष्टिक उपाय देनेकी बातको छोड़कर "संयोगधर्म" के ऊपर एक पूरा प्रकरण लिखनेमें हमारा क्या मतलब है उसको विज्ञ पाठक समझ गये होंगे। हमने अपनी प्रस्तावनामें ही लिखा है कि यह निबन्ध लिखकर युवान स्त्रीपुरुषोंमें विषय वासनाकी अभिवृद्धि करना ऐसा हमारा विचार नहीं है। हमारी सम्मतिके अनुसार उस वासनाको जहांतक होसके कम करना चाहिये। हमारी सम्मतिके अनुसार उस वासनाकी न्यूनता होना यही सच्चा पुरुषत्व है और वही वाजीकरण उपाय है। पुरुषत्व और वीर्य प्राप्त करनेके लिये संयोग-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

धर्मका हेतु यथार्थ समझना चाहिये। वाजीकरणके उपायोंमें हम युवान प्रजाको वाजीकर उपायोंकी अर्थात् धातुपुष्टिकी गोलियोंकी सिफारस करनेके बदले आहार विहारमें नियमित रहनेकी अधिक सिफारस करते हैं। वर्तमान समयकी धातु-पुष्टिकी गोलियों और कामोत्तेजक दवाओंमें लाभके बदले हानी अधिक है। यह बात हम अपने युवकोंको वारम्वार पुकार २ कर कहते हैं। संसारमें ज्ञानहीन मनुष्योंकी संख्या अधिक है और वीर्यवर्धक या धातुवर्धक गोलियोंका वर्णन विज्ञापनोंमें पढ़कर वे वीचारे फंदेमें फसते हैं और पतंगियोंके समान उसका आस्वाद लेने के लिये दौड़ते हैं; किन्तु उससे आखिर वैसीही दुर्दशा होती है। ऐसे विज्ञापनों पर विश्वास रखनेवाले जुवानलोग विशेषकरके एकवार दवाका उपयोग करके ही द्रव्यका पानीहोनेके लिये पछताते हैं; किन्तु कदापि भाग्यदोषसे उन गोलियोंका साधारण उत्तेजक गुण उन्हें कुछ चमत्कार दिखलाता है तो वे उसे खानेके लिये वारम्वार लुभाते हैं; किन्तु आखीर निराशाके और किये हुए द्रव्यके खर्चेके पूर्ण पश्चात्तापके साथ २ उन्हें मालूम होता है कि इन गोलियोंकी असर वे खाते हैं वहां पर्यन्त ही मालूम होती है। इतनाही

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

नहीं; किन्तु उसे छोड़नेपर अधिक शिथिलता होती है। विज्ञापनोंके व्यवसायमें दिन प्रतिदिन कुशलता व चालाकी बढती जाती हैं और उससे अपनी गोलिके ऊपर अधिक विश्वास बैठानेके लिये अपनी गोलीकी सिफारसके साथ २ धातुक्षीणताके वर्णन दिये जाते हैं और उसमें लिखे हुए चिन्ह विशेष करके बहुतसे धातुक्षीणताके दरदियोंको अनुकुल पड़े, वैसे रहते हैं। जिसपरसे बीचारे आतुर युवकगण उन लक्षणोंको अपने रोगके साथ२ मिलाकर उस गोलीपर मोहित होते हैं; किन्तु उन मूर्खोंको यह मालूम नहीं कि किसी भी रोगके सामान्य लक्षणका वर्णन देना वह तो ग्रन्थोंके आधारसे या रोगीको पूछकर एक साधारण मनुष्य भी दे सक्ता है। ऐसे मोहित करनेवाले लेख व प्रशंसासे निर्बल मनके युवकोंमें विज्ञापनियोंका बाजार गरम हो उसमें उन दवाओंकी खूबी समझें या उसके व्यापारियोंकी चालाकी समझें या उसके उपयोग करनेवालोंकी बुद्धिकी न्यूनता समझें या क्या समझना उसका विचार पाठक स्वयं कर लेंगे। हम ऐसा नही कहना चाहते कि ऐसी समस्त पेटंट दवायें सबको हानी करती है और लाभ किसीको भी नहीं करती। किसी २ दवासे किसी २

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

को लाभ भी होता होगा; किन्तु इतना तो कहना ही चाहिये कि ऐसी दवाओंका अधिक उपयोग विशेष करके हानी ही कर रहा है और धातुपुष्टिकी कामोत्तेजक दवायें तो खास करके जनसमाजकी शारीरिक व मानसिक सम्पत्तिकी विशेष करके विनाशकी ही कारणरुप हो रही हैं। वे समस्त दवायें नसोंकी क्षणिक जागृति (Temparary excitement) देती है और उससे उसकी असर बंद होनेके पश्चात् नसें विशेष निर्बळ पड़ती है अर्थात् फिर नसोंके तन्तु वैसी दवा मांगते है और इस प्रकार तन्तुओंको वैसी उत्तेजक दवाओंका व्यसन पड़ता है और अफीम, मदिरा प्रभृति व्यसनोंका जो परिणाम आता है वही परिणाम ऐसी उत्तेजक दवाओंका आता है। पुरुषोंके बीगड़े हुए रजको सुधारनेवाली उत्तम शास्त्रीय दवाओंका सर्वांशमें सुखकारी और निर्भय उपयोग आजकल बंद पड़ा है। क्योंकि वे उत्तम औषधियां क्षणिक और तात्कालिक आनन्द या उत्तेजन नहीं देती-क्योंकि वे उत्तम औषधियां इन्द्रियोंको नहीं बहकाती-क्योंकि वे औषधियां वीर्यका झुठा, व क्षणीक स्तंभन नहीं करती-क्यों कि वे औषधियां शरीरके समस्त अंगोको धीरे२ सच्चा बल देकर आरोग्य और आयुष्यको

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बढाती है । ये सभी इन उत्तम औषधियोंके अपराध है । दूसरा यह अपराध उन औषधियोंका है कि वे आजकलके उंटवैद्य या विज्ञापनिये रोजगारियोंकी कपोल कल्पनासे नहीं बनती, वे किसी डाक्टरकी डिस्पेन्सरीमें नहीं बनती और मनोहर फेशनेबल शिशियोंमें भरकर नहीं आती; किन्तु पारमार्थिक बुद्धिशाली और सात्विक मगजमेंसे निकली हुई हैं और उन महर्षियोंके प्रयोग परम परिश्रमसे अनुभवी वैद्य—बीचारे देशी वैद्योंके हाथसे तैयार होती है यही इन उत्तम औषधियोंका भयंकर अपराध है; किन्तु अमेरिकाके फिला डेलफीया नगरका एक प्रसिद्ध विद्वान् डाक्टर ऐसे उत्तम प्रयोगोंसे भरे हुए "चरक" के लेखके विषयमें क्या कहता है ? उसे जरा ध्यान देकर देखिये ।

" यदि वर्तमान समयके उपचारक—डाक्टर लोग फारमाकोपीयेमेंसे अर्वाचीन कालकी औषधियोंको एवं रसायन तत्वोंको छोड़ दे और " चरक " की प्राचीन पद्धतिके अनुसार अपने रोगियोंका उपचार करे तो डाक्टरोंका कार्य कम हो जाय और संसारमें जीर्ण रोगोंको भोगनेवालोंकी संख्या कम हो जाय " ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

किन्तु मनुष्यजाति डाक्टरोंका कार्य कम कराना नहीं चाहती और इस देशकी देशी प्रजा विशेष रुपसे दोषी है; क्योंकि विद्वान् डाक्टर भी जिसकी प्रशंसा करते हैं ऐसे उत्तम देशी प्रयोगोंकी ओर उनका सामने अभाव बढता जाता है और अरडुसी व आंवलीके समान कपोलकल्पित दवाओंकी गोलियोंके ऊपर एवं उत्तेजक प्रवाही चिजों पर उनका मोह बढता जाता है।

संक्षेपमें यही निवेदन करना है कि संयोगधर्म अर्थात् संभोगसुखकी प्राप्ति उत्तेजक दवाओंसे नहीं होती; किन्तु संयोगधर्मके स्वाभाविक नियमोंके पालन करनेसे होती है। हमारे पाठक युवक बन्धु व भगिनियोंने इस लिये कृत्रिम उपायोंका त्याग कर कुदरती नियमोंके पालन करनेमें विशेष प्रेम रखना चाहिये कि जिससे भविष्यकी प्रजाको भी वैसेही उत्तम संस्कार प्राप्त हों और मनुष्यजाति क्रमशः आरोग्ययुक्त दीर्घायु प्राप्त करनेको समर्थ बने।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्रकरण ३

वाजीकरण सम्बन्धी जानने योग्य सूचनायें

जैसे आहार विहारके द्वारा स्त्री पुरुषोंको संभोग कार्यमें अत्यन्त प्रीति, उत्साह, और आनन्दकी प्राप्ति होती है; वैसे आहार विहारकी वस्तुओंको " वाजीकरण " कहा जाता है। वाजीकरणके लिये औषधियोंके उपाय जाननेके पहिले कुछ जानने योग्य सूचनायें और नियमोंके अनुसार वर्तन किया जाय तो वाजीकरणके लिये जो लोग मारे २ फिरते हैं और दवाओंका आश्रय लिया जाता है उसकी आवश्यक्ता नहीं रहती, इन सूचनाओंमें जैसे विहार सम्बन्धी बातें आवेगी; वैसेही आहार सम्बन्धी भी सूचनायें आवेगी एवं ग्रहण करने योग्य और त्याग करने योग्य ऐसे दोनों प्रकारके आचरण बताये जायगे। यह विषय विहारके साथ सम्बन्ध रखता है इस लिये प्रथम विहार सम्बन्धी सूचनायें दी जाती है।

१ विहार सम्बन्धी सूचनायें।

१ आरोग्यता. शरीरकी तंदुरस्ती यह वाजीकरणका सर्वोत्तम उपाय है रोगी मनुष्य चाहे वैसे उपाय किया करें फिर भी स्त्री पुरुष दोनोंकी तन्दुरस्ती अर्थात् शरीर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

स्थिति रोगवाली होगी तो वे उपाय उन्हें कुछ भी लाभकारी नहीं होंगे। पुरुष अपनी पुष्टिकी शोध करता है; किन्तु उन्हें नहीं मालूम कि "तन्दुरस्त स्त्री" यही सर्वोत्तम वाजीकरण है। यदि स्त्री रोगवाली, निर्बल और उत्साहहीन हो तो उसके सम्बन्धसे पुरुषका पुरुषत्व सामने कम होता है। यदि स्त्री सम्पूर्ण निरोगी और दृढ शरीरवाली रहती है तो पुरुषका उत्साह बढता है और उत्साहका बढना यही वाजीकरणकी निशानी है। इसलिये निरोगी स्त्री पुरुषोंका सम्बन्ध होना यह आवश्यक बात है। इस लिये शास्त्रमें भी रोगी कन्याके साथ विवाह करनेका निषेध किया गया है।

२ पवित्रता.

पवित्रता किम्वा स्वच्छता यह दूसरा वाजीकरण है। अनुभव करके देखनेसे यह बात और भी अच्छी तरहसे समझमें आजाती है। तन्दुरस्त व पवित्र सन्तति उत्पन्न करनेके लिये तो खास इन नियमोंको ध्यानमें रखनेकी आवश्यकता है; किन्तु संभोग सुखके लिये भी यह बात बहुत ही आवश्यक है। स्वच्छतासे हर्षकी अभिवृद्धि होती है और मलिनतासे अभाव उत्पन्न होता है और अभाव किम्वा अरुचि उत्पन्न होनेसे उत्साह कम हो जाता है। इस

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

लिये संयोग धर्मका यथार्थ सुख लेनेकी इच्छा रखनेवाले स्त्री पुरुषोंने सदैव शरीरसे और वस्त्रसे पवित्र रहना चाहिये।

३ सुन्दरता. सुन्दरता यह भी एक प्रकारका वाजीकरण है। यह स्त्री पुरुषके निजके शरीरकी ही नहीं; किन्तु वस्त्रालंकार, घर और घरकी भीतरके सभी पदार्थ देखनेमें सुन्दर व मनोहर हो तो उससे भी हर्ष और उत्साहमें अभिवृद्धि होना स्वाभाविक है। कुछ लोग आरोग्यसे सुन्दरताकी क़िम्मत अधिक समझते हैं; किन्तु वह भारी भूल है। आरोग्यता यही सच्ची सुन्दरता है; फिर भी आरोग्यके ऊपरान्त सुन्दरता भी हो तो ओर भी उत्तम है।

४ सुगंधी. उत्तम सुगन्धी पदार्थोंकी सुगन्धी भी मनको अधिक आनन्दित रखती है। उन द्रव्योंमें अत्तर, केसर, चंदनके लेप, पुष्पहार प्रभृति उपचारोंका समावेश होता है।

५ स्वस्थता. संयोग धर्मकी पवित्र व कुदरती फरज अदा करनेके लिये प्रवृत्त हुए स्त्री पुरुष शरीरकी ओर मनकी स्वस्थतामें अर्थात् शान्तिमें रहने चाहिये। शरीरकी व्याधि और मनका क्लेश उन्हें निरुत्साही बना देता

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

है। इस लिये मानसिक चिन्ता, भय या आकुलताकी स्थितिमें उन्हें कभी भी मिलना नहीं चाहिये। ऐसी स्थितिमें हुआ सम्बन्ध सामने क्लेशका कारण होता है और कदापि ऐसी स्थितिमें गर्भधारण हो जाता है तो वह गर्भ किसी प्रकार उत्तम नहीं होता।

६ विषयवासना. संयोग धर्मको कुदरतके एक स्वाभाविक कार्यरुपसे मानने और कुदरतके नियमोंके अनुसार चलने वाले स्त्री पुरुषोंने विषयवासनाको मनमेंसे निकाल देना चाहिये। कुछ भी विकार, विचार व नियमका अनुसरण नहीं कर केवल मनमें विकार उत्पन्न हो आनेसे किये हुए कार्यको विषय वासना कहना चाहिये। उनकी प्रेमी प्रवृत्तिका हेतु विषयवासना वाला नही होना चाहिये; किन्तु सदाचारी, पवित्र, और पराक्रमी बालक उत्पन्न करनेका होना चाहिये किम्वा उससे कुछ निम्न प्रकारका हेतु होतो वह कुदरतके नियममें रहकर पूर्ण करनेका होना चाहिये। यह हाजत कुदरती कहनेका कारण यही है कि वह कृत्रिम रीतिसे जोशवाली नहीं होनी चाहिये।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

७ वय. वय अर्थात् उम्मर सम्बन्धी कुछ नियम ध्यानमें रखने योग्य है।

(क) पूर्ण अर्थात् पक्की वयमें आनेके पहिले संयोग धर्ममें प्रवृत्त नहीं होना चाहिये। पुरुषमें वीर्यकी और स्त्रियोंमें रजकी उत्पत्तिका होना यह कुछ पक्की वयका प्रमाण नही हैं। उत्पन्न होना और परिपक्व होना ये दोनों अलग २ बातें हैं। पुरुषमें वीर्य १८ वें वर्ष उत्पन्न होता है; किन्तु वह परिपक्व तो २५ से ३० वर्षकी उम्मरमें होना चाहिये। स्त्री रजस्वला १३–१४ वें वर्षमें होती है; किन्तु उसके अवयवोंकी सम्पूर्णता १६ वर्षकी उम्मरके पहिले नही हुई होनी चाहिये। सम्पूर्ण अवयव दृढ होनेके पहिले वे अवयव कमजोर रहते हैं और समागममें सच्चे आनन्द व उत्साह कभी नही दे सकते।

(ख) उमर–वयकी असमानतासे अर्थात् दोनोंकी उमरमें बहुत फरक होनेसे भी उत्साहका भंग होता है। एक युवान स्त्रीका सेवन वृद्ध पुरुषमें भी उत्साह और बलकी अभिवृद्धि करता है और उससे विपरित एक वृद्ध स्त्रीकेसाथका सम्बन्ध युवान मनुष्यके बलकी हानी करता है। ऐसे असमान सम्बन्धसे बल व आयु कम होते हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(ग) ऋतु सम्बन्धी विचार करनेपर वैद्यक शास्त्र लिखता है कि १६ वर्षकी बाला सभी ऋतुओंमें हितकारी है और वृद्धको भी बल देती है। १६ से ३२ वर्षकी तरुण स्त्री शीत-कालमें अर्थात् ठंडीकी ऋतुमें सुखदायी होती है अन्य ऋतुमें उसका सम्बन्ध शक्तिका नाश करता है। ३२ से ५० वर्षकी प्रौढा स्त्री वसंत, प्राट्ट, और वर्षाऋतुओंमें हितकारी है। और दिनका समागम बुढापा लाता है। ५० वर्षके ऊपरकी उमरकी सभी ऋतुओंमें त्याग करने योग्य है और जीवनकी इच्छा रखनेवालोंने कभी भी वृद्ध स्त्रीके साथ सम्बन्ध नहीं करना। वृद्धावस्थाका निर्णय केवल वयके ऊपरसेही नहीं कहना चाहिये; क्योंकि अनेकवार आरोग्ययुक्त सुदृढ बांधेकी और नियममें रहनेवाली स्त्रियां ५० वर्षकी उमरके पश्चात् भी तरुणी जैसी मालूम होती है और अनेक दुर्बल, रोगी और शरीरके लिये ध्यान नहीं रखनेवाली स्त्रियां २५-३० वर्षकी उमरमें ही बुढियाके जैसी हो जाती हैं।

(घ) अपनेसे बड़ी उमरकी स्त्रीके साथ पुरुषने कभी भी सम्बन्ध नहीं करना चाहिये; क्योंकि ऐसा व्यवहार तरुण पुरुषको भी वृद्ध बना देता है। स्त्रीसे पुरुष १० वर्ष बड़ा हो वहां पर्यन्त वह सम्बन्ध अयोग्य नहीं समझना; क्योंकि स्त्रीसे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पुरुषमें तारुण्यता अधिक उमरमें आती है और उसी प्रकार वृद्धावस्था भी विलम्बसे आती है। स्त्रीमें ५० वर्षपर ऋतु बंद होता है और ऋतुका बंद होना यह विहारकी अयोग्यताका लक्षण है। पुरुषमें पुरुषत्व और वीर्य ७५ वर्षकी वयतक और उससे भी अधिक वय तक रहता है।

८ व्यसनत्याग.

मदिरा, भांग, गांजा, तमाखु प्रभृति व्यसन परिणाममें पुरुषत्वकी हानी करते हैं। अवश्य उन वस्तुओंका नशा इन्द्रियोंको सतेज बनाकर प्रथम उत्साह बताता हैं; किन्तु अन्तमें शरीरको सर्वथा निर्बल बनाता है, युवान पुरुष उन वस्तुओंका वाजीकरण अर्थात् पुरुषत्वके लिये उपयोग करते हैं; किन्तु वास्तविकमें उन वस्तुओंमें वाजीकरण गुण नहीं हैं; किन्तु नसोंको निर्बल बनानेका गुण है। इस लिये समझदार मनुष्योंने कभी भी उन वस्तुओंके छदमें नहीं पड़कर उसका त्यागही करना चाहिये।

९ आनन्द व उत्साह.

स्त्री सेवनमें उत्साह और आनन्दकी अभिवृद्धिका होना यही वाजीकरण है; इस लिये मन जैसे अधिक प्रफुल्लित रहे वैसे उपाय करने। नीम्न वस्तुयें उस आनन्दमें अभिवृद्धि करने वाली है। सुन्दरवन अर्थात् बागबगीचे, सुखदायक सभी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पदार्थ, आनन्द देनेवाला उत्तम आहार, विविध प्रकारकी क्रिड़ायें, मनोहर गीत, विविध प्रकारके भोजन, सुन्दर स्पर्शसुख, मनोहरवाणी, चन्द्रके प्रकाशवाली स्त्री, मनोहर बातें मनोहर सुगन्धियां, मनोहर स्वरुप, पुष्पकी मालायें और सुन्दर मुखवास (पान, सुपारी, इलायची प्रभृति) ये सभी विहारके समयपर उत्साह देनेवाले हैं।

१० वर्ज्य बाते. अधिक क्षुधाके समयमें, अधिक भोजन करनेके पश्चात् क्रोधमें, भयमें, चिन्तामें, अभावमें और वैसेही विरुद्ध प्रसंगोमें किया हुआ स्त्री सम्बन्ध निष्फल जाता है अर्थात् ऐसी स्थितिमें चाहिये वैसा आनन्द और उत्साह नहीं रहता।

११ नियमितता. वाजीकरण अर्थात् स्त्री सम्बन्धमें उत्साह और बल बताने के उपायोमें सबसे श्रेष्ठ उपाय वीर्यका नियमीत व्यय (उपयोग) करनेका है। जो पुरुष इस सम्बन्धमें नियमित व ठीक रीतिसे रहने वाले है उन्हें वाजीकरण औषधियां लेनेकी कुछ भी जरुरत नहीं पड़ती। उनका नियमित वर्तन, उत्तम व सादा खुराक और ऊपर बताये हुए दश नियमोमें रही हुई बातोंका पालन वही वाजिकरण है

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अर्थात् शरीरमें उत्साह मंद होकर शिथिलता आती है। जिसमें अन्य उपायोंसे चाहिये वैसा सुधार नहीं हो सक्ता। खरचा कम करनेसे और गुमाई हुई सम्पत्तिका फिर संग्रह करनेसे ही बल प्राप्त हो सकता है। यह संग्रह उत्तम खुराकसे एवं वीर्यवर्द्धक औषधियोंसे हो सक्ता है;

१२ वीर्यवर्धक दवायें.

वीर्यवर्धक दवा अर्थात् कैसे उपाय यह बात बीचारे अज्ञान युवक नहीं समझते। व्यापार करके द्रव्य सम्पादन करना यही जिनका प्रधान उद्देश है, ऐसे दवा वेचनेवाले वैद्य व डाक्टरोंकी पौष्टिक दवाओंके विज्ञापनोंके ऊपर उनकी जीवनडोरी लटकी हुई देखी जाती है और यह तो स्पष्ट है कि जिन दवाओंके खानेका लोगोंको व्यसन पड़े वैसी दवायें बनानेमें ही उन व्यापारियोंका लाभ रहा हुआ है। मदिरा प्रभृत्ति व्यसनकी वस्तुओंका व्यापार अधिक बढा है इसका यही कारण है; क्योंकि एक आधवार उसका स्वाद लगनेके पश्चात् लोगोंको उसके विना नहीं चल सक्ता। धातुपुष्टिकी गोलियोंके सम्बन्धमें भी विशेष करके ऐसाही बनता है। धातुपुष्टिकी बहुत सी दवाओंमें ऐसी वस्तुयें रहती है कि जो खानेवालोंको प्रथम साधारण लाभ करती

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

है; किन्तु वे दवायें आखिरमें नसोंको शिथिल बनानेवाली रहती हैं और पुरुषातन बढानेके बदले कम करती हैं और उसके साथ २ आयुष्य भी कम करती हैं। ऐसा होने पर भी खानेवालोंको वैसी दवायें वारम्वार लेनेकी आकांक्षा रहती हो ऐसा मालूम होता है; क्योंकि वीर्यवाहक नसोंको उसकी आदत पड़नेसे उसके ज्ञानतन्तु मगजके पास बार २ उसे मांगते हैं। पुष्टिकी बहुतसी औषधियोंमें जहरी मादक एवं स्तंभक वस्तुओंकी मिलावट अवश्य रहती हैं जो वस्तुयें पुरुषत्वको नाश करनेमें उपयोगी हैं इस बातको हरएक मनुष्यने अवश्य ध्यानमें रखना चाहिये।

२ आहार सम्बन्धी सूचनायें।

वाजीकरणके कार्यमें आहार भी आवश्यक पदार्थ है। इसलिये आहार अर्थात् खानपान सम्बन्धी भी अनेक बातें जानने योग्य है। जैसे दवाओंमें कितनीक क्षणीक वाजीकर और पीछे शिथिलता लानेवाली है और कितनीक दवायें शिथिलता लाये विना सच्चा पुरुषत्व देती हैं; वैसेही खानपानकी वस्तुओंमें भी अनेक वस्तुयें उत्तेजक होकर तात्कालिक चमत्कार बताकर इन्द्रियोंको जागृति देती है; किन्तु

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

परिणाममें वेही वस्तुयें नसोंको निर्बल बनाती है और कितनीक वस्तुयें ऐसे दोष रहित होनेके साथ ही सच्चापुरुषत्व देती है। आहारकी बातपर लोग चाहिये उतना लक्ष नहीं देते; किन्तु शरीरके कुदरती बंधारणके अनुसार मनुष्यका स्थूल और सूक्ष्म शरीर बंधता है और अन्तमें आत्माकी गतिको भी आहारसे अच्छी बुरी वृत्तियां प्राप्त होती है। यह बात किस प्रकार बनती है यह कहनेका यहां पर अवकाश नही हैं; तथापि यह बात सत्य है और अत्यंत आवश्यकीय है। मनुष्यकी सात्विकी राजसा और तामसी प्रकृति भी आहारसे बंधती है और खुराकमें भी ये तीन प्रकृतियां रही हुई है। उसमेंसे सात्विक प्रकृतिवाला खुराक प्रकृतिको वास्तविक सच्चा पुरुषत्व देता है और बाकीके अन्य खुराक प्रकृतिको विकृत बनाकर मनुष्यको विषय वासनाकी क्षणिक वृत्तियोंमें आकर्षण कर जाते हैं; किन्तु उसमें वाजीकरणका वास्तविक आनन्द नहीं मिल सक्ता।

ब्रह्मचर्यका पालन कर वीर्यका रक्षण करनेकी और पुरुषत्वको बढानेकी इच्छा करनेवाले पुरुषोंने विशेष करके सात्विक खुराक लेना चाहिये। जो खुराक इन्द्रियोंको चंचल नहीं बनाकर शान्त बनावे उसे सात्विक कहना चाहिये। जो खुराक वीर्यकी

१ सात्विक खुराकका सेवन.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वारम्वार प्रवृत्ति नही करके उसे नियममें रक्खे और योग्य समयपर जिस खुराकका बनाहुआ वीर्य सच्चा पुरुषत्व बतावे उस खुराकको सात्विक समझना । गेहू, चावल, मुंग, यव, रहल, घृत, दूध, मक्खन, मलाई, सक्कर, उत्तम प्रकारके हित-कारी शाक, ताजेफुल, मेवा, प्रभृति सत्वगुणी खुराक है। फिर अल्पाहारी व मिताहारी बनना चाहिये ।

२ राजसी खुराक-का अल्प सेवन.

जो खुराक वीर्यको वारम्वार उष्ण बनावे और इन्द्रियोंको जागृत करे वैसे खुराकको राजसी कहना चाहिये । सात्विक खुराककी वस्तुओंका भी अति आहार होनेसे किम्वा अनियमित आहार होनेसे वे वस्तुयें भी राजसी गुण उत्पन्न करती है। दूध, घृत, सक्कर, ओर उसमेंसे बनने वाले पक्वान्न और मिष्टान्नका वारम्वार उपयोग किया जाय तो वह खुराक सत्वगुणी होनेपर भी शरीरकी इन्द्रियोंमें विकार उत्पन्न करता है। इसके उपरान्त अधिक शाक, अधिक मशाले, अधिक आचार, अधिक तीते, खट्टे आर नीमकिन पदार्थ, अधिक तेल, मीरच, गुड, चीनी, दहीं, मेंदेकी पुड़ी प्रभृति खुराक भी कम लेना चाहिये ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

३ तामसी खुराकका त्याग.

इस खुराकमें तमोगुण बढानेवाली सभी मादक वस्तुओंका समावेश किया जा सक्ता है। इससे वैसी वस्तुओंका सर्वथा त्याग करना चाहिये; क्योंकि वे वस्तुयें नसोंको शिथिल बनाती है और पुरुषत्वका भी नाश करती है। अज्ञानी लोग पुरुषत्वके लिये सामने उन वस्तुओंका उपयोग करते हैं; किन्तु आगे कहा गया है वैसे वह केवल क्षणिक जुस्सा बताती है और उन वस्तुओंकी अन्तिम असर शरीरकी नसोंको गरम बना देनेकी है। मदिरा, भांग, गांजा, अफीम, तमाखु, चाह, काफी और उनसे मिली हुई सभी वस्तुयें न्यूनाधिक हानीकारी है। इस लिये उनका सर्वथा त्याग करना चाहिये।

४ अति आहारका त्याग.

अति आहारका त्याग करना चाहिये; क्योंकि अधिक खानेसे नसें उष्ण होती है और वारम्वार उष्ण होनेसे शिथिल बने यह सामान्य नियम है। अधिक खुराक इन्द्रियोमें क्षुब्धता उत्पन्न करता है। क्षुब्धताके सबबसे वे उष्ण बनती हैं और वारम्वार उष्ण बनना यह पुरुषत्वकी हानीका चिन्ह है। अनियमित आहारका भी यही परिणाम है। रात्रीको विलम्बसे खानेसे भी हानी होती हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

५ पुरुषत्वके नाश करनेवाले खानपान.

मादक वस्तुयें, जहरी वस्तुयें, सब प्रकारके क्षार (हदके ऊपरान्त खाये जाय तो) थे पुरुषत्वका नाश करते हैं। बजरी जैसे हलके खुराक खाने पर भी धातुका क्षय होता है और अधिक सुपारी खानेसे भी धात मंद होती है।

६ पुरुषत्वका नाश करनेवाली दवायें.

मादक दवायें अर्थात् अफीम, भांग, मदिरा प्रभृति मादक नसैली वस्तुयें क्षार डाली हुई दवायें, अधिक जलद व उग्र दवायें और नसोंको शिथिल बनानेवाली दवायें पुरुषत्वका नाश करती हैं।

७ नपुंषकत्व लानेवाली दवायें.

अधिक ठंडी दवाओंका अधिक सेवन शिथिलता लाता है। सुराखार अधिक समय तक खाया जाय तो पुरुषत्वकी कमी होती है; किन्तु उसका त्याग करनेपर फिर पुरुषत्व आ सक्ता है। काफुर भी नसोंको शिथिल बनाकर नपुंषकता लाता है। कुछ अंग्रेजी दवायें भी ऐसा गुण रखती है। इन दवाओंमें "आयोडीन" नांवकी दवाकी मिलावटवाली कई दवाओंका भी समावेश किया जा सक्ता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

८ पोटास आयोडाईन.

अधिक वजनमें अधिक समयतक छेनेपर नसोमें शिथिलता आती है। "आयोडीन" की बनावटसे आयोडीनमें नपुंषकता लानेका गुण अधिक है। एक डाक्टरका कथन है कि "आयोडीन" एवं पोटास आयोडाइ इसे स्त्रियोंके स्तन गल जाते हैं और पुरुषोंके वृषण छोटे हो जाते हैं। कई डाक्टरोंकी सम्मति है कि उमसे नपुंषकत्व नहीं प्राप्त होता; किन्तु वह दवा खाईजाय वहांतक संभोगकी इच्छा नही होती। "ब्रोमाइड ऑफ पोटाश्यम" इस दवासे भी पुरुषत्व कम हो जाता है। पुरुषके जनन अवयव उससे गल जाते हैं ऐसा एक डाक्टर अपने अनुभवसे कहता है।

कुछ डाक्टरोंकी सम्मति है कि सीशा, एन्टीमनी, सोमल सल्फाईड ऑफ कारबान, कोनायम और केम्फर प्रभृति दवाओंसे नपुंषकता आती है और कई लोग इस सम्मतिको नहीं स्वीकार करते।

इस प्रकार आप देख सक्ते हैं कि खानेके पदार्थोंकी योग्यायोग्यता देखे विना इच्छानुसार खानपानसे भी पुरुषत्व कम होता जाता है। इसलिये मनुष्योंने पुरुषत्व प्राप्त करनेके

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उपायोंकी शोध करनेके प्रथम अपने नित्यके खानपानसे पुरुषत्वका नाश हो रहा है जिसका सबसे पहिले विचार करना चाहिये और इस लेखमें लिखनेके अनुसार पुरुषत्वकी कमी करने वाले खानपानका त्याग करना और विचारमें भी नियम और नीतिसे चलना चाहिये जिससे मनुष्यको पुरुष-त्वके पीछे खाली फांके मारनेकी और द्रव्य व्यय करनेकी आवश्यक्ता नही रहेगी।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्रकरण ४

पुरुषत्व और स्त्रीत्वके नाश करनेवाले अन्य कारण

१ अभ्यास किम्वा व्यवसायमें मनकी एकाग्रता.

ऐसे अनेक मनुष्य देखे जाते हैं कि जो अभ्यास व व्यवसायमें इतने तल्लीन हो जाते है कि पीछे उन्हें संभोगकी इच्छा ही नहीं होती।

२ विचारोत्पति

मनमें अमुक प्रकारके विचारोंकी उत्पति होनेसे संभोगकी इच्छा वंद पड़ जाती हैं ऐसे उदाहरण भी कहीं २ देखनेमें आते हैं। जिसे एक आधवार ऐसा होता है उसे फिर अपने पुरुषत्वके लिये शंका उत्पन्न होती है और उसी शंकाके कारण वह चिन्तातुर बनता है और बहुतसे लोग ऐसी चिन्तामें आत्महत्या करनेको भी तैयार हो जाते हैं। वास्तविकमें यह कुछ सच्ची नपुंषकता नही हैं; किन्तु केवल मनका संदेह है जिसे किसी भी युक्तिसे निकाल देना चाहिये।

३ हस्तदोष.

हस्त दोषसे कम, अधिक या सम्पूर्ण नपुंषकता अवश्य प्राप्त होती है। वीर्यकी उत्पत्तिके आरंभमें ही उसे हाथसे निकाल देनेसे बहुत ही हानी होती है। बहुत करके यह खराब आदत कच्ची

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उम्मरमें पड़ती है और समझ आनेके पश्चात् छूट जाती हैं। फिर भी जितने प्रमाणमें वह खराबी होती है उतने प्रमाणमें नसें थोड़ी बहुत निर्बल बन जाती है और यद्यपि युवानीके चढते हुए खूनमें उसकी खराब असर नहीं मालूम होती; किन्तु कुछ समयके पश्चात् कम ताकतकी खबर पड़ती है और नादान वयमें पड़ी हुई खराब आदतके स्मरण होते ही सामने अधिक

। यह आदत खराब आदतवाले बालकोंके समागमसे पड़ती है। इसलिये ऐसे खराब बालकोंका समागम नहीं करना और समझदार माता पिताओंने अपने बालकोंको ऐसे खराब समागमसे सदैव दूर रखनेकी कोशीश करना चाहिये।

४ सृष्टि विरुद्ध कर्म.

कुछ पुरुषोंको पुरुष संगकी खराब आदत कुदरती रीतिसे वारसेमें मिलती है। और कुछ लोग पीछेसे सिखते हैं। इस प्रकार पुरुषका समागम करनेसे पुरुषका स्त्री जातिके प्रति स्वाभाविक रीतिसे अभाव उत्पन्न हो जाता है। अनेकवार ऐसा बनता है कि व्यभिचार करनेसे जो पुरुष नपुंसक जैसे हो जाते हैं वे ऐसी खराब आदतका आश्रय लेते हैं और ऐसा करते हैं तभीही वे स्त्रीकी कामेच्छाके अनुकुल होनेके लिये शक्ति-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मान होते हैं। किन्तु ऐसे कृत्रिम उपायसे क्षणिक जांगृति आनेके सिवाय उसमें सच्चा पुरुषत्व नहीं आसक्ता। यह खराब आदत हस्तदोषके समान हानीकारी है और नोकर चाकर और खराब आदतवाले लड़कोंके समागमसे पड़ती है।

५मानसिकसंभोग.

मनकी वृत्तियां किसप्रकार दूषित होती हैं और वह कैसे २ विकारोंके आधीन होती है वह इस एक ही दृष्टान्तसे अच्छी तरहसे सिद्ध हो जा सक्ता है। पाठक जानकर कदापि आश्चर्यको प्राप्त होंगे कि ऐसे भी कुछ व्यभिचारी युवक देखे जाते हैं किजो केवल मानसिक व्यभिचार कर आनन्द मानते हैं। किसी भी स्वरुपवती स्त्रीकी और मन आकर्षित हो और वैसी स्त्रीकी प्राप्तिके विषयमें मनमें संकल्प होनेसे वीर्यपात हो जाय उसका नांव मानसिक संभोग किम्वा मानसिक व्यभिचार है। ऐसे पुरुष स्त्री समागम करनेमें अशक्त रहते हैं; किन्तु स्त्रीके चिन्तवन मात्रसे स्त्री सहवासके समान उनमें विकार जागृत होता है। और एक आध मिनिटमें ही वीर्यका पात होता है। अधिक समय तक ऐसे विकारके वश-आधीन होनेवाले युवान पुरूषोंका वीर्य कुछ भी जागृतिके विनाही स्खलित होने लगता है और अपस्मार (वाई) के समान रोग भी उत्पन्न होते हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इस्त दोष व अन्य भूलोंसे जितने नपुंषक बनते हैं उससे तरुणावस्थामें अधिक स्त्रीसमागम करनेसे अधिक युवक नपुंषक बनते हैं। शरीरके अवयवोंका ऐसा स्वभाव है कि जो अवयव कार्य करने योग्य नहीं हुआ हो फिर भी उस अवयवका अधिक उपयोग किया जाय तो वह शीघ्र निर्बल बनता है। छोटी उमरसे मगजके परिश्रम करनेवाले बालक अनेकबार अपस्मारकी बीमारीमें फसजाते हैं और अनेक बुद्धिहीन बनते हैं। शरीरसे अधिक परिश्रम करनेपर निर्बलता आती है और शरीर बढने नहीं पाता। वही नियम उत्पत्ति अवयोंके लिये ठीक होता है। नोकर चाकर छोटे बालकोंको रोनेसे रोकने के लिये उनकी गुह्येन्द्रियकी कुचेष्टा करते हैं उससे उन्हे आनन्द मिलता है व रोते बंद हो जाते हैं; किन्तु ऐसी आदतके कारण पीछेसे बड़ी उमरमें हस्तदोष करना सिखते हैं किम्वा जागृति व इच्छाका भी नाश होता है। तरुणावस्था में अतियोग होनेके कारण वृद्धावस्था शीघ्र प्राप्त होती है। युवान मनुष्योंने समझना चाहिये कि शरीरमें वीर्य शीघ्रतासे उत्पन्न नहीं हो सक्ता और उसीसे यह बात भी सदैव स्मरणमें

४ तरुणावस्थामें होनेवाला अतियोग.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

रखने योग्य है कि थोड़े समयमें बार २ समागम करनेसे किम्वा हस्तदोष कर वीर्य गुमा देनेसे हरएक समय सच्चा वीर्य नहीं निकलता। सच्चा वीर्य तो केवल एक ही बार निकलता है और पीछेसे कुछ भी नहीं निकलता और अतियोगके होनेसे आखिर मगजकी बीमारी होते है किम्वा अपस्मार अर्थात् वाई और हिस्टीरियेके समान रोग लागु होते हैं। मदिरा प्रभृतिके नसेमें कुछ भी अवधि नहीं रहती; क्योंकि उसका नसा एकदम मनुष्यको अति कामातुर बनाता है और जब ऐसे नसेमें अतियोग होता है; तब वीर्यके बदलेमें पानीके समान स्राव होता है। अनेकवार हाजतके विना ही पीसाब चला जाता है और जननेन्द्रिय जागृत नहीं होने पाती। वृद्धावस्था तक स्त्री सम्बन्धकी शक्तिको स्थायी रखनेकी इच्छावाले पुरुषोंने युवावस्थामें अतियोग नहीं करना चाहिये। युवान तन्दुरस्त पुरुषोंको अतियोगसे कुछ भी कमजोरी नहि मालूम होती; फिर भी उन्होंने ध्यानमें रखना चाहिये कि युवावस्थामें किये हुए अतियोगसे उन्हें चालीस वर्षकी वयमें ही बुढापा आनेवाला है। स्त्रीको अतियोगसे पुरुषके समान हानी नहीं होती; फिर भी शरीरमें अनेक पीड़ायें होती है और अवयव रह जाते हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

७शरीरकी स्थूलता.

अनेकवार शरीरकी स्थूलता भी नपुंषकत्वका कारण बनती है, जिन पुरुषोमें चरबीकी अभिवृद्धि होती है अर्थात् शरीर स्थूल होनेके साथ २ पेटकी फांद बढती है व थोड़ासा परिश्रम करते ही थक जाते हैं। ऐसी स्थूलता अनेकवार नपुंषकत्वका कारण होती है। उपाय करने पर उसमें सुधार भी हो सक्ता है।

८शरीरकीक्षीणता.

शरीरके क्षीण होनेसे–गल जानेसे भी नपुंषकत्व माप्त होता है। चिन्ता एवं अन्य कारणोंसे मनुष्यका शरीर क्षीण होने लगता है और उसमें भी खास करके वृषणकी कोथली व जननेन्द्रिय गलने लगे तब अवश्य नपुंषकत्व माप्त होता है। वृषण और जननेन्द्रियके गल जानेके कारण निम्न मकारके हो ऐसा देखा जाता है। मधान कारण दो हैं। १ इन्द्रियोंके तन्तुओंकी शक्तिका नाश होना और २ पोषणकी न्यूनता।

१ मगजपर रक्तस्राव होनेसे वृषण गल जाते हैं।

२ छोटे मगजको कुछ इजा हो या रोग हो तो वृषण गल जाते हैं।

३ करोड़ रज्जुकी व्याधिसे भी नपुंपकत्व माप्त होता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

४ उत्पत्ति अवयवोंके तन्तुओमें रोग होनेसे भी नपुंषकत्व प्राप्त होता है।

१ अवयवोंकी न्यूनता. अवयवोंकी न्यूनता प्रभृतिसे भी नपुंषकत्व प्राप्त होता है।

१ जननेन्द्रिका अभाव. जन्मसे ही अवयवका अभाव रहता है किम्वा स्तनके आकारका चिन्ह हो। ऐसा उदाहरण क्वचित् ही देखा जाता है।

२ अवयवका कट जाना. रोगके कारण शस्त्रक्रिया करनेकी आवश्यक्ता पड़े और अवयवका अधिकभाग कट जाय तो स्त्रीसंग नहीं हो सक्ता।

३ वृषणके साथ जननेन्द्रिका चीपट जाना. जिसको जन्मसे ही ऐसी खोड़ रहती है वह मनुष्य स्त्री संगके योग्य नहीं रहता।

४ मूत्रमार्गका संकोच. मूत्रमार्गके संकोचके कारण मूत्र नलीमें बराबर जागृति नहीं आ शकती। स्त्रीसमागम हो सके; किन्तु वीर्यके स्खलित न हो सकनेके कारण आनन्दकी उत्पत्ति कम हो। मूत्रमार्ग संकीर्ण होनेके कारण स्खलित होनेवाला वीर्य स्त्री अवयवमें जानेके बदलेमें पीछा लौटकर पुरुषके मूत्राशयमें जाता है। अक्सीर प्रमेहके रोगियोंको ऐसा रोग हो जाया करता है और अनेकवार शली

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

लगवानेसे उसमें सुधार होता है।

५ विपरीत मूत्रमार्ग.

मूत्रमार्गका द्वार फूलके मध्यमें होनेके बदले कचित् वह द्वार पुरुष अवयवकी नीचेकी बाजुपर करीब २ मूलके भागकी ओर होता है। ऐसा दोष कचित् ही देखा जाता है; किन्तु जिसको वह दोष रहता है वह मनुष्य संभोग कर सक्ता है। तथापि वीर्य स्त्री अवयवमें नहीं जा सक्ता।

६ स्नायुजन्य संकोच.

मूत्रमार्गके स्नायुओंका संकोच हो जानेसे वीर्यपात नहीं होता और उससे आनन्द नहीं उत्पन्न होता है।

७ घुमटका जन्मदोष.

घुमट अर्थात् पुरुष अवयवके ऊपरकी चमड़ी कई लोगोंको जन्मसे छोटी रहती है कि जिससे फूल खूल नहीं सक्ता। ऐसे छोटे घुमटवालोंको आनन्दकी उत्पत्ति कम होती है। फिर छोटे घुमटके दबावके कारण मूत्र नलीमें आयाहुआ वीर्य एकदम बाहर स्खलित होनेके कारण भीतर रह जाता है और शिथिलता आनेके पश्चात् वह वीर्य धीरे २ बहा करता है। घुमटको काट देनेसे यह दोष दूर हो सक्ता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अनेकवार पुरुषके वृषणमें गोली नहीं रहती। ऐसे केसमें गोलियां विशेष करके पेडुमें रहती है। वृषणकी गोलियां पेडुमें रहनेसे चाहिये उतनी बढ नही सक्ती जिससे पुरुष अवयवकी शक्ति कम हो जाती है। एक गोली वृषणमें हो वहांतक संभोग शक्ति रहती है; किन्तु यदि दोनों गोलियोंका वृषणमें अभाव रहता है तो संभोग शक्ति स्वल्प भी नही रहती।

८ वृषणका अभाव.

वृषण अर्थात् गोलियां चाहिये उससे छोटी हो तो नपुंसकपनेकी संभावना रहती है। कई लोगोंकी गोलियां बढती हुई रुकजाती है। कई लोगोंको युवावस्था पर्यन्त गोलियां छोटी दिखती है और स्त्रीसम्बन्ध होनेके पश्चात् चाहिये उतनी बड़ी हो जाती है। जिस प्रकार अल्पवृषणके कारण नपुंसकत्वकी संभावना है उसी प्रकार वृषणके बढनेसेभी पुरुषत्वकी न्यूनता होती है १ प्रमेह प्रभृति रोगोंके कारण किम्वा वृषणके खास रोगोंके कारण वृषण बढते हैं।

९ अल्पवृषण अतिवृषण.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मूत्र नलिकी आकृतिकी स्थूलता या सूक्ष्मताके साथ नपुंषकताका कुछ भी सम्बन्ध नही हैं। यह ठीक है कि हस्तदोषसे और स्त्री समागमसे नसें नीर्वल होती हैं और मूत्रनलि आकारमें छोटी हो जाती है; किन्तु अवयवकी अल्पताके कारण कई अज्ञानी युवक अधिक भय और चिन्तामें पड़ जाते हैं हमारी समझके अनुसार उसमें भय या चिन्ता करनेकी कोई आवश्यक्ता नही हैं, फिर औषधोपचारसे आकृतिमें कुछ न्यूनाधिक होनेकी आशा भी व्यर्थ है। जिन खराव आदतें व अत्याचारोंसे नसें शिथिल वन संकुचित होती हैं उन खराव आदतोंका व अत्याचारोंका त्याग करना चाहिये और अवयवोंको आराम देना चाहिये। उसके लिये यही उत्तममें उत्तम उपाय है।

१० मूत्र नलिकी आकृति.

स्त्रीत्वकी अपूर्णता।

कामका अभाव यह एक स्वाभाविक दोष है और वह दोष जैसे पुरुषोमें रहता है वैसे स्त्रीयोंमें भी रहता है; किन्तु वहुत कम। न्यूनाधिक इच्छाके उदाहरण तो अनेक मिल सक्ते हैं। अवयव सम्बन्धी कुछ

१इच्छाका अभाव.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विक्रियाके कारण इच्छाका अभाव किम्वा अपूर्णता रहते हैं। शरीरकी रचना अत्यन्त विचित्र है। तन्तुओंमें ज्ञान रक्खा हुआ है। एक जिह्वाका ही विचार किया जाय तो जिव्हाके तन्तुओंके कितनेक यूथ मीठे रसको जान सक्ते है; कितनेक खारे रसको पहिचान सक्ते हैं और दूसरे कितनेक अन्य स्वादकी परीक्षा कर सक्ते हैं। संभोग किम्वा कामकी इच्छा उत्पन्न होनेका भी शरीरमें स्थान होना चाहिये। उस स्थानमें उस जातिके तन्तुओंकी कुछ स्वाभाविक न्यूनता या विचित्रताके कारण ही उस इच्छाका अभाव रहता है।

२ अवयवका अभाव और अपूर्णता.

स्त्री जननइन्द्रियके अमुक भागोंका अनेकवार अभाव रहता है किम्वा उसमें कुछ अपूर्णता रही हुई हो और उससे भी स्त्रीमें कामेच्छाका अभाव रहता है किम्वा रोगके कारण उनमेंसे किसी भागका कोई अंश बीगड़कर ज्ञान रहित हो जाता है तो उत्तेजित होनेके कारण मिलनेपर भी वे भाग उत्तेजित नहीं हो तो योनि लिंगका कचित् अभाव रहता है किम्वा वह निकाल दिया जाता है तो इच्छाका अभाव हो जाता है। वह अवयव वहुत छोटा रहता है तो भी करीब २ ऐसाही परिणाम आता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ऐसी कुदरती अपूर्णता किम्वा उसका अभाव इच्छाका नाश करते हैं। १ योनिलिंगका अभाव, २ योनिलिंगकी अधिक सूक्ष्मता या स्थूलता, ३ योनिमुखका अभाव, योनिमुखका वंद होना, ५ योनिमुखमें मसे, ६ ग्रन्थी किम्वा जलवृद्धि, ७ योनिका अभाव और ८ योनिकी संकुचित स्थिति। ऐसे २ अनेक कारणोंसे कोई २ स्त्रियां स्त्रीत्वके लिये अयोग्य किम्वा अशक्त मालूम पड़ती है। ज्ञानहीन मनुष्य वास्तविक कारणको विचार नहीं करके झुठे उपाय कर द्रव्यको हानी करते हैं। इनमेंसे कई दोष सुधर न सके वैसे हैं। जैसे कि योनिका अभाव हो उसका कुछ भी उपाय नही है। मुखका अभाव हो किम्वा बीचमें परदा हो तो काटकर मार्ग खुला किया जा सक्ता है। मसे, ग्रन्थी प्रभृति औषधोपचारसे मिट सके तो अपूर्णता दूर हो सक्ती है।

३ स्पर्शासहय योनि.

स्पर्शको सहन नहीं कर सकनेके कारण इच्छाका अभाव रहता है इतना ही नहीं; किन्तु पुरुषके नांवसे और स्पर्शसे स्त्री कांपती है। तन्तु रचनामें कुछ वीकार होनेसे ऐसी स्थिति होती है। उत्तेजित तन्तुओंके द्वारा योनिमुख उत्तेजित रहता है किम्वा चाहिये

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उससे अधिक ज्ञानशक्ति आनेके कारण असहनता प्राप्त होती है। तन्तु रचनाका ऐसा विकार अधिक करके करोड़ रज्जुकी क्षुब्धावस्थाके कारण होता है। ऐसे रोगवाली स्त्रियोंको विशेष करके करोड़ रज्जुके, कमरके भागमें दबान होनेसे दरद होता है।

४ अभाव—अयोग्य सम्बन्ध.

स्त्री पुरुषके स्वभावकी असमानतासे किम्वा किसी प्रकारके अभाव या अप्रीतिके कारण परस्पर यथार्थ इच्छाका अभाव होता है। अनेकवार एकपक्षका अभाव रहता है और अनेकवार दोनों पक्षसे अभाव व अप्रीति रहते हैं। यदि पुरुषको स्त्री अनुकुल न हो तो उसको अपनी स्त्रीकी ओर प्यारकी सच्ची भावना उत्पन्न नहीं होती उसी प्रकार स्त्री पुरुषको न चाहती हो किम्वा कुछ स्वाभाविक अभाव या द्वेष आ गया हो तो उसका भाव पुरुषके प्रति उत्तेजित नहीं होता। कदापि सम्बन्ध होता हैं; किन्तु वह उसमें भाग नही लेती। आनंदके भावका किम्वा कामकी इच्छाका प्रेरक मन है इसलिये मनके उत्तेजित हुए विना यथार्थ सम्बन्ध कभी भी नही हो सक्ता। जहांपर अप्रीति किम्वा अभाव रहता है; वहांपर मन उत्तेजित नहीं होता। इसी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

लिये गुण व स्वभावकी समानताको देखकर विवाह करनेका बुद्धिमान लोग उपदेश करते हैं। वर्तमान समयका संसार इस बातका कुछ भी विचार नही करता केवल विवाहकी रश्म पूरीकर अपने ऊपरके इस बोजेको कम करते हैं और उसीसे संसारके सच्चे आनन्दका ध्वंश करते हैं। जहां पर आनन्दका अभाव रहता है; वहांपर स्वाभाविक संयोग नहीं होता। फिर भी साधारण समागमसे कदाचित् अनायास गर्भ रह जाता हैं; किन्तु वह गर्भ स्त्री पुरुषके सच्चे प्रेम या सच्चे उत्साहका फल नही होनेके कारण ऐसे दम्पति स्त्री पुरुषोंसे होनेवाली प्रजा निर्बल व वर्णशंकर जैसी हो उसमें आश्चर्य ही क्या है ?

संसारकी ऐसी भ्रष्टतासे बीचारी कितनीक अबलायें सांसारिक सुखोंको भोगने नही पाती किम्वा बहुत छोटी वयमें संभोगकी इच्छाको गुमा बैठती है। एक जंगली जानवरके समान पुरुषके साथ उसका विवाह किया जाता है। अनेकबार स्त्री जिसे बीलकुल नही चाहती ऐसे मनुष्यके साथ उसका विवाह सम्बन्ध करा दिया जाता है। कन्याविक्रयके समान जंगली व भयंकर पृथाने इस दुष्टताको उत्पन्न किया है और हमलोग अपने नेत्रसे देख रहे हैं कि दुष्ट लोभी मातापिता

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

द्रव्यकी लालसासे अपनी तरुण लड़कियोंको बुढोंके साथ ब्याहकर उनकी जीन्दगीको नष्ट करते हैं। ऐसे कओड़ोमें स्वाभाविक अभाव रहता है और आखीर या तो स्त्री व्यभिचारिणी होती है किम्वा अपनी अभिलाषाओंका योंही नाशकर स्त्रीत्वके समस्त सुख व सांसारिक सुखसे वञ्चित हो अधम संसारकी दावाग्निमें बलिदान हो जाती हैं।

५ हस्तदोष

कितनीक स्त्रियां भी इस भ्रष्ट आदतके आधीन हो अपना नाश करती है और पीछेसे स्त्रीत्वके आनन्दकी उत्कंठा रहित होती हैं। हस्तदोषके कारण अनेकवार स्त्रीमें इच्छाका ही अभाव हो जाता है किम्वा कदापि कुछ इच्छा रहती है तो भी समयपर आनन्दकी उत्कंठा नहीं होती। हस्तदोष और मानसिक विचारोंसे मनकी कल्पनाके द्वारा काम उत्पन्न करनेकी जिसको आदत पड़जाती है उसको स्वाभाविक समागमके समय काम नहीं उत्पन्न होता। ऐसी आदतवाली स्त्रियोंने उस बातका त्याग करनेके पश्चात् एक आध वर्ष तक ब्रह्मचर्यका पालन करना चाहिये और विषय सम्बन्धी विचारोंसे दूर रहना चाहिये। साथ ही सदगुणी स्त्रियोंके समागममें रहना चाहिये।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विहारके अति योगसे जैसे पुरुष पुरुषत्व गुमा बैठते हैं वैसे ही स्त्रियां भी आनंदकी इच्छाको नष्ट कर

६ अतियोग.

बैठती है। संभोगकी प्रवृत्ति करनेवाले तन्तु वारम्वार प्रवृत्ति करते रहनेके कारण थक जाते हैं और अवयव भी अधिक उपयोगमें आनेके कारण उत्कंठा रहित हो जाते हैं। अवयवोंको अधिक समयतक आराम देना, मन पवित्र रखना, पतिसे दूर सौना-वैठना और निर्वल हो गई हो तो आगे बनाये हुए उपाय करना।

इच्छा व उत्कंठा दोनोंके होनेपर भी अनेकवार स्त्रियोंके कामकी शान्ति नहीं होती। ऐसा होनेमें कुछ पुरुषों

७ कामकी शांती न होनी.

का दोष रहता है और कुछ संसारकी पृथाओंको दोष देना चाहिये। सत्य बात यह है कि संसारमें स्त्री पुरुषके अधिकार व स्वतंत्रताओंमें बहुत भिन्नता प्रविष्ट हुई है। पुरुष अपनी अभिलाषाओंको स्वतंत्रतासे उपयोग कर सकते हैं; किन्तु स्त्रियोंको अपनी इच्छाओंको दवाना पड़ता है। स्त्रियोंमें लज्जा व संकोच है और वह लज्जा उन्हें अधिक समयतक शान्त रखती है। पुरुष तुरन्त विकारोंके आधीन होता है, उत्तेजित होता है व कामकी पूर्णता पर्यंत पहुंच

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जाता है। स्त्रीमें वह वृत्ति धीरे २ उत्तेजित होती है आर शान्ति भी बिलम्बसे होती हैं; किन्तु पुरुष शीघ्र स्खलित हो जानेके कारण स्त्रीकी उत्कंठाकी शान्ति नही होती। स्त्रियोमें जो लज्जा, मर्यादा व शान्ति है उसको छोड़ देनेकी सिफारस करना यह अनीतिको उत्तेजन देनेके समान है। उत्तम उपाय तो यही है कि पुरुषोंने स्त्रियोंके जितना धैर्य रखनेकी शक्तिको प्राप्त करना। उस शक्तिको अधिक समयतक पवित्र मन रखकर ब्रह्मचर्यके पालन करनेसे अर्थात् विरक्त रहनेसे प्राप्त कर सक्ते हैं।

ऊपरोक्त कथनके अनुसार पुरुष व स्त्रियोंको अपनी २ जातिके स्वाभाविक धर्मोंके बाधक कारण हैं। उन कारणोंमें मानसिक एवं शारीरिक अर्थात् स्थानिक कारणोंका समावेश होता है। इसके शिवाय सार्व दैहिक अर्थात् सम्पूर्ण शरीरको जो रोग लागु होते हैं वे रोग किम्वा विकार भी पुरुषत्व और स्त्रीत्वका नाश करते हैं इस विषयमें आगामि प्रकरणम विस्तारसे लिखा जायगा।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्रकरण ८

पुरुषत्व सम्बन्धी शिकायतें व उपाय ।

पीछेके प्रकरणोंमें पुरुषत्व और स्त्रीत्वके अभाव किम्वा नाश करनेवाले कारण किस २ प्रकारसे उत्पन्न होते हैं उसका संक्षेपमें उल्लेख किया गया है। उनमेंसे कई कारण औषधोपचारसे दूर हो सकते हैं, कईमें शस्त्रोपचारकी भी आवश्यक्ता पड़ती है और कई बातें ऐसी भी है कि स्त्रीपुरुष अपने मनसे समझकर अपनी खराव आदतोंको छोड़ दे और अपने आहार विहार सम्बन्धी वर्तनमें सुधार करे जिससे वे शिकायतें दूर हो शक्ती हैं। शस्त्रोपचार सम्बन्धी सलाह शस्त्रवैद्य अर्थात् वर्तमान समयके कुशल डाक्टर ही देनेयोग्य है। जिससे जो स्थानिक दोष आगेके प्रकरणमें वताये गये हैं उनमेंसे जो दोष शस्त्र क्रियासे सुधर सक्ते हैं उनमें शस्त्रवैद्योंकी अर्थात् डाक्टरोंकी ही सलाह लेना चाहिये। पुरुषत्व सम्बन्धी अन्य कितनीक शिकायतें वंशपरम्परासे आती हैं अर्थात् जिसके पितामें पुरुषत्वका दोष किम्वा अपूर्णता हो उसके पुत्रमें भी वह दोष वारसेमें मिलता है और जिसकी मातामें स्त्रीत्वकी न्यूनता रहती है उसकी पुत्रीमें भी समयपर ऐसी न्यूनता वारसेमें मिलती है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वैसे ही गुण, स्वभाव और शक्ति सम्बन्धी न्यूनतायें भी वंश-परम्परासे आती देखी जाती है। जिन सन्तानोंका गर्भ अपने पिताकी खराब आदतोंके समयमें किम्वा उनकी निर्वलताके समयमें रहता है वे सन्तान वैसी खराब आदतोंका या निर्वलताका वारसा लेकर उत्पन्न होते हैं।

इस प्रकार पुरुषत्व सम्बन्धी सच्ची या झूठी अर्थात् मन-कल्पित जो २ शिकायतें हमारी सामने उपस्थित होती हैं उन शिकायतोंका और उनके उपायका इस प्रकरणमें उल्लेख किया गया है।

तरुण मनुष्योंको यह अवश्य जान लेना चाहिये कि पुरुषत्व सम्बन्धी शिकायतोंमें सैंकड़े पीछे २५ शिकायतें झूठे विचार व झूठी शंकाओंमेंसे उत्पन्न होती है। कई युवक स्वयं सम्पूर्ण रीतिसे पुरुषत्व युक्त होनेपर भी वार २ झूठे ख्याल-पर चले जाते हैं जिन्हें ठीकानेपर लाना बहुत कठिन हो रहा है। संसारी कार्योंसे अपरिचित बीचारे तरुण मनुष्य पुरुषा-तनके रहनेपर भी अपनेको पुरुषार्थहीन मान वैठते है और एकवार ऐसा भय मनमें घुस जाता है वह किसी प्रकार निकल नहीं सकता। वह अपने मनमें दुखित होता है और वह

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

किसीसे अपना दुःख कह नहीं सक्ता। कोई २ तरुण इस दुःखके मारे पागल जैसे बन जाते हैं और कई तरुण आत्महत्या करनेको तैयार हो जाते हैं। उनकी शिकायत किम्बा चिन्ताका कारण सत्य है या मिथ्या है उसका निर्णय करना कठिन है। लोगोंमें ऐसी शिकायतोंके लिये बड़ी भारी लज्जा व बदनामी समझी जाती है और उससे बीचारे तरुण मनुष्य अपनी बात किसीसे कह नहीं सक्ते। घरके मनुष्य या बड़ोंके सामने यह बात कही नहीं जा सक्ती। मित्रोंको मालूम रहता है; किन्तु वे भी उसके समान अज्ञान रहते हैं और आखीर संकोच करता हुआ गुप्तरीतिसे वैद्य या डाक्टरके पास जा कर या उनको लिखकर अपनी हालत निवेदन करता है। वैद्य व डाक्टरोंमेंसे अधिक लोगोंने केवल द्रव्योपार्जनके लिये दुकानें लगा रक्खी है जिससे थोड़ा रोग होनेपर भी अधिक बताना किम्वा कोई रोग नहीं होनेपर भी उसको अपनी जालमें फसाना यह उनका व्यवसाय ही है। फिर निर्बलता व नामर्दीकी शिकायत आजकल साधारणसी हो रही है जिससे कोई भी मनुष्य आजकलके बाजारु राजवैद्य, वैद्यराज या वैद्यशास्त्रीके पास नाड़ी दिखानेके लिये हाथ बढाता है

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तो उसकी नाड़ी परीक्षामें "कमताकात," "नाकौवती" "नामर्दि," "निर्बलता" इनमेंसे एक आध शब्द तो प्रथम ही निकलेगा। उस रोगीको तो वही चाहिये था जिससे वह अपनी निर्बलताकी सभी बातें करने लगता है और "वैद्यराजजी" हां में हां मिलातेहुए उसकी पुष्टि करते जाते हैं। आये हुए मनुष्यकी शिकायत सत्य है या केवल मनकल्पित भ्रम है उसकी मीमांसा करनेकी वैद्यराजजीको कोई परवाह नही रहती। डाक्टर लोग भी विशेष करके रोगीके बोलनेके ऊपर आधार रखकर प्रस्क्रीपशन लिख देते हैं और उसके पश्चात् वह मानसिक रोगी सच्चा रोगी हो बैठता हैं। हम ऐसा नहीं कहना चाहते हैं कि सदैव सभोंके सम्बन्धमें ऐसा ही बनता है; किन्तु कम ताकतकी शिकायनके सो केसोंमें करीब २ पचीस केस वास्तविकमें कमताकतके नहीं होनेपर भी उनकी रोगियोंमें गणना हो जाती है। यदि स्वार्थको एक ओर रखकर रोगीके हितकी खातीर उसकी सर्वांशमें व सर्वांगमें मीमांसा की जाय तो सेंकड़े पीछे पचीस केस ऐसे भी निकल सकते हैं कि जो केवल झुठे विचारोंके कारण अपनेको नामर्द या नाताकत समझते हैं। किसी भी नाताकत व नामर्दोंकी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

शिकायत ठीक है या नहीं और है तो किस कारणसे है उसकी मीमांसा करनेमें केवल उसकी नाड़ी देख लेना या हकीकत सुन लेना काफी नही हैं। उसके आचरणकी, उसके मनकी स्थितिका और उसकी सारीरिक देखभाल-वैद्य लोग तो प्रायः नहीं करते; किन्तु डाक्टरोमंसे भी थोड़े ही डाक्टर शारीरिक परीक्षा करते हैं। इतनेसे ही पूरा हाल मालूम नहीं हो सकता है। इसलिये रोगीके खास मित्र प्रभृतिसे भी उसके सम्बन्धमें कितनाक जानने योग्य हाल मालूम कर लेना चाहिये। और इस प्रकार पूर्ण हाल जाननेके पश्चात् ही सच्ची परीक्षा हो सकती है। कई शिकायतोमें तो खास करके इस प्रकारकी तपास करनेकी आवश्यक्ता है और वैसा करनेके सिवाय केवल अनुमानसे जो परीक्षा होती है वह ठीक नहीं हो सक्ती और उपाय भी कुछ कार्य नहीं कर सक्ते।

जन्मके पश्चात् एक पुत्र या पुत्री किन २ विशेपताओंको या अपूर्णताओंको लाये हैं उसका विचार उनकी बाल्यावस्थासे ही करना चाहिये। यह कार्य माता पिताओंका है और उसमें चतुर डाक्टर या वैद्यकी सहायता लेनेकी आवश्यक्ता है; किन्तु अपने लोगोमें ऐसी कुछ भी परवाह नहीं रक्खी जाती है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कितनीक गुप्त अपूर्णताओंका और दोषोंका बाल्यावस्थासे इलाज हो सकता है और यदि उस प्रकार न किया जाय तो बड़ी उमर होनेपर वैसे दोषके लिये जो विटंबनायें होती हैं वे न हो। मूर्ख माता पिता ऐसे दोष या अपूर्णताओंको सामने गुप्त रखते हैं और इस प्रकारके बालकको आंखे मुंद कर संसारमें डाल देते हैं। हमारा यह कथन बालकोंके गुह्य अवयवोंके सम्बन्धमें है। लड़का उत्पन्न हो तो उसके अवयवोंकी एक पुरुष डाक्टरके पास अच्छी तरहसे जाँच करवानी चाहिये और लड़की उत्पन्न हो तो उसकी जाँच एक चतुर स्त्री डाक्टर या दायिनके पास करानी चाहिये और यदि किसी प्रकारका दोष मालूम हो तो जहांतक संभव हो उसी समय दूर करवाना चाहिये किम्वा योग्य वय होनेपर उसे दूर करवाना चाहिये। उदाहरणके तोरपर मूत्रनलिका घुमट छोटा होनेके कारण कई बालक कष्ट पाते हैं और बड़ी उमर तक उसका कुछ भी उपाय न किया जाय तो वह घुमटका संकोच उसके लिये अत्यन्त दुःख व पश्चात्तापका कारण हो जाता है।

पुरुषत्वके लिये मनुष्य इधर उधर मारा मारा फिरता है; किन्तु उसके शरीरमेंसे पुरुषत्व किस कारणसे गया है या कमी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हुआ है उसका प्रथम विचार करना चाहिये। जैसे स्थानिक रोग या दोष पुरुषत्वके लिये बाधक है; वैसे ही शारीरिक रोग भी पुरुषत्वका नाश करता है। यह बात हरएक मनुष्यने हर एक समय याद रखनी चाहिये, यह बात बहुत ही जरुरी है और कई लोग उसे भूल जाते है। उनके शरीरमें व्याधि लगी रहती है; फिर भी उस व्याधि सम्बन्धी विचारको एक और छोड़कर पुरुषत्वकी लालसामें इधर उधर घुमता फिरता है और वैद्य या डाक्टरके पास आकरके भी उसी बातकी शिकायत करता है। यदि वैद्य या डाक्टर समझदार रहते हैं तो उन कम ताकतके कारणोंको समझाते हैं और प्रथम उस कारणको दूर करनेकी शिफारस करते है; किन्तु शरीरके धर्मसे अजान रोगीको वह बात गळेसे नहीं उतरती; जिससे वह धातुपुष्टिकी दवाओंको ही मांगा करता है।

किन्तु धातु क्या पदार्थ है ? और वह किस प्रकार और किसमेंसे बनती है ? यह बात हरएक मनुष्यने समझलेनी चाहिये धातु खुराकमेंसे एवं धातुवर्धक दवाओमेंसे बनती है सही; किन्तु उस खुराकके धातु बननेके पूर्व अनेक संस्कार होते हैं। प्रथम खाया हुआ खुराक होजरीमें जाता है। यदि होजरी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बीगड़ी हुई न हो और अच्छी तरहसे कार्य करती हो तो वहां पर वह खुराकका रस बनाती है। वहांसे वह रस आन्तोमें जाता है। वह रस आन्तोमें पकता है; किन्तु उसको पकानेके लिये यकृत् अर्थात् लीवरमेंसे पित्तनांवका रस और अन्य रससमूह अपने २ स्थानमेंसे जाकर मिलते हैं। यदि वे लिवर प्रभृति भाग बीगड़े हुए रहते हैं तो चाहिये उतना पित्त अन्तोमें नही जाता है और आन्तोमें गया हुआ रस अच्छी तरहसे पकता नही हैं। आन्तोमें पके हुए रसको आन्तोके स्नायु आकर्षण कर खूनकी नसोमें चढाते है और वहांसे हृद-यमें जाता है। हृदय अच्छी तरहसे कार्य कर सकता हो तो हृदयमें गया हुआ खून सम्पूर्ण शरीरका पोषण करता है और सम्पूर्ण शरीरमें भ्रमणकर और उसके साथ मिलकर फिर आया हुआ खून फेफसेमें जाता है जहांपर बीगड़ा हुआ खून शुद्ध हो कर फिर हृदयमें जा कर वहांसे पुनः शरीरके पोष-णके लिये जाता है। यदि फेफसे बीगड़े हुए हो तो वह खून स्वच्छ नही हो सकता और शरीरमें बीगड़े हुए खूनकी वृद्धि होती जाती है। इस परसे स्पष्ट है कि शरीरके पोषणके लिये प्रथम स्वच्छ खून होनेके लिये होजरी जठर आन्त, यकृत् (लीवर)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हृदय (हार्ट) और फेफसे ये सब मर्मस्थान अपना कार्य अच्छी तरहसे करते हुए होने चाहिये। यदि उनमेंसे एक भी मर्मस्थान बीगड़ा हुआ रहता है तो चाहिये उतना और चाहिये वैसा स्वच्छ खूनका होना रुक जाता है। यह तो खूनकी ही बात की गई; किन्तु उस खूनमेंसे एक दूसरी ही क्रियासे मांस बनता है। मांसमेंसे मेद बनता हैं, मेदमेंसे अस्थि अर्थात् हड्डी बनती हैं। हड्डीमेंसे उसमें रही हुई मज्जा बनती है और मज्जामेंसे वीर्य अर्थात् धात बनती है। इस प्रकार खूनमेंसे धात होनेके लिये दूसरी धातुओमें सदैव चलनेवाली क्रियाओमेंसे पसार होना चाहिये और यदि वे धातु बीगड़े हुए हो तो यहां पर भी धात बननेकी क्रियाको हानी पहुंचती है। एक लीवरका रोगी किम्वा जिसके आन्त बीगड़े हुए हैं या निर्बल पडे हैं अर्थात् जिनकी पाचन शक्ति बीगड़ी हुई हो या मन्द हो गई हो ऐसा रोगी धातु पुष्टिकी उत्तमोत्तम पौष्टिक दवायें और मात्रायें खाय तो उससे उसे क्या लाभ होगा ? मैं तो कहता हूं कि वे पौष्टिक अर्थात् पाचन होनेमें भारी दवायें पाचन शक्तिके ऊपर सामने बोजा कर उसे अधिक बीगाड़ेगी। इसमें कोई संदेह नहीं कि देशी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वैद्यक शास्त्रमें कुछ ऐसे भी उत्तम रसायनरूप प्रयोग हैं कि जो प्रयोग शरीरके समस्त मर्मस्थानोमें चलनेवाली क्रियाको सहायता कर धातु अर्थात् पुरुषत्वकी अभिवृद्धि कर सक्ते हैं; किन्तु उन उत्तम दवाओंका उपयोग आजकल कहां रहा है ? केवल थोड़े ही परोपकारी वैद्य वैसी दवाओंका आश्रय लेते हैं ।

इस सम्पूर्ण वृत्तान्तसे पाठकोंकी समझमें आ गया होगा कि शरीरके मर्मस्थान सभी या उनमेंसे एक आध भी जहांतक अच्छी तरहसे कार्य नहीं करते; वहांतक धातुपुष्टिकी दवायें और उत्तमोत्तम मात्राओंसे वाजीकरण होनेकी आशा रखना मृगजल समान मिथ्या है । इस लिये मनुष्योंने प्रथम अपनेको कोई शारीरिक रोग हो तो उसे दूर करनेका प्रयत्न करना चाहिये । मेदवाले अर्थात् अधिक मोटे और शरीरसे फूले हुए मनुष्य अधिक खुराक व दवायें खाते है, फिर भी उसमें शक्ति नहीं रहती उसका कारण क्या है ? यही कारण है कि वह जो २ खाता या पीता है उसका मेद अर्थात् चरबी बनती है और चरबीके बढजानेके कारण उस चरबीमेंसे आवश्यक गरमीके कम हो जानेसे चरबीमेंसे अस्थि, मज्जा और वीर्य चाहिये वैसे नहीं बन शक्ते । ऐसे मेदवाले मनुष्यको चाहे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDE

वैसा खुराक व उत्तम दवायें खीलाईये; फिर भी उसे लाभ नहीं होगा और जब मेद कम होगा तभी ही उनमें सच्ची शक्ति आवेगी; जिस प्रकार दूधमेंसे घृतके बननेके पहिले बीचकी दहीं बननेकी क्रियामें गड़बड़ हो जाती हैं तो मलाई नहीं उतरती और उत्तम मलाईके हुए विना मक्खन तथा घृत नहीं बन सक्ते; वैसे ही खुराकमेंसे धातु बननेकी बीचकी क्रियामें गड़बड़ हो जाती है इस लिये उन क्रियाओंके सभी स्थान उत्तम व द्रढ होनेकी प्रथम आवश्यक्ता है।

पुरुषत्व सम्बन्धी शिकायतोंके धातुपौष्टिक उपाय बताने के पहिले इतनी प्रस्तावना करनेकी मुझे आवश्यक्ता मालूम हुई है और मेरा विश्वास है कि जो सज्जन इसपर अधिक विचार करेंगे उन्हें इस प्रस्तावनामेंसे ही बहुत कुछ उपयोगी ज्ञान प्राप्त होगा।

अब पुरुषत्व सम्बन्धी शिकायतोंके उपाय बतानेके पहिले हम उन शिकायतोंका कुछ क्रम निश्चित करना उचित समझते हैं। इन शिकायतोंके प्रधान दो विभाग किये जा सक्ते हैं (१) मानसिक शिकायतें और (२) शारीरिक शिकायतें।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पुरुषत्व सम्बन्धी मानसिक शिकायतें व उपाय।

पुरुषत्व सम्बन्धी मानसिक शिकायतें प्रायः झुठे भ्रम व विचारमेंसे और मनके दूसरी ओर रुकाव होनेसे होती हैं और उससे वे शिकायतें वास्तविक रीतिसे झुठी रहती हैं फिरभी इच्छाकी उत्पत्ति मनमेंसे होती है जिससे वह मन जब झुठे विचारोंपर चला जाता है किम्वा दूसरे विषयमें लगजाता है; तब कामेच्छाका अभाव हो जाता है। जब ऐसा बनता है; तब वाजोकर औ-षध कुछ कामके नहीं रहते इसलिये ऐसी स्थितिमें कुछ और ही युक्तियोंकी आवश्यकता पड़ती हैं।

१ अभ्यास किम्वा व्यवसायमें मनका रुकना.

अमुक विषयके अभ्यासमें मनुष्यका मगज सदैव रुका रहता है उस समय ऐसे मनुष्योमें विषयवा-सनाकी इच्छाका अभाव हो जाता है।उनमें पुरुषत्व रहने पर भी ऐसा हो जाता है। व्यवसायमें या अभ्यासमें लगजानेके पश्चात् बीलकुल इच्छा न हो ऐसे उदाहरण क्वचित् ही देखे जाते हैं। “ सर आईझाक न्यूटन ” के विषयमें ऐसा कहा जाता है कि वह सम्पूर्ण पुरुषत्व युक्त होनेपर भी उसको अपनी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDE

सम्पूर्ण आयुमें स्त्री सुखकी इच्छा ही नहा हुई थी। ऐसे लोगोंको " नैष्ठिक ब्रह्मचारी " कहसक्ते हैं। कई लोगोंको इच्छा हुआ करती है; किन्तु स्त्री समागमके समय वह नष्ट हो जाती है; क्योंकि उस समय उसे अपना मन जिस विषयमें अधिक रुका हुआ रहता है वही विषय अर्थात् व्यवसाय किम्वा विचार स्मरण आता है ओर मनके उस ओर लगनेसे स्त्रीसेवनकी इच्छा शिथिल हो जाती है; किन्तु उसे वह कारण मालूम नहीं होता। उसे तो अपने पुरुषत्वके विषयमें संदेह होता है और एकवार सन्देह हो जानेसे दूसरीवार भी वह अवश्य निष्फल जाता हैं।

उपाय.

(क) अधिक समयतक स्त्री सेवनके कार्यसे और स्त्रीसे अलग रहकर इच्छाकी प्रवलताको वढाना, स्त्रीसे अलग सौना, किम्वा अधिक समयतक स्त्रीको उसके मातापिताके घरपर भेज देना या पुरुषने एकाकी यात्रामें निकल पड़ना और अपने मनमें पुरुषत्वकी हीनता सम्वन्धी भ्रम हो गया हो उसको निकाल देना।

(ख) जिस व्यवसाय किम्वा अभ्यासमें अपना मन अधिक लगा रहता हो उस व्यवसाय और अभ्यासका कुछ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दिनके लिये त्याग कर देना और निश्चिन्ततासे अपनी स्त्रीके साथ रहना; किन्तु स्वाभाविक रीतिसे प्रबल इच्छा होने पर्यंत ब्रह्मचर्यका पालन करना।

(ग) चतुर स्त्रीने अपने पतिकी मानसिक स्थितिको समझकर उसके संदेहको भूलादेनेकी चेष्टा करनी चाहिये।

२ सन्देह–भय.

कितनेक तरूण प्रथमसे ही पुरुषत्वके सम्बन्धमें संदेह-भ्रममें पड़ जाते हैं और उस संदेह व भयके कारण प्रथमसे ही पीछे पड़ते हैं। एकवार निष्फलता मिलनेपर वह अपनेको नामर्द समझ लेता है और संदेह बढता जाता है एवं स्त्रीसे सामने शरमिंदा होता है।

उपाय.

इस संदेहको दूर करनेके लिये योग्य उपाय करना चाहिये। अपनेमें पुरुषत्व है या नहीं वह जाननेके लिये जो २ योग्य उपाय करने चाहिये वे सब करने।

३ अभाव–अप्रीति.

स्त्रीके प्रति किसी प्रकारके अभाव किम्वा अप्रीतिके कारण कभी पुरुष निष्फल होता है; किन्तु कितनेक युवक अपनी निष्फलताके इस कारणको नहीं समझते और सामने संदेहमें पड़ जाते हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDE

इसका उपाय स्पष्ट है। अभाव, अप्रीति किम्वा क्रोधका आवेश हो वहांतक सम्बन्ध नहीं करना चाहिये।

उपाय.

जो लोग पुरुषत्ववाले होने पर भी केवल किसी अकस्मात्से, भयसे या सन्देहसे निष्फल हो और तबसे अपनेको नपुंषक समझ वैठे हो वे जब वैद्य किम्वा डाक्टरके पास उपायके लिये आवे तब उपचारकने वैसे सन्देहवाले मनुष्यको "तुम्हें झुठा संदेह है" ऐसा कहकर उसे विदा नहीं करके उसके मनके ऊपर आस्था विठानेके लिये कुछ भी सच्ची झुठी दवा देनी और सम्पूर्ण धैर्य व आशा देना कि इस दवाके सेवनसे तुझे इच्छा होगी और अवश्य दवाके विश्वाससे उसमें इच्छा व पुरुषत्व प्रकट होनेपर स्त्री सम्वन्ध करनेकी हिमत आती है और सफलता भी प्राप्त होती है। इस प्रकार ऐसी मानसिक शिकायतवाले रोगीके मनके समाधानके लिये कुछ दिनतक सच्ची झुठी दवा देते जाना चाना चाहिये।

मानसिक शिकायतोंके कुछ विलक्षण प्रकार भी देखने सुननेमें आते हैं। कितनेक युवक स्त्रीकी ओरके वशीकरणकी वातें किया करते हैं, कितनेक कहते हैं कि अमुक शत्रुने मंत्रने वलसे मुझे नपुंषक वना दिया है, कितनेक ऐसे संदेहमें पड़े हुए हैं कि,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उनको किसी भूतप्रेतादिने नपुंसक बना दिया है। कितनोंको यह भी संदेह हो जाता है कि हमें किसीने कुछ खीला दिया है, जिससे हममें नामर्दी आ गई है। कुछ संदेहसे, भयसे या विचारसे पुरुष एक आधवार मंद पड़ता है; जिसके लिये वह अनेक मिथ्या कल्पनाओंको करता है और सन्देहके मारे पागल बन जाता है। कितनेक अज्ञानी युवक अपनेको व्यर्थही नपुंषक समझ चिन्तामें पड़ जाते हैं, और अपने अवयवोंको देखा करते हैं। अपने अवयव सम्पूर्ण रीतिसे निरोगी होनेपर भी उसमें कुछ अपूर्णता है एसा निश्चय कर लेते हैं। ऐसे संदेहवाले युवक बीचारे, दीन व भयभीत बन जाते हैं। व एसाही मान बैठते हैं कि उनसे स्त्री सम्बन्ध नहीं हो सक्ता और जहां पर्यंत ऐसा सन्देह रहता है; वहां पर्यन्त बनता भी वैसाही है। तरुणावस्थामें हस्तदोषके अपराधी ऐसे ख्यालपर अधिक चले जाते हैं; किन्तु यह उनका भ्रम मात्र है। हस्तदोषकी निर्बलताके उपाय हस्तदोषके उपायोंमें बताये गये हैं वे करने चाहिये; किन्तु सदेहमें पड़कर खराब होना यह तो नादानी है। वैद्य व डाक्टरोंने ऐसे रोगियोंको युक्तिसे स्थानपर लानेकी चेष्टा करनी चाहिये। उन्हें मिथ्या तर्कवितर्क नहीं करनेकी, खुल्ली हवामें फिरनेकी, मन पवित्र

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

रखनेकी उत्तम व सात्विक खुराक लेनेकी और ठंडे जलसे स्नान करनेकी सम्मति देनेके साथ २ उसे कुछ नाममात्रकी दवा दिये ज़ाना जिससे उनका संदेह दूर होगा।

पुरुषत्व सम्बन्धी शारीरिक शिकायतें व उपाय।

वीर्यपात.

स्वप्नावस्थामें वारम्वार वीर्यपात होनेसे भी नपुंषकपन प्राप्त होता है। महिनेमें एक आधवार वीर्यपात होनेसे अधिक हानी नही हैं; क्योंकि वीर्याशयके भर जानेसे वैसा होनेकी संभावना हैं। जो युवक पवित्र विचारोंसे पवित्र जीन्दगी गुजारते हैं। उन्हें वीर्यपात नहीं होता। विषयवासनावाले पुरुष व स्त्रियोंके समागम करनेसे, नाटक देखनेसे, उपन्यास पढनेसे, स्त्रियोंके सम्बन्धकी बातें करनेसे और स्त्रियोमें वारम्वार चित्तके रहनेसे रात्रीमें स्वप्न आकर वारम्वार वीर्यपात होता है। हस्त दोष करनेसे और वैसी ही अन्य कृत्रिम खराव आदतोंके आधीन होनेसे भी वीर्यपात होनेका रोग लागु पड़ता है। फिर पीठपर सोनेकी आदतसे भी स्वप्नमें धात जाती हैं; क्योंकि पीठपर सोनेके कारण करोड़ रज्जुमें खूनका जमाव होता है और उससे वे भाग उष्ण हो जानेके कारण मूत्रनलिको उत्तेजन मिलता है। स्वप्नावस्थामें अधिक समयतक वीर्यपात होनेसे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भी आखीर विना स्वप्नके भी वीर्यपात होता है और मालूम नहीं होता। वीर्यवाहिनी नसोंकी अधिक निर्बलताका यह परिणाम है।

दस्त व पिसाव करनेके समय अधिक जोर करनेसे घृतके समान सफेद पदार्थ निकलता है उसको बहुतसे लोग धातु कहते हैं, किन्तु वास्तविकमें वह धातु नही हैं वह मूत्रनलिका कफ है। जिस प्रकार नासिका व गलेमेंसे कफ निकलता है उसी प्रकार मूत्रनलिके श्लेष्मावरणका जमा हुआ कफ करंझनेसे अलग होकर बाहर आता है। इसके सिवाय पिशावमें दहींके समान पदार्थ किसीवार निकलता हैं वह भी धातु नही हैं; किन्तु शंकाशील युवक ऐसे पदार्थोंको देखकर गभड़ाते हैं और डाक्टर या वैद्यके पास दौड़े जाते हैं। जो वैद्यके नाँवके लिये अच्छी तरहसे योग्य नही हैं और जिनमें वैद्यके गुण नही हैं ऐसे उँटवैद्य किम्वा धूर्तवैद्य द्रव्यके लोभसे रोगीको सामने भयभीत करदेता है और " वीर्यका महान् रोग हुआ है " ऐसा भय बताकर पैसे छीन लेता हैं।

उपाय.

प्रथम वीर्यपातके कारणकी शोध कर उस कारणको दूर करना। १ विषयकी और बारम्बार वृत्तिके आकर्षित होने पर भी जो विषयसे दूर रहनेके यत्न करते हैं उन्हें स्वप्नपात हुए विना नहीं रहता। विषयकी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ओरसे वृत्तिको पीछी आकर्षित करनेका प्रयत्न निष्फल जाता हो तो यही उत्तम है कि अमुक समयपर वीर्यको स्वाभाविक मार्ग देना। वीर्यको जानेके तीन मार्ग है। स्त्रीसम्बन्ध, स्वप्न और हस्तदोष। स्त्रीसम्बन्धसे शरीरको जितना आघात होता है उससे स्वप्नपातसे अधिक आघात लगता है और उन दोनोंसे हाथके द्वारा वीर्यको निकाल देनेसे बहुत अधिक हानी होती है। इसलिये अन्तिम दो हानियोंके प्रतिबंधके लिये स्त्रीसम्बन्ध करके भी स्वप्नमें होनेवाले वीर्यपातका प्रतिबंध करना चाहिये। वीर्यपात और वीर्यस्रावके रोगियोंकी शिकायतें विवाह करनेके पश्चात् दूर होनेके उदाहरण अनेक मिलते हैं।

२ जैसे अधिक समयतक कामवृत्तिको दबानेसे वीर्यपात होता है; वैसेही अति विषयसे भी वीर्यका पात होता है। यदि ऐसा कारण हो तो वह पुष्टिकी दवाओंके खानेसे जितना सुधरता है उससे अवयवोंको अधिक समय तक आराम देनेसे विशेष सुधरता है।

३ दिनमें कल्पना करनेवाली मानसिक वृत्तियां रात्रीको स्वप्नमें प्रत्यक्ष होती है और स्वप्न, संभोग और स्वप्नपात यह उसका परिणाम है। इस लिये वीर्यपातके रोगियोंने अपना दिन पवित्र विचारोंमें और अपने व्यावहारिक कार्योंमें निका-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

लना, मलिन विचारोंका त्याग करना, रात्रीको भी निद्रा आनेके समयतक मनको किसी उद्योगमें लगा रखना, ईश्वर-पूजन या भक्तिमें समयको लगाना, उत्तम पुस्तकें पढना, स्त्रियोंका समागम सर्वथा छोड़देना किम्वा तीर्थयात्रामें निकलकर मनको पवित्र कार्यमें लगा देना ।

४ सादे व सात्विक खुराकका सेवन रखना, मिताहारी होना और उत्तेजक खानपान, उत्तेजक औषधियें और उत्तेजक व्यसनोंसे दूर रहना ।

५ रात्रीको हलका भोजन करना; पेटमें कुछ स्थान खाली रहने देना और भोजन करनेके पश्चात् तुरन्त सौना नहीं ।

६ जिनसे सहन होसके उन्होंने ठंडे जलसे स्नान करना चाहिये । निर्बल शरीरवालोंने कुछ गरम जलसे स्नान करना चाहिये । रात्रीको भी मगजपर ठंडे जलकी धारा करनी चाहिये

७ संध्या, सूवे खुली हवामें घुमनेके लिये जाना ।

८ रात्रीको पिशाव करके सौना और रात्रीमें पिशाव करनेकी इच्छा हो तो उसे दबा नहीं रखना, सौनेका बीछौना बहुत नरम नहीं रखना, पड़खेपर सौना, चित्त नहीं सौना और सूवेमें जब निंद खुल जाय; तब बीछौनेका त्याग कर शौचस्नानादि नित्यकर्म करना या पढनेके लिये बैठना । पीछेकी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

रात्रीको निंद खूल जाय; तब कुछ रात्री होनेपर भी बीछौनेमें पड़े रहना या सौना नहीं चाहिये; क्योंकि पीछेकी रात्रीको मलमूत्रके कोश भरे रहनेसे स्वप्न आनेकी संभावना है और स्वप्नके आनेपर ही वीर्यपात होनेकी संभावना है।

इस प्रकार स्वप्न व वीर्यपातको उत्तेजन मिले वैसी समस्त बातोंका त्याग करना चाहिये और जिसके द्वारा वीर्यपात रुके वैसे आहार और विहारका अभ्यास रखना चाहिये। इसके सिवाय वीर्यपात और धातुस्रावको रोकनेके लिये धातुपौष्टिक और वीर्यस्तंभक उपाय इस पुस्तकके अन्तिम प्रकरणमें देखिये।

अति स्त्रीसंग.

कच्ची वयमें अर्थात् युवावस्थाके प्रारंभमें अति स्त्रीसंग करनेसे निर्बलता आ जाती है और नपुंषकताकी प्रायः सभी शिकायतें इसी कारणमेंसे उत्पन्न होती हैं। छोटी वयमें ऐसा अतियोग करनेवाले पुरुष युवावस्थामें ही वृद्धके समान बन जाते हैं; इन्द्रियां निस्तेज बन जाती है और अवयव शिथिल बन जाते हैं। छोटी वयमें अतिविहार करनेवाले बीस वर्षकी वयमें ही शक्तिहीन बन जाते हैं और पीछे इच्छा होती है; किन्तु तन्तुओंकी निर्बलताके कारण वे संभोग नहीं कर सक्ते। जो युवावस्थामें

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

नियमित रहते हैं उनमें ६० और ७८ वर्षकी वय तक संभोगकी शक्ति कायम रहती है ऐसे अनेक उदाहरण देखनेमें भी आते हैं। एक ग्रामीण मनुष्यकी सम्पूर्ण जीन्दगीका मुझे अनुभव है। उसने ८० वर्ष पर्यन्त निर्दोषतासे और पवित्रतासे जीन्दगी गुजारनेके पश्चात् विवाह किया। विवाह करनेके पश्चात् उसको आठ दश बालक हुए और ९० वर्षकी वयमें उनका शरीर छूटा। उसमें आखिर तक स्त्रीसेवन करनेकी शक्ति थी। प्रथमावस्थामें ब्रह्मचर्यके पालन करनेका जो माहात्म्य कहा हुआ है वह इसी लिये है। हरएक मनुष्यके विवाहकी और मरणकी वय और उसके आचरणकी नोंध रहती हो तो उस नोंध परसे इस बातका विश्वास हो सकता है।

अति विहारसे तन्तु शिथिल हो जाते हैं और नपुंषकत्व प्राप्त होता है इतनाही नहीं; किन्तु उदासिनता, अपस्मार, पागलपन प्रभृति कितनेक मनके रोग भी होते हैं। कितनोंमें सम्पूर्ण नपुंषकता और कितनोमें आधी नपुंषकता आती है। इच्छा व जागृतिका नाश होना यह सम्पूर्ण नपुंकता है और इच्छा तथा जागृति हो; किन्तु सम्बन्ध होनेके पूर्व ही वीर्यपात होजाय और सन्तोषजनक सम्बन्ध नहीं हो सके वह आधी नपुंषकता है। ऐसी आधी नपुंषकता अनेक मनुष्योमें

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

देखी जाती है और विशेष करके मध्य वयमें अर्थात् ३० से ५० वर्षकी उमरमें उस प्रकारकी अशक्ति मालूम होती है। इस वयमें सम्पूर्ण शक्ति होनी चाहिये। इच्छा और शक्तिका साथ ही नाश हो यह स्वाभाविक क्रम है; किन्तु इच्छा होनेपर भी शक्ति कम मालूम हो तो समझना चाहिये कि कुछ नियम विरुद्ध अतियोग किम्वा कुदरती पाप किया हुआ है। आधी उमरमें अर्थात् ४०–६० वर्षकी उमरमें तरुण पुरुषोंके समान बारम्बार किम्वा नित्यविहारकी इच्छा नहीं होती; किन्तु कुछ दिनके बाद भी जब इच्छा होती है; तब विहारका कार्य सन्तोषजनक रीतिसे हो सक्ता है। यदि छोटी उमरमें अतियोग हुआ होता है तो युवावस्थामें ही अशक्ति मालूम होने लगती है और उमरमें तो एकदम कमताकती और नपुंषकताके लक्षण प्रत्यक्ष मालूम होते हैं। उन्हें अधिक समयपर भी स्त्रीकी इच्छा नहीं होती और कदापि अधिक समयके पश्चात् भी इच्छा होती है तो कार्य नहीं बन सक्ता।

अब स्त्री समागममें अतियोग किसको कहना यह समझनेकी जरुरत है। स्त्रीके ऋतुकालमें उसका संयोग करना यह कुदरती किम्वा शास्त्रीय नियम है; किन्तु संसारकी वासनामें डुबे हुए लोग उस नियमका पालन नहीं करसक्ते। सप्ताहमें

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

एक समय स्त्री सम्बन्ध करना यह मध्यम प्रकारका नियम है। प्रतिदिनका स्त्री समागम अति बलवान पुरुषको भी हानीकारी होता है। वीस वर्षके भीतर किसी भी पुरुषने स्त्री सम्बन्धमें नहीं पड़ना चाहिये। २५ से ४० वर्षकी वय पर्यन्त एक सप्ताहका अन्तर रखना चाहिये। चालीस वर्षकी वयके पीछे वह अन्तर अधिक बढाना चाहिये अर्थात् दो किम्वा चार सप्ताहको छोड़कर स्त्री सम्बन्धका नियम रखना चाहिये।

गांवोके लोगोंसे नगरके सुधरे हुए लोग अधिक विषयी देखे जाते हैं और उसीसे गांवोंके लोगोंकी अपेक्षा नगरके लोगोंको शीघ्रतासे नपुंषकता प्राप्त होती है। गांवोके रहनेवाले मनुष्य कुदरती इच्छा किम्वा हाजतके आधीन होते हैं और नगरके लोग कृत्रिम अर्थात् बनावटी इच्छाके आधीन होते हैं।

अति स्त्री संग करनेसे धातु सम्बन्धी अनेक विकार व रोग उत्पन्न होते हैं। इसके सिवाय और भी रोग होते हैं। जैसे कि पागलपन, अपस्मार अर्थात् मृगी और हिस्टीरिया प्रभृति। अतिसंग करनेवाले पुरुषोमें पूर्ण बल और उत्साहसे जागृति नहीं होती। कदापि जागृति होती है; किन्तु संयोग होते २ ही वीर्यपात हो जाता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अति स्त्री संगसे होनेवाली हानियोंको और खराबियोंको ध्यानमें रखकर विहारमें नियमित रहना यही उसका उपाय है। अति स्त्रीसमागमके कारण सर्वथा शक्तिहीन बने हुए पुरुष अधिक समयतक ब्रह्मचर्यका पालन करे तो फिर शक्ति प्राप्त कर शके। इसके सिवाय पौष्टिक खुराक और धातुवर्द्धक दवाओंका सेवन करना चाहिये।

उपाय.

पीछेके प्रकरणमें लिखनेके अनुसार हस्तदोषसे पुरुषातनकी न्यूनता होती है या वह नष्ट होता है। इस खराबीके तीन विभाग किये जा सक्ते हैं।

२ हस्तदोष.

हस्तदोषकी खराबी कम हुई हो तो इस प्रकारकी शिकायतें उत्पन्न होती है। युवावस्थामें उसका कुछ भी परिणाम नहीं मालूम होता; किन्तु तीस वर्षके पश्चात् अर्थात् उतरती हुई अवस्थामें अशक्ति व शिथिलता मालूम होते हैं और अधिक समयके अन्तरायके विना उत्साह पूर्वक इच्छा नहि होती। स्मरण शक्ति कुछ कम होती है और कार्य व्यवसायमें चाहिये वैसी हिम्मत या उत्साह नहीं रहते।

(क) अल्पदोष.

हस्तदोष विशेष होनेपर उसके चिन्ह युवावस्थामेंसे ही मालूम होने लगते हैं। युवावस्थाकी लालीमा नष्ट होकर चहरा मुरझाया हुआ और फिका मालूम होता है। आँखे गढेसी हो जाती हैं, मुख लम्बा हो जाता है, दृष्टि

(ख) विशेषदोष.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

नीचे जाती है, चहरे पर फुन्सियां निकल आती है; शिरमें दरद होता है, पीठ व कम्मरमें और पांवकी पींड़ियोंमें भी दरद होता है। कमर निर्बल बनजाती है जिससे विना सहारे बैठा नहीं जा सक्ता। निद्रा कम व स्वप्न अधिक आते हैं और सूबे शय्यामेंसे उठते ही आलश्य आती है। कार्यमें उत्साह नहीं होता और मन किसी कार्यमें नहीं लगता। स्मरणशक्ति सर्वथा मन्द हो जाती है, स्वभाव डरपोक व चिढाऊ हो जाता है। नाड़ियें टूटती है। नसें खिचती है, मन व्याकुल व विह्वल बनता है, छाती निर्बल बनती है, हृदय फरता है, पाचनशक्ति मन्द हो जाती है और पुरुषत्वमें बहुत मन्द हो जाता है।

(ग) अतिदोष.

अतिदोष होनेपर हिस्टीरिया, वाई और उन्मादके जैसे रोग लागु पड़ते हैं और पुरुषातन जाकर एक दम नपुषकत्व प्राप्त होता है। यह हस्तदोष दो प्रकारसे होता है। (१) अपने हस्तदोषसे और (२) जन्म देनेवाले पिताके दोषसे। इस दोषवाले बहुतसे तरुणोंको जब पुरुषातनकी न्यूनता मालूम होती है तब उन्हें अपनी की हुई नादानी याद आती है; किन्तु कितनोंको इस दोषके नादानीमें करनेके कारण अपनी ऐसी स्थितिका कारण समझनेमें नहीं आता किम्वा वारसेमें वह दोष मिला रहता है तो भी कारण

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

नहीं मालूम हो सक्ता। इसी लिये हमने ऊपरकी तीन अवस्थाओंके लक्षण दिये हैं। जिसपरसे पाठक न्यूनाधिक दोषका प्रमाण और अपने या वारसेके दोषका कारण समझ सकेंगे।

हस्तदोषकी आदतके कारण.

अन्य नादान बालकोंका समागम, नोकर चाकरोंने बाल्यावस्थामें पाड़ी हुई आदत और वारसेमें मिली हुई हस्तदोष करनेकी स्वाभाविक वृत्ति ये हस्त दोषके प्रधान कारण हैं।

नपुंषकत्व शीघ्र प्राप्त होनेका प्रधान कारण अति स्त्रीसंग और हस्तदोष है। इनमें हस्तदोषका कारण अधिक हानी करता है; क्योंकि उस कार्यमें केवल थोड़े ही समयकी एकान्तकी आवश्यक्ता नहीं रहती। अर्थात् स्त्रीसंग करनेकी अपेक्षा हस्तदोषका कृत्य करनेमें अधिक सरलता होनेके कारण एक स्त्रीलम्पट पुरुषको स्त्री सम्बन्ध करनेका जितना अवसर मिलता है उसकी अपेक्षा एक हस्तदोषकी खराब आदतमें पड़े हुए युवान मनुष्यको विशेष अवसर मिलता है और उसीसे ऐसी सरलताका लाभ लेकर वारम्वार हस्तदोष करता है एवं उसी कारण हस्त दोषकी आदतसे अधिक दुर्दशा होती है।

विशेष करके विद्यार्थियोंकी बड़ी संख्या ऐसी दुष्ट आदतके आधीन हो अपनी शारीरिक एवं मानसिक शक्तिका नाश

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कर वैठते हैं। वहुतसे विद्यार्थी इस प्रकारकी शिकायत करते आते हैं और उनकी स्मरणशक्ति एकदम बीगड़ जाती है। हस्तदोषसे सम्पूर्ण किम्वा अपूर्ण नपुंषकत्व प्राप्त होता है इसमें कुछ भी सन्देह नहीं है; किन्तु जब हस्तदोषकी खरावी अवधिके उपरान्त हो जाती है; तब उसमेंसे अनेकवार अपस्मार (मृगी) हिस्टीरिया प्रभृति भयंकर रोग भी उत्पन्न होते हैं;

हस्तदोषकी खरावीका वड़ी उमरमें ज्ञान होनेपर यह आदत छोड़ दी जाती है। कितनेक पश्चात्ताप कर उस आदतको छोड़ देते हैं; किन्तु कितनेक प्रतिज्ञा पूर्वक त्याग करने पर भी फिर उस आदतके आधीन होते हैं और विवाह करनेके पश्चात् उनमेंसे कितनोंको अपनी अशक्तिके हाल मालूम होनेपर वे निराश हो जाते हैं।

लक्षण.

हस्तदोषके कारण अविवाहित युवकोंके शरीरकी व मनकी स्थिति इस प्रकारको हो जाती है, युवावस्थाकी लालीमा नष्ट हो गाल सूख जाते है। और चहेरा फीका पड़जाता है। शरीर कृश व दुर्वल होजाता है। चहेरा उतरा हुआ दीन खीन्न व शुष्क वन जाता है। चहेरेपर फुन्सियां हो जाती है। मुख लम्बा हो जाता है। और द्रष्टि नीची हो जाती है। शिरमें दरद होता है, पीठ, कमर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

और पांवके स्नायुओंमें दरद होता है। जुस्सा नरम हो जाता है, सहारेके विना वैठा नहीं जासक्ता। सुवेमें बीछौनेमेंसे उठते आलश्य होती है और शारीरिक किम्वा मानसिक कार्य करनेमें चित्त नहीं लगता। स्वभाव डरपोक व चिडाऊ हो जाता है। चहेरा उदासीनतावाला होता है, निद्रा कम आती है, स्वप्न अधिक आते हैं और स्मरण शक्ति नष्ट होजाती है। नाड़ियें टूटती है, नसें खिंचती है और दोषके अधिक रहने पर उस महापापकी शिक्षा रूपसे आंचकी, अपस्मार और उन्मादके समान भयंकर रोग उत्पन्न होते हैं।

उपाय. हस्तदोषकी आदतसे प्राप्त होनेवाली नपुंषकताको दूर करनेके लिये निम्न सूचनायें ध्यानमें रखने योग्य हैं। (१) हस्तदोषकी आदतको छोड़ देना और अधिक समय तक ब्रह्मचर्यका पालनकर नसोंको आराम देना; (२) सादे खानपानका सेवन रखना और पवित्रतासे जीन्दगी गुजारना, (३) समस्त उत्तेजक खानपान व उत्तेजक दवाओंका त्याग करना, (४) चाह, काफी, और खराब व्यसनोंका त्याग करना, (५) गरम खुराकका त्याग करना जैसे कि गरम मसाला, मदिरा प्रभृति, (६) इस पुस्तकके आठवें प्रकरणमें लिखे हुए वाजिकरण उपायोंका आश्रय

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

छेना, (७) अंग्रेजी-दवाओंमें-स्ट्रिकन्या, ब्रोमाइड ओफ सोडीयम, फासफरस प्रभृति दवाओंकी डाक्टर लोग सिफारस करते हैं इस लिये उसका भी आश्रय छेना।

४ सृष्टि विरुद्ध कर्म.

जो लोग अपनी नादानीके कारण किम्वा खराब संगतिके कारण पुरुष संगकी खराब आदतके आधीन होते हैं उनमेंसे स्त्री जातिकी ओरके प्यारके समस्त अंकुर नष्ट होते हैं; यह दोष अधिक व्यभिचारसे उत्पन्न होता है, क्योंकि अधिक व्यभिचारसे नपुंषकत्व प्राप्त होता है और पुरुषत्व प्राप्त करनेके लिये ऐसे सृष्टि विरुद्ध अपराध करनेके लिये मनुष्य प्रेरित होता है। कितनेक नादान बालक परस्पर ऐसे अपराधोंको करते हैं। साथमें खेलनेसे, धींगामस्ती करनेसे और साथमें जलमें तेरनेसे एक दूसरोंके शरीर एकत्र होते हैं उससे एवं वैसेही दुष्ट कृत्योंको द्रष्टिसे देखनेके कारण ऐसे अपराध करनेकी इच्छा होती है।

लक्षण.

स्त्रियोंकी ओर अभाव, चहेरा अपराधी और भयभीत, द्रष्टि नीची, शिरमें वारम्वार दरद, चक्कर, मन्दाग्नि, दस्तकी कवजियत या अधिक दस्तका होना, पीठमें दरद, चलनेमें विचित्रता, शरीरमें निर्वलता, नेत्रमें गढे, क्वचित् दाढी व मूछका अभाव, इन्द्रियोंकी शिथिलता, दुर्वलता

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

व कृशता, वृषण शिथिल, आकृतिमें छोटे। इत्यादि अनेक लक्षणोंके ऊपरसे यह अपराध पहिचाना जा सकता है। कईएकोंको मृगोकी बीमारी हो जाती है।

उपाय.

(१) ऐसा अपराध नहीं करनेकी प्रतिज्ञा लेनी और स्त्रीकी ओर मन लगानेके लिये चेष्टा करना। सद्गुणी स्त्रियोंके साथ अधिक सहवास रखना, (२) ठंडे जलसे स्नान करना और खुल्ली हवामें घुमना, (३) एक डाक्टर "ब्रोमाइड ओफ स्मेडीयम" नांवकी दवाको सेवन करनेकी सिफारस करता है। उसकी मात्रा १० से १५ गेहुभर एकदिनमें तीनवार देना। फिर वह गरदन पर और पीठके मध्यमें कमरपर दाग देनेकी सिफारस करता है। उस डाक्टरकी यह भी कथन है कि मैने एक रोगीको इस उपायसे अच्छा किया है। फिर वह डाक्टर कहता है कि छ महिने तक ऊपरोक्त दवाके पीनेसे पुरुषसंगकी इच्छा नष्ट हुई, पुरुषसंग करनेकी वृत्तिके बंद पडनेके पश्चात् वह डाक्टर स्टक्न्या और फोसफरसके समान दवायें लेनेकी सिफारस करता है। अति विषय और हस्तदोषके रोगियोंको जो उपाय लागु होते हैं वे उपाय ऐसे रोगियोंको भी लागु होते हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(४) इस पुस्तकमें लिखे हुए वाजीकरण और धातुपौष्टिक उपायोंका आश्रय लेना।

५ मानसिक संभोग.

यह खराबी मनके दोषोंमेंसे उत्पन्न होती है; किन्तु वह दूसरी मानसिक शिकायतोंके समान मनके झुठे सन्देहका परिणाम नहीं हैं। इस खराबीमें मनकी कल्पनासे सच्चे संभोगके समान धातुपात हो जाता है और स्त्रीसंभोग करनेके समान पुरुषको आनन्द प्राप्त होता है। ऐसी आदतवाले पुरुष स्त्रीसम्बन्ध करनेमें अशक्त रहते हैं। ऐसे पुरुषोंको रास्तेमें चलते हुए किसी भी स्त्रीके सुन्दरस्वरुपको देखकर किम्वा स्त्रीका सुन्दर चित्र देखकर या वैसी किसी स्त्रीकी केवल कल्पना-संकल्पके होनेसे ही वीर्यपात होजाता है। कितनोंको स्त्रीका अमुक पोषाक पहिननेसे, स्त्रीके समान गानेसे या नाचनेसे वीर्यपात होता है अर्थात् वीर्यपात करनेके लिये ही वे स्त्रीके समान चेष्टायें करते हैं।

उपाय.

हस्तदोषके उपायोंके समान ही इस रोगमें उपाय भी लागु होते हैं। मनको मलिन विचारोंमेंसे दूर रखनेके लिये शृंगारकी पुस्तकें उपन्यास और नाटकोंको नहीं पढना चाहिये। नीतिकी पुस्तकें बांचनी और सदाचारी स्त्रीपुरुषोंका समागम करना। मन विषय-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वासनाकी ओर जाय तो तुरन्त उसके ऊपर अंकुश रखकर उसको अन्य कार्य व्यवसायमें लगा देना।

६ शरीरका गलना.

शरीरके गलनेसे अर्थात् सूखनेसे भी नपुंसकता या निर्बलता आती है। कितनेक रोगोंसे या मानसिक चिन्ताओंसे शरीर गलता है।

उपाय.

रोग होनेपर उसका उपाय करना, वायुके कारण शरीर सूखता हो तो वायुके उपाय करने और मानसिक चिन्ताके होनेपर उस चिन्ताको दूर करनेके उपाय करने चाहिये।

वृषण प्रभृति उत्पत्ति अवयव ढीले हो गये हों और गल गये हों तो उसके अच्छे होनेमें वहुत कठिनता है। आगे " रसायन औषध " लिखे जांयगे वैसे कोई भी उत्तम औ-षधोंका अधिक समय तक सेवन करना जिससे बीगड़े हुए अवयव फिर सुधर सक्ते हैं।

७ शरीरका स्थूल होना.

शरीरमें मेदके वढनेसे अशक्तिकी शिकायत होती है; उसका कारण आगे समझाया गया है।

उपाय.

मेदको घटानेके उपाय करने। मेदवाला मनुष्य धातुपुष्टिकी दवाओंका सेवन करे उससे कुछ भी लाभ नहीं होता। चरवी वढानेवाले पदार्थोंको दूर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

करना किम्वा कम सेवन करना व्यायाम–कसरत करना और खुराक सादा लेना । अनुभवी एवं कुशल उपचारकोंकी सलाहके अनुसार औषधोपचार एवं आहारविहारके करनेसे मेद कम होता है और मेदके कम होनेसे शरीरमें पुरुषत्वकी शक्ति प्राप्त होती है ।

स्त्रीत्व सम्बन्धी शिकायतें व उपाय।

इस विषयपर कोई स्वतंत्र प्रकरण नहीं लिखकर यहां पर ही उसका समावेश किया जाता है । इस पुस्तकके एक भागमें स्त्रीत्वकी अपूर्णताके विषयमें कितनीक अवयव सम्बन्धी शिकायतें बता दी गई हैं उनमें शस्त्रक्रियाकी आवश्यक्ता है । अन्य कितनीक गर्भाशय सम्बन्धी रोगोंकी शिकायतें रहती है जिसके लिये आगेके प्रकरणमें सामान्य उपाय दिये जांयगे । " हस्तदोष और "विषयवासनाका अतियोग इत्यादि स्त्रियोंकी शिकायतें पुरुषोंकी उसी प्रकारकी शिकायतोंके साथ सम्बन्ध रखती है और उसीसे उस सम्बन्धमें पुरुषोंने जितनी सावधानी रखनेकी है उतनी ही सावधानी स्त्रियोंको भी रखनी होगी । इस लिये यहां पर उस विषयपर विस्तारसे निवेदन करनेकी कोई आवश्यक्ता नही हैं ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्रकरण ६.

जननेन्द्रिय व्याधिके उपाय ।

पुरुषोंके रोग और उसके सरल उपाय ।

पुरुषत्व और स्त्रीत्वके नाश करनेवाले आगे कहे हुए अनेक कारणोंमें सांसारिक रोग प्रधान है। वर्तमान समयमें मनुष्यजातिके ऊपर यदि कोई महान्‌में महान् अभिशाप लगा हो, यदि कोई महान्‌में महान् कलंक लगा हो और यदि कोई दुष्टमें दुष्ट चेपीरोग लागु हुआ हो तो वह जननेन्द्रिय–संसर्गजन्य रोगोंका समुह है । ऐसे चेपी रोगोंके प्रचारसे मनुष्य जातिकी औलाद खून, बल और बुद्धिकी विशुद्धिमें भ्रष्ट होती जाती है और सेंकड़े पीछे ७५ दम्पत्ति ऐसे दुष्टाचारके दूषित चेपका अपनी सन्ततिको वारसा देते हैं । संसारमें जननेन्द्रिय सम्बन्धी चेपीरोग बहुत ही बढ रहे हैं और यदि उस दुष्ट चेपका प्रतिरोध करनेके लिये मनुष्यजाति शीघ्र ही सावधान न होगी तो सम्पूर्ण मनुष्य जातिका बीज सड़कर और बीगड़कर भ्रष्ट हो जायगा ।

ऐसे महान् चेपीरोगके उपचारके वर्णन करनेके लिये यह निबन्ध बहुत छोटा हैं । इस निबन्धका उद्देश ऐसे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संसर्गजन्य रोगोमेंसे मुक्त रहनेकी स्त्रीपुरुषोंको सूचना देनेकी है। फिर भी जो दम्पत्ति अपने कमभाग्यके कारण ऐसे चेपमें फस जाते हैं उन्होंने सावधान होना चाहिये। क्योंकि वह दुष्ट चेप बड़े वेगके साथ शरीरमें प्रवेश करता है और उसका जहर एकवार खूनमें मिल जानेके पश्चात् उस जहरको सर्वांशमें निकाल देना बड़े २ चिकित्सोंको भी कठिन हो जाता है। हमारा यह कथन उस दुष्ट; किन्तु घर २ में साधारण होनेवाले प्रमेह व उपदंशके रोगके विषयमें है। ये रोग इतने तो साधारण हो रहे हैं कि प्रथम जब पुत्र पितासे शरम रखता था और पिता पुत्रसे अपने रोगको गुप्त रखता था; तब इस समय पिता पुत्र अपने दुष्टाचरणके परिण॰से प्राप्त होनेवाले गुप्त रोगोंका विना संकोचके वर्णन करते हैं. लोगोंमें प्रमेह व उपदंश जैसे दुष्ट रोगकी सरस भाषामें बातें बड़े२कुटुम्बोंमें होती है और दुःखकी बात है कि स्त्रियां भी उसमें भाग लेती हैं। पुत्री पिताके पास अपने लज्जाजनक रोगकी बात कहनेमें संकोच नहीं करती और पुत्र अपनी माताके पास उन दुष्ट रोगोंकी बात कहते विचार नहीं करते। यहांतक मनुष्यजातिकी अधम दशा आ पहुंची है। हमारे इस कथनका यह मत लब नही है कि स्त्री पुरुषोंने अपने रोगोंको गुप्त रखना।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हमारे कहनेका यही मतलब है कि ऐसे लज्जाजनक दुष्ट रोगोंकी बात करनेका समय आवे ऐसे दुष्टाचरणके रास्तेपर किस लिये जाना जाहिये ? किन्तु यह जहरी चेप इतना फैल रहा है कि अनेकबार सदाचारी स्त्री पुरुष भी ऐसे दुष्ट संसर्गमें आ जाते हैं और जिन्दगीकी दुर्दशा कर बैठते हैं।

विचारे अज्ञानी लोग ऐसा मानते हैं कि उपदंशका घाव सूखजाय और प्रमेहकी जलन और पीप बंद हुई यानी वह रोग मिट गया। ऐसा माननेमें लोग बड़ी भारी भूल व गलती करते हैं और यदि वे लोग अपने रोगोंके अधिक समयके इतिहासको स्मरण करें तो उन्हें मालूम हो जाय कि वे रोग मूलको छोड़कर जाते नहीं हैं; किन्तु शरीरमें उसका जहर घर करके गुप्त रहता है, और समय मिलने पर किसी भी प्रकारसे प्रकट हो आता है। उपदंश व प्रमेह ये गरमीके रोग हैं और बद, विस्फोटक, सन्धियोंका अकड़जाना, शरीरमें ग्रन्थियोंका बंधना इत्यादि उनकी पीछेका महान् वंश विस्तार है। यह वंश आगे बढ़कर नेत्र, कान और नासिकाकी व्याधियें, नासूर, भगंदर, मसा, गलगंड, गंडमाल, पाठा, श्लीपद, रक्तपित्त, कुष्ट प्रभृति प्राणहर रोगोंको उत्पन्न करता है। जैसे अग्निकी एक छोटीसी चिनगारी बढ़कर महान् दावानल हो जाती है; वैसेही

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

शरीरमें रहा हुआ गरमीका एक छोटासा रजकण ऊपर लिखे हुए दुष्ट रोग सम्बन्धी दावानलको लगादेता है; यह बात हरएक स्त्री पुरुषोंने स्मरण रखनी चाहिये। इस परसे पाठक समझ सकते हैं कि गुप्त रोगमेंसे अन्य अनेक प्रकारके शारीरिक रोग उत्पन्न होते हैं और उन सबके उपाय इस छोटीसी पुस्तकमें देना कठिन है और ऐसे समस्त रोगोंके उपाय लिखना ऐसा इस निबंधका हेतु भी नही हैं। फिर भी संसर्गजन्य रोगोंके प्रारंभमें करने योग्य कुछ साधारण उपाय यहां पर दिये गये हैं।

प्रमेह.

आयुर्वेदके अनुसार प्रमेहका रोग वीस प्रकारका है और वह जिस प्रकार अयोग्य विहारसे होता है उसी प्रकार अयोग्य आहार अर्थात् खानपानके दोषसे भी होता है। अंग्रेजी वैद्यक शास्त्रका मत है कि यह रोग विशेष करके दुष्ट संसर्गके चेपसे होता है और वर्तमान समयमें जो प्रमेह या सुजाकका प्रचार बढ रहा है वह उस दुष्टाचरणका ही परिणाम है। इस प्रकार संसर्गसे होनेवाला प्रमेह यह गरमीका ही रोग है और उसके उपाय भी गरमीको मिलनेवाले करने चाहिये।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्रमेहके सामान्य व सरल उपाय

प्रमेहमें शिश्नेन्द्रियको थोड़ा या ज्यादा सोथ हो जाता है। इस लिये उसके ऊपर गरम जलका शेक करना। शिश्नेन्द्रियके ऊपर गरम जलमें भिगोये हुए कपड़े लपेटना किम्वा कमर तक गरम जलमें वैठना। पिशाव या दस्त उतरे वैसी दवायें लेना। खटाई खानेसे पिशावमें जलन होती है;इसलिये क्षार पदार्थका सेवन नहीं करना, अधिक जल, और दूध, अलसीकी चाह यवका उकाला हुआ जल, जल व सज्जीखार, सोड़ावाटर; प्रभृतिके पीनेसे पिशाव छुटती है किम्वा गोखरु ईसबगोल, तखमुरिया, बेदाना, वहुफली, मुलेठी, प्रभृति मूत्रल दवाओंमेंसे कोई भी एक आध दवा ठंडे जलमें भिगोकर उसका जल पिनेसे पिशावकी वेदना कम होगी।

२ धनिया, धमासा, गोखरु, पाषानभेद, और अमलतास, समान वजनसे ले कूटकर उसमेंसे प्रतिदिन रू. ३) भर दवा एक सेर जलमें भिगोकर उस जलको दो तीन वार पीना।

३ चावलका धौअन सेर १, कालीद्राक्ष तोला १, केसुडे तो. १, और त्रिफला, हरडे, वहेरा, आमला, तोला १, उन सवको कूटकर चावलके धौअनमें दोतीन घंटा तक भिगो रख

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कर पीछे मलकर उस जलको छान लेना और उस जलको संध्या सुबह पीना ।

४ आमला और गिलोयके क्वाथमें शहद व हलदीका चूर्ण डालकर उसको पीना ।

५ त्रिफलाका क्वाथ बनाना और जब वह काथ ठंडा हो जाय; तब उसमें शिलाजित या वह न मिले तो सुराखार (सौरा) डालकर पीना ।

६ केवल गिलोयका रस किम्वा काथ शहद डालकर पीना ।

७ रात्रीको भिगोये हुए गेहुंको सुबहमें पीस उसका लुआब कर उसमें थोड़ी सक्कर डालकर पीना ।

८ निर्मलीके बीज छाछमें पीस उसमें शहद डालकर पीना

९ त्रीफला, दारहलदी, हलदी, आमला, उन्हें रात्रीको जलमें भिगाकर उस जलको छानकर उसमें शहद डालकर पीना ।

१० नीम्बकी निंबोरियोंको चावलके धौअनमें पीस उसमें घृत मिलाकर पीना ।

११ ये समस्त देशी औषधियें प्रमेहकी प्रारंभिक पीड़ा और जलनको शान्त करेगी पिशाब खुलासा लावेगी और भीतरके शोथको कम करेगी । प्रमेहके सख्त चिन्ह शान्त होनेके पश्चात् अन्य उपाय करने चाहिये ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

१२ बहुतसे मनुष्य प्रमेहके प्रारंभसे ही पीचकारियें लेने लग जाते है और "चंदनका तेल" और "बालसमकोपेवा" नामकी अंग्रेजी दवायें अति प्रचलित हो रही हैं; किन्तु इन दवाओंका उपयोग करनेकी जरूरत हो तो भी प्रमेहके सख्त चिन्ह शान्त होनेके पश्चात् ही करने चाहिये।

१३ पिचकारियें–त्रिफलाका उकाला कर उसकी पिचकारी लेना–दारहलदीका उकाला या रसवंतीका जल कर उसकी पिचकारी लेना।

श्युगरलेड् एकसे चार ग्रेन और जल २॥ रूपैयेभर,
जसतके फूल एकसे चार ग्रेन और जल २॥ रूपैयेभर
फिटकरी एकसे चार ग्रेन और जल २॥ रूपैयेभर
नीला थोथा एकसे तीनग्रेन और जल २॥ रुपैयेभर
नाइट्रेटसोकसीलर $\frac{1}{2}$ ग्रेन और जल २॥ रुपैयेभर

पिचकारीकी ऊपरोक्त दवाओंमें प्रथमकी दवायें नरम है और पीछेकी सख्त है, इसलिये प्रथमकी दवाओंकी पिचकारी से लाभ न हो तो पीछेकी दवाओंका उपयोग करना चाहिये

१४ प्रमेहके अनेक उपाय हैं। मूर्खवैद्य और लोभी डाक्टर प्रमेहके रोगका यथार्थ रीतिसे उपचार करनेके बदले उसे बंद करनेके उपाय करके सामने खराबी करते हैं और

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उस प्रकार बंद होनेसे प्रमेहका दोष बदके रूपसे दूसरे स्थानपर निकलता है। इतना ही नहीं; किन्तु उसका विकार शरीरके अन्य भागोंपर भी निकल आता है। गरमीके बढनेसे प्रमेह होता है; इस लिये गरम खुराक बंद करना चाहिये। केवल दूध और चावल खानेसे प्रमेहकी शीघ्र शान्ति होती है। स्त्री सम्बन्ध बीलकुल नही रखना चाहिये। यदि उसमें गलती होगी तो प्रमेह बहुत बढजायगा।

एकवार प्रमेहके होने पीछे यदि मनुष्य खानेपीनेमें और स्त्री व्यवहारमें पथ्य न रक्खे तो उसका रोग अधिक जम जाता है और पीछे वारम्वार हमले होते हैं, धात बीगड़ जाती है और पुरुष नष्ट भ्रष्ट हो जाता है।

बहुतसे नादान पुरुषोंको प्रमेह और उपदंशकी बीमारीके साथ। जांघके–मूलमें ग्रन्थियें होती है जिसको "बद" कहते हैं। यह बदकी ग्रन्थि कई लोगोंको पककर फुट जाती है और कई एकोंको नहीं पकती; किन्तु साधारण हो कर फिर बैठ जाती है। उसके निम्न उपाय करने चाहिये।

बद.

१ गरम जलका शेक करना।
२ नीमकी पत्तिको बाफकर बांधना।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

३ सिन्दुर, रेवंचीका शीरा, और वटमूलके दूधके साथ पीसकर लेप करना,

४ कलीचुना और शहदको एक साथ मिला वदके ऊपर लगाकर ऊपर रूई लगाना।

५ भिलामा, सरगवेकी छाल, कथ्था, और गुड़ इनको एकत्र पीसकर लेप करना।

६ साटोड़ीके मूल, सौंठ, सरगवेकी छाल, सरसों और देवदार—इनको छाछमें पीसकर वदके ऊपर लगाना।

इन उपायोंको कुछदिन तक करनेसे वद वैठ जायगी। यदि पकनेकी तैयारी हो तो गेहूंके मोटे पिसानकी या अलसीकी पुलटिस बांधकर वदको पका देना। जब पक जाय तब उसको नस्तरसे चिरा लगवाना किम्वा उसके मुखपर कास्टिक पोटास लगाकर फोड़ डालना।

उपदंश

पुरुषोंके किम्वा स्त्रियोंके गुप्त अवयवोंके ऊपर थोड़ी भी गरमी या उपदंशकी असर मालूम हो तो कुछ भी गफलत या विलम्व किये विना उसके उपाय करने। प्रधान उपाय तो यही है कि ऐसी स्थितिमें स्त्री पुरुषोंने सर्वथा पृथक् रहना चाहिये अन्यथा एककी वला दूसरेके गले पड़ेगी और दोनोंकी जिन्दगी खरावी होग।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

रोग निर्मूल होनेके पश्चात् ही समागम करना चाहिये। बहुतसे नादान बालक इस प्रकारकी भूलें करके अपनी व अपनी स्त्रीकी जिन्दगीको खराब करते हैं और आखिर जिन्दगीकी सच्ची लज्जत, स्त्री समागमका सच्चा सुख इनको वे सदैवके लिये गुमा बैठते हैं। उपदंशके ऊपर बाहरसे उपाय करने इतनाही नहीं; किन्तु खानपानमें बहुत कुछ परिवर्तन करना, हलका जुलाब लेना और गरम वस्तुओंका त्याग कर देना चाहिये। गुह्य अवयवोंकी अत्यन्त सफाई रखनी चाहिये और दूध, चावल, सक्कर, रोटी, घृत प्रभृति पौष्टिक एवं गरमीको शान्त करे ऐसा खुराक लेना चाहिये। बहुतसे वैद्य प्रमेह और चांदीमें दूधसे पीप बढता है ऐसे विचारसे दूधको बंद कराते हैं; किन्तु यह बहुत भारी भूल है।

अब चांदीके लिये कुछ सरल उपाय यहां पर दिये जाते हैं।

१ पञ्चवल्कल—अर्थात् वट, गूलर, पीपर, अश्वत्थ और पारसपीपर ये पांच किम्वा इनमेंसे मिल सके उतने वृक्षकी छाल (मूलके ओरकी लेनी चाहिये) ला कर उकालना और उसके जलसे उपदंशके घावको धोना।

२ त्रिफलाके उकालेसे उपदंशके घावको धोना।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

३ रसकपुरका जल करके उस जलसे उपदंशके घावको धोना, (१ भाग रसकपुर और २००० भाग जल)

४ रसवन्तीके जलसे उपदंशके घावको धोना ।

ऊपर लिखे हुए किसी भी जलसे उपदंशके घावको दिनरातमें दो तीनवार धो कर साफ करना और उसके ऊपर निम्न दवाओंमेंसे कोई भी दवा लगाना ।

१ त्रिफलाको जलाकर उसकी भस्मको घावपर दबाना शहदमें मिलाकर लेप करना । उसमें थोड़ा नीला थोथा मिलानेसे वह अधिक असर करेगी ।

२ रसवन्तीको जलमें पीसकर उसका लेप करना,

३ करेनके मूल जलमें पीसकर उसका लेप करना,

४ गोपीचन्दन और नीला थोथा जलमें पीस कपड़े पर लगाकर उसकी पट्टी बांधना,

५ क्यालोमेलकी सफेद भूकी लगाना,

६ आयडोफार्मकी पीली भूकी लगाना,

७ साधारण उपदंश होनेपर इन उपायोंसे घाव सुख जायगा; किन्तु यदि उपदंशका जहर खूनमें मिला होगा तो खानेकी दवा लिये विना शरीरमेंसे उसका जहर नहीं निक-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

छेगा । इसके लिये योग्य वैद्य या डाक्टरकी सलाह लेकर उपाय करना चाहिये ।

स्त्रियोंके गुह्य रोगोंके उपाय ।

स्त्रियोंको भी पुरुषोंके समान रोग होते हैं । प्रदर यह स्त्रियोंके लिये प्रधान व साधारण रोग है । पिशाबमार्गसे सफेद या मैला पानी गीरता है किम्वा खून पड़ता है; उसको प्रदर रोग कहते हैं । जब खून पड़ता है, तब उसको रक्त-प्रदर कहते हैं । अतिसंग करनेसे किम्वा अति गरम वस्तु-ओंके खानेसे या शरीरकी निर्वलतासे प्रदर होता है । सैंकडे पीछे ७५ स्त्रियोंको यह शिकायत होती है । प्रदर रोगसे स्त्रियोंके शरीर धुल जाते हैं, शिरमें दरद होता है, हाथ पैरके तलिये जलते हैं, पाचन शक्ति मंद हो जाती है और शरीर गरम तपा हुआ रहता हैं, इतनाही नहीं; किन्तु प्रदर रोगवाली स्त्रीको संसार सुखकी पूर्ण इच्छा नहीं रहती किम्वा संसार सुख समागममें किसी भी प्रकारका आनन्द या उत्साह नहीं रहता अर्थात् ऐसे रोगोंसे स्त्री पुरूषोंके समागमका वाजीकर उत्साह शिथिल हो जाता है । चाहे पुरुष कैसे भी पुरुषातनवाले क्यों न हो; फिर भी यदि स्त्रीको ऐसा कुछ भी रोग होता

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

है तो उनका पुरुषातन सामने मन्द हो जाता है। इस लिये संसार सुखके सम्पूर्ण आन्दकी इच्छा रखनेवाले युगल–स्त्रीपुरुषोंका कर्तव्य है कि उन्होंने अपने ऐसे गुह्य रोगोंसे सदैव दूर रहना और थोड़ा भी ऐसा रोग हो तो उससे सचेत हो उसका उपाय करना, संसार व्यवहार सर्वथा बंद कर देना और सम्पूर्ण आराम होनेके पश्चात् ऐसा व्यवहार करना।

प्रदरके उपायोमें प्रधान उपाय ये हैं;

१ संसार व्यवहार बंद करना, पौष्टिक खुराक लेना, गुह्य अवयवोंकी स्वच्छता रखनी और गरमखानपानका त्याग करना।

२ तांदलजेके सागका मूल, और रसवंती ठंडेजलमें पीस कर उसमें चावलका धौवन और शहद मिलाकर पीना।

दाभके मूल चावलके धौवनमें पीसकर पीना।

४ कांटा शेलियाका मूल दुधमें पीसकर पीना।

५ बकान नीम्बकी कोमल पत्तियोंको जलमें पीसकर पीना

६ कड़ाया गोंद रातको भिगोकर सूबे सकरमें पीना,

७ अशोक वृक्षकी छालका क्वाथ दूध डालकर सुबह पीना

८ मांया और सकरके चूर्णमें शहद मिलाकर उसके लड्डू बनाकर खाना (चौअन्नीसे आधे रुपैये भरका लड्डु बनाना)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

९ दारहलदी, रसवंती, अडुसीकी पत्ति, मोथ, चिरायता, बेलका गरभ, भीलामा, उसका क्काथ करके शहद डालकर पीनेसे अति प्रबल शूलवाला और पीला; सफेद, और लाल सब प्रकारका प्रदर मिटता है।

१० त्रिफला अर्थात् हर्र, बहेड़ा, और आमला, इनके क्वाथसे प्रक्षालन करना किम्वा पीचकारी लेना।

पञ्चवल्कलके क्वाथसे पीचकारी लेना किम्वा प्रक्षालन करना।

१२ ठंडे खारे जलमें बैठना।

१३ जसतके फुल १ ड्राम, फुलाइहुई फिटकरी ०॥ ड्राम टेनिक एसीड २ ड्राम और जल १। शेर इन सबको मिलाकर उसकी पीचकारी मारना।

१४ लाईकर प्लम्बी सबएसेटेटीस ६ ड्राम और जल शेर १। की पीचकारी मारना।

१५ प्रदरको बहनेके तीन स्थान है। योनिमुख, योनिमार्ग और गर्भाशय। योनिमुखका प्रदर चीकना पानी जैसा रहता है। योनिमार्गका प्रदर खट्टा और सफेद दहींके जैसा सफेद होता है और गर्भमेंसे आनेवाला प्रदर चीकना और स्वच्छ रहता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

गर्भाशय प्रदर होनेपर निम्न उपाय करने चाहिये:-

१ एक जुल्लाव देना और संध्या सुबह स्त्रीको गरम जलमें बीठाना और गरम जलकी पीचकारी मारना।

२ पौष्टिक खुराक और दवायें लेनी चाहिये

स्त्रियोंके कमलमें अनेकवार क्षत पड़ता है और उसमेंसे पानी और पीप गिरता है एवं कमलकी कीनारीमें सोथ हो जाता है। यदि क्षत-घाव गहरा रहता है तो निर्जिव मांस ऊपर आकर रहता है और उसमेंसे पीप भी वहता है। उसके उपाय,—

कमलका क्षत.

१ सोथ अधिक होनेपर जलो लगवाना।

२ पञ्चवल्कलकी पीचकारी मारना, किम्वा रसवंतीकी पीचकारी मारना, मांयाकी पुटली रखना।

३ फिटकरीके पानीकी किम्वा जसतके फुलके पानीकी पीचकारी मारना।

४ टेनिक एसीडकी सोगठी बनाकर पहिनना।

५ यदि हो सके तो क्षत-घावके ऊपर कास्टीक पोटास किम्वा एसीड नाइट्रेट ओफ मर्क्युरी लगाना।

६ ग्लीसराईनमें टंकन मीलाकर किम्वा टेनिक एसीड मिलाकर उसे लगाना।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सोमरोग.

यह रोग खास स्त्रियोंको होता है। अधिक विहारसे, अधिक शोक करनेसे, परिश्रमसे और कृत्रिम विषयसे सम्पूर्ण शरीरका जलरुप रस अपने स्थानको छोड़कर मूत्रमार्गसे वहने लगता है। यह जल स्वच्छ मेलरहित शीतल, गन्ध आर पीड़ा रहित एवं सफेद रंगका वहता है और स्त्री उसे रोक नही सक्ती। जलरुप धातु शरीरका पोषण करनेवाला है इससे उसका नाम सोमरोग रक्खा गया है। उसके उपाय निम्न प्रकारके हैं।

१ पका कहोड़ा, हरे आमलेका रस, किम्वा सूखे आमलेका कहाड़ा और सक्कर इन सबको मिलाकर खाना।

२ इलायची और तमालपत्र मिलाकर द्राक्षासव पीना।

३ उरदका पीसान, मुलेठी, विदारीकंद और सक्कर इन सबका चूर्ण कर सुबहको दूधमें पीना।

४ आमलेके बीजके गर्भको शहद और सक्करमें मिलाकर तीन दिन तक पीना।

५ नाग केसरको छाछमें पीसकर तीनदिन तक पीना और छाछ तथा चावलका भोजन करना।

६ पड़वासका चूर्ण तीलके तेलमें सात रात्री तक खाना।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

७ कुहाड़ियेके मूलको चावलके धौवनमें पीसकर प्रभातमें पीना।

८ गोपीचंदन १ तोला और फिटकरी ३ मासे उसे साथमें पीसकर कंडेकी भट्ठीमें जलाकर उसमेंसे एक २ रतिभर दवा शक्करके साथ देना।

९ प्रदर रोगके उपाय भी इस रोगमें उपयोगी हैं।

योनीरोग.

योनिरोग वीस प्रकारके हैं। स्त्रियोंको यह रोग बारम्बार पीड़ाकारी होता है; इतनाही नही; किन्तु ऐसे रोगोंके कारण विहारका जो सत्य सुख रहता है वह प्राप्त नहीं होता और उससे उत्तम प्रजा भी उत्पन्न नहीं हो सक्ती। इस लिये स्त्रियोंने ऐसे गुह्य रोगोंके लिये सदैव ध्यान रखकर उनको ऐसे रोगोंसे मुक्त रखनी चाहिये। हम यहांपर उन वीस प्रकारके योनिरोगोंके लक्षण प्रभृति कुछ विस्तारसे लिखना चाहते हैं।

पांच प्रकारके वातजन्य योनिरोग हैं।

१ उदावृत्ता—फैनवाला दस्तान बहुत पीड़ाके साथ आता है वह।

२ वंध्या—दस्तानका बीलकुल नहीं आना।

३ विप्लुता—सर्वदा वेदना हुआ करे वह।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

४ परिप्लुता--पुरुष सम्बन्धमें स्त्रीको पीड़ाका होना।

५ वातला--योनिस्थान अकड़ व कठिन हो और उसमें शूल लगानेके जैसी वेदना हो वह।

पांच प्रकारके पित्तजन्य योनिरोग है।

१ लोहितक्षरा—जलनके साथ खूनका गिरना।

२ प्रसंसिनी—स्थान भ्रष्ट हो और खराब गर्भ उत्पन्न हो वह।

३ वामनी—जो स्त्री अवयव वायुके कारण दस्तानके साथ पुरुषके वीर्यको वाहर निकाल दे वह।

४ पुत्रघ्नी—खूनका स्राव होकर रहा हुआ गर्भ गिर जाय वह।

पित्तला—स्त्री अवयवमें दाह, पाक, और गरमी रहती हो वह

पांच प्रकारके कफजन्य योनिरोग हैं।

१ अत्यानन्दा—पुरुष सम्बन्धसे सन्तोषका नहीं होना।

२ कर्णिका—योनिमें कफसे और रुधिरसे डोडीके आकारकी मांसकी ग्रन्थि हो जाय वह।

३ आनदचरणा—पुरुषका वीर्य गिरते पहिले ही स्त्रीका रज छूट जाय वह। ऐसी योनिमें वीर्य ठहर नहीं सक्ता।

४ अतिचरणा—पुरुषके वीर्यके गीरनेके पहिलेही स्त्रीका रज छूट जाय वह। ऐसे स्त्री अवयवमें भी वीर्य नहीं ठहर सक्ता।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

५ श्लेष्मला–जिस स्त्री अवयवमें चीकनापन, खुजली और अति शीतलता हो वह।

पांच प्रकारके त्रिदोषजन्य योनिरोग हैं अर्थात् उस प्रकारकी स्त्रियोंका गुह्य अवयव वायु, पित्त, और इन तीन दोषोंसे युक्त रहता है।

१ षंडी--दस्तान दिखाई न दे और सम्बन्धमें खरसटके जैसा स्पर्श हो। ऐसी स्त्रियोंके छातीके अवयव–स्तन नहींके बराबर होते हैं।

२ अंडिनी–योनिद्वार बहुत छोटा रहता है वह।

३ विवृत्ता–योनिद्वार बहुत विस्तारवाला रहता है वह।

४ सूचीवक्त्रा-योनिद्वार सुईकी अनीके जैसा सूक्ष्म हो वह।

५ त्रिदोषिणी--तीन दोषके लक्षण अधिक रूपसे प्रकट होय वह।

स्त्रियोंके गुह्य अवयवोंके भी बहुत ही सूक्ष्म भेद हैं और स्त्रियोंकी भिन्न २ शिकायतोंमेंसे उन भेदोंकी खात्री होती है। इन वीस प्रकारके योनिदोषोंमेंसे अन्तिम पांच प्रकारके दोष औषधोपचारसे नहीं सुधर सके वैसे हैं। बाकीके १५ प्रकारके ऊपर भिन्न २ उपाय करने चाहिये। यहां पर कुछ उपाय लिखे जाते हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तगर, भटकटैया, कठ, सेन्धानमक, और देवदार इन सबको समान भागसे जलमें पीसकर उसमें तेल डालकर उस तेलको पकाकर उसका फुआ योनिमें रखनेसे किम्वा केवल तीलके तेलका फुआ रखनेसे वातजन्य योनि दोष सुधर सक्ता है।

पित्तका दोष होनेपर योनिमें शीतल पदार्थोंका सिञ्चन करना, घृत प्रभृतिका लेप करना किम्वा शीतल पदार्थोंसे सिद्ध किये हुए घृतमें फुवा भिगाकर योनिमें रखना, स्रंसिनी योनिको घृत लगाकर उसको दूधकी भाफ देकर भीतर बीठा देना और पीछे सौंठ, मीरच, पीपल, धनिया, जीरा, अनार और पीपरीमूल इन सबके चूर्णसे मुख वंदकर पट्टी बांधना। जलन होती हो तो आंवलेके रसमें सक्कर डालकर पोना।

योनिमेंसे पीप बहता हो तो नीमकी पत्ति प्रभृति शोधक पदार्थोंको सेन्धानमकके साथ गोमूत्रमें पीसकर उसकी गोलियें बनाकर पहिनना।

दुर्गंध व चीकनाई होनेपर वच, अडुसीकी पत्ति, कडुए परवल, गेहुंला, (प्रियंगू) और नीमकी पत्ति इन सवका चूर्ण भीतर भरना और अमलतास प्रभृतिके क्वाथसे योनिको धौना।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पीपल, मीरच, उरद, सुवा, कठ और सेन्धानमक इनको पीसकर कनिष्ठ अंगुली जैसी मोटी व लम्बी वत्तीकर योनिमें रखना, जिससे कफ सम्बन्धी दोष दूर हो जायगा।

कथ्था, हर्र, जायफळ, नीमकी पत्ति सुपारी, उनके चूर्णको मुंगके ओसामनमें पीस सूखाकर वह योनिमें रक्खा जाय तो संकोच हो कर पानीका स्राव वंद होता है।

कौंचेकी जड़का क्वाथ कर योनिको प्रक्षालन करनेसे संकोचन होता है।

जीरा, शाहजीरा, पीपळ, कलौंजा जीरा, गंधीला वज, अडुसीकी पत्ति, सेन्धानमक,जवाखार, और आजमाइन इनका चूर्ण घृतमें सेककर उसमें चीनी डाल लड्डु वनाके खानेसे योनिदोष सुधरता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्रकरण ७

वाजीकर उपाय।

वाजीकर उपाय किसे कहना यह बहुत कम मनुष्य समझते हैं, मदिराके समान केफी वस्तु भी पुरुषको कुछ समयके लिये उन्मत्तता लादेती है; किन्तु उससे वैसी मादक वस्तुको वाजीकर उपाय नहीं कह सक्ते। वाजीकर उपायोंके विषयमें चरक नांवके प्राचीन आचार्य इस प्रकार आज्ञा करते हैं।

जो उपाय सन्तति–प्रजा देकर वंशको वढाते हैं और हर्ष उत्पन्न करते हैं वे " वाजीकरण " कहलाते हैं। इन उपायोंके सेवनसे पुरुष घोड़ेके समान वलवान वनता है। स्त्रियोंसे ग्लानि नहीं पाता। वाजीकर उपायोंका सेवन करनेवाला पुरुष दिनप्रतिदिन वृद्ध होता जाता है फिर भी इन्ह औषधियोंके सेवनसे उसके शरीरमें कम न हो वैसा वीर्यका संग्रह होता है। यही नहीं; किन्तु वह वीर्य फलद्रूप अर्थात् प्रजा उत्पन्न करनेकी शक्ति रखता है। इस औषधिके प्रयोग करनेवाले मनुष्यका वंश एक फलद्रूप वृक्षके समान विस्तारको प्राप्त होता है और प्रजा वैसे पुरुषका पूजन व आदर करती है। उससे बुद्धि भी सात्विक होती है और वाजीकर उपायोंके सेवन

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

करनेवाले पुरुष यश, लक्ष्मी और बलको प्राप्त करके आखिर परलोकके सुखोंको प्राप्त करता है।

फिर पाठकोंको यह अच्छी तरहसे याद रख लेना चाहिये कि वर्तमान समयमें जो धातुपुष्टिकी गोलियोंका व्यापार बढ रहा है और जिनमें एलीया, अफीम, जहरकुचले किम्वा हेमीयेना, स्ट्रीकन्या, और क्वीनाइनके समान तामसी और जहरी दवाओंका ही विशेष करके अधिक उपयोग होता है। उन दवाओंका चरकाचार्यके ऊपरोक्त लेखमें समावेस नहीं हो सक्ता। यह ठीक है कि रोगको मिटानेके लिये किम्वा शरीरमें अमुक प्रकारके तत्वोंकी न्यूनाधिकता करनेके लिये ये अन्तिम दवायें उसके प्रमाणमें दी जाय तो लाभ करे; किन्तु एक निरोगी शरीरमें वाजीकर और रसायन क्रिया करनेके लिये ये जहरी दवायें कुछ कामकी नही हैं। हम उस कार्यके लिये भिन्न भिन्न दवाओंकी शिफारस करेंगे। वे दवायें सर्वथा निर्भय हैं, सात्विक गुणवाली है और खानेवालेके शरीरमें आरोग्य, आयुष्य एवं बलबुद्धि तथा कान्तिको बढानेवाली हैं।

वाजीकरण औषधोंका सेवन केवल विषय सुखके लिये करनेका नही हैं। यथार्थ उत्तम वाजीकर अमूल्य लाभकारी है। धर्म, अर्थ, यश और प्रीति इन सबकी प्राप्ति वाजीकरण

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

औषधियोंसे होती है। पुत्रोंकी किम्वा सन्तानोंकी प्राप्तिके लिये हरएक मनुष्य अभिलाषा रखते है; किन्तु मूर्ख व दुराचारी सन्तान मातापिताओंको कितना दुःख देनेवाले और भाररूप हो जाते हैं। इस बातका ससारियोंको अच्छा अनुभव है। सन्तानोंमें उत्तम गुणोंका आना यह वाजीकरण औषधोंके सेवनपर आधार रखता है। हर्ष देनेवाली स्त्री यह वंशका विस्तार करनेका मूल है। नेत्र, कान, नासिका, जिह्वा, त्वचा प्रभृति समस्त इन्द्रियोंके विषय प्राणीको प्रीति उत्पन्न कराते हैं, फिर जिस स्त्रीमें उन सब विषयोंका वास हुआ है ऐसी स्त्री प्रीतिको उत्पन्न करे उसमें आश्चर्य ही क्या है? इन्द्रियोंके समस्त विषयोंका समूह स्त्रीके शरीरमें रहा हुआ है इस लिये स्त्रीमें अधिक प्रीति रही हुई है और सन्तान भी स्त्रीके शरीरमें रहे हुए हैं। धर्म और अर्थकी प्राप्ति स्त्रीके द्वारा ही होती है। लक्ष्मी भी स्त्रीमें रही हुई है और इस लोकके समस्त सुखोंका आधार स्त्री है। सुन्दर, तरुण, (उमरसे या आरोग्यसे) स्त्रीके उत्तम लक्षणोंसे सुशोभित, पतिकी आज्ञानुसार चलनेवाली और उत्तम संस्कारी स्त्री सर्वोत्तम वाजीकरण है, ऐसी स्त्री यही वाजीकरण है और जिन भाग्यवान पुरुषोंको ऐसी सुन्दर, सुघड, सदाचारी और आरोग्य शरीरवाली स्त्रियां प्राप्त हुई है

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उन्हें वाजीकरण उपायोंकी कुछ भी आवश्यक्ता नही हैं। फिर भी उत्तम वाजीकरण औषधोंसे पुरुषोंमें बल व सत्व अच्छा आता है और बीजकी शुद्धि होती है और ऐसे बलवान् और विशुद्धवीर्यके द्वारा स्त्रीरुप फलद्रुप क्षेत्रमें बीज बोनेसे बलवान सन्तानकी प्राप्ति होती है और सन्तान प्राप्त करनेमें मनुष्योने संख्याका नहीं; किन्तु बल, पराक्रम और सदाचारका ही विचार करना चाहिये।

यहां पर वाजीकरण उपायेंाके तीन भेद किये जाते हैं। १ रसायन वाजीकरण, २ सात्विक वाजीकरण और ३ तामसिक वाजीकरण।

१ रसायन वाजीकरण.

इस प्रकारके उपाय वाजीकरण करनेवाले हैं; किन्तु उसीके साथ २ वे रसायनरुप हैं। आजकल बहुतसे मनुष्य रसायन शब्दसे डरते हैं; क्योंकि वे बीचारे रसायन शब्दका अर्थ ही नहीं समझते। रसायनको लोग "रसान" कह कर उसके सम्बन्धमें विचित्र प्रकारकी बातें करते हैं। वे विशेष करके रसकपुर और पारद प्रभृतिको "रसान" कहते हैं; किन्तु रसायन शब्दका ऐसा अर्थ नही हैं और रसायन औषधोमें ऐसा भय नही हैं। यहां पर जिन रसायन औषधियोंके विषयमें

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

शिकारस की जाती है वे निर्भय औषधियां है और रोगोको निरोगी बनानेवाली और निरोगीकी आयुको बढानेवाली हैं। इन रसायन दवाओमें आंवला, हर्र, बहेड़ा, गोखरु, गुग्गुल, शिलाजीत, विदारिकंद, वरधारा, चित्रक, शितावरी, असगंध इत्यादि प्रधान हैं और उनका निम्न प्रकारसे सेवन करना चाहिये; किन्तु उसके सेवन करनेके पहिले स्नेहन, स्वेदन, और विरेचनसे शरीरका शोधन करना चाहिये और प्रकृतिके अनुकुल प्रयोगका आश्रय लेना चाहिये। और उसमें अनुभवी वैद्यकी सलाह प्रथम लेनी चाहिये।

१ आंवला, गोखरु और गिलोय इन तीनोंका चूर्ण समान भागसे किया हो उसमेंसे प्रतिदिन प्रातःकालमें चौअनी भरसे लेकर एक रुपैयभर तक ले उसमें समान भागसे घृत और शहद मिलाकर खाना। वीर्यकी वृद्धि,युवावस्थाकी प्राप्ति और आयुष्यकी अभिवृद्धि होती है।

२ सूखे हुए आंवलोंका चूर्णकर उसको हरे आंवलेके रसकी भावना सातदिन तक देना। पीछे शक्तिके अनुसार उस चूर्णको चौअनीभरसे ले एक रुपगे भर तक घृत व सक्करमें चाटना। इससे खून बढता है और आरोग्य एवं आयुष्यको अभिवृद्धि होती है। साथही वीर्य दृढ होकर पुरुषत्व प्राप्त होता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

३ हरे १००० आंवलोंका रस निकालना, २५६ तोछे सूखे आंवलोंका चूर्ण करना। इस चूर्णको ऊपरोक्त रसकी प्रतिदिन भावना देना अर्थात् चूर्णमें थोड़ा २ रस डालकर उस सम्पूर्ण रसको चूर्ण पी जाय वहां तक भावना देना ऐसा ग्रन्थकारका आशय है। पीछे उस चूर्णको एक घृतके पात्रमें भरकर उसमें २५६ तोला शहद और २५६ तोला घृत डालना और आठवां हिस्सा छोटी पीपलका चूर्ण और चौथे हिस्सेकी सकर डालकर उस पात्रको वर्षामें भस्मके ढेरमें दवा देना। वर्षाके अन्तमें उसे निकालकर शक्तिके अनुसार उसमेंसे खाना। इससे अधिक समय तक तरुणता स्थिर रहे, स्मरण शक्ति वढे और समस्त रोगोंका नाश हो साथ ही स्त्रीसम्बन्धकी शक्ति स्थिर रहेगी।

४ त्रिफला अर्थात् हर्र, बहेड़े, आंवला इनको समान भागसे लेकर चूर्ण बनाना और उसमें उतना ही मुलेठीका चूर्ण मिलाना। यह चूर्ण सब रोगोंको नाश करता है, धारणाशक्ति, बुद्धि और आयुष्यको वढाता है।

५ त्रिफला, मुलैठी, वांसकपुर, पीपल, शहद, घृत, और सकर इन सबको सकरमें मिलाकर खानेसे रसायनके समान गुण करता है।

६ त्रिफला, पीपल, सेंधानमक वायवडींग, घृत, शहद

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वच और उसके साथ २ सौनेका वरक और लोह, वंग प्रभृति कोई भी एक अच्छी तरहसे पक्व हुई शुध्ध भस्म योग्य प्रमाणमें मिलाकर उसका एक वर्ष तक सेवन किया जाय तो बल, बुद्धि और स्मरण शक्ति वढते हैं।

७ वायवडींगके बीज तोला २५६, पीपल तो. २५७, सक्कर तोला ३८४, घृत तोला २५६, और शहद तोला २५६ इन सवको एकत्र मिलाकर घृतके पुराने पात्रमें डालकर उस पात्रको वर्षा ऋतुमें भस्मके ढेरमें दवाकर वर्षाके पश्चात् निकालकर खाया जाय तो वह रसायनका गुण करता है।

८ गोखरुको फल आवे उस समय उसके वृक्ष मूल समेत निकालकर छायामें सूखाना और उसका चूर्ण करना। उस चूर्णको कुछ दिन तक गोखरुके रसकी ही कुछ दिनतक भावना देना। उसमेंसे प्रतिदिन आठ तोला किम्वा शक्तिके अनुसार चूर्ण शहदके साथ पीना और उस चूर्णके पचजानेके पश्चात् दूध व चावलका भोजन करना। इस प्रकार ८०० तोला गोखरुका चूर्ण खाया जाय तो मनुष्य शतायु अर्थात् सो वर्षकी आयुवाला, कान्तिवाला और सम्पूर्ण पुरुषार्थवाला हो सक्ता है।

९ वाराहीकंदको दूधके साथ पीना और भोजनमें भी केवल दूध पीना चाहिये किम्वा उसको सूखाकर चूर्ण करनेके

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पश्चात् उसको उसके ही रसकी भावना देकर उस चूर्णको घृत या शहदमें खाना।

१० इसी प्रकार विदारीकंद, मुलैठी, हर्र, आंवले, असगंध, शितावरी, प्रभृतिका भी सेवन किया जा सक्ता है।

११ भिलामा, लसुन, और चित्रक मूल, प्रभृति औषधोंका भी यथाविधि सेवन किया जाय तो अनेक प्रकारके वायुके और त्वचाके रोग मिटते हैं तथा बल प्राप्त होता है; किन्तु उन वस्तुओंके सेवनमें वैद्योंकी सलाहके अनुसार रोग, प्रकृति और ऋतु प्रभृतिका विचार कर लेना जरूरी है।

१२ भिन्न २ रोगोंमें भिन्न २ अनुपानसे शिलाजीतका भी सेवन किया जा सक्ताहै। रक्त विकारमें मुलैठीके क्वाथके साथ पीना; शिलाजीतका भी शोषरोग अर्थात् जिसका शरीर सूखता जाता हो उन्होंने दूधके साथ पीना। जिसके शरीरपर चरबी वढती जाती हो उन्होंने शहद और जलमें मिलाकर पीना, मनकी अस्थिरता हुई हो उन्होंने दूधमें पीना, क्षयरोगवालोंने सोंठ, पीपर मीरच, शहद, और सुवर्णमाक्षिक भस्मके साथ शिलाजीत खाना और दूधका भोजन करना। मधुप्रमेह अर्थात् मीठो पीसाब (डाया बीटीस) हुआ हो उसके लिये शिलाजीतको अनारके सत्त्वके साथ ही पीना और जंगली

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्राणियोंके मांस रसमें या दूधमें भात देना। इस प्रकार ४०० तोला शिलाजीतके खानेसे दुष्ट ऐसा मधुप्रमेह भी उठ जाता है, और बल तथा आयुष्यकी अभिवृद्धि होती है।

१३ गुग्गुल—यह वस्तु कुछ भी पथ्यके विना सेवन की जा सकती है। जो लोग यथाविधि गुग्गुलका अमुक प्रमाणमें सेवन करते हैं उनके शरीरके समस्त दोष—रोग नष्ट होकर शरीर निरोगी बनता है, और बुद्धि, शक्ति एवं आयुष्यकी प्राप्ति होती है। गुग्गुल अधिकमें अधिक ५ सेर तक खाना, उससे अधिक नहीं खाना चाहिये। उसकी कममें कम मात्रा १ तोला है, और अधिकमें अधिक प्रमाण ४ तोलेका है। जब खाया हुआ गुग्गुल पच जाय तब उसके ऊपर दूध व चावल खाना। एक वर्ष तक गुग्गलके सेवन करनेवालेको स्थावर या जंगम विष कुछ भी असर नहीं कर सक्ता।

(क) बृहत् पञ्चमूलके क्वाथके साथ गुग्गुल खानेसे वायु और कफके समस्त रोग मिटते हैं।

(ख) लघु पञ्चमूलके क्वाथके साथ, वायवडींगके क्वाथके साथ, या दूर्वाकी तरके साथ गुग्गुल खानेसे दांतके, कानके और शिरके रोग, उदररोग, श्वासरोग, गुल्मरोग प्रभृति अनेक रोग मिटते हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(ग) असगंधके क्वाथके साथ गुग्गुल खानेसे पुष्टि होती है, और कमल, कालीद्राक्ष और रतांजलीके क्वाथमें खानेसे वात, पित्त और वातरक्त प्रभृति रोग मिटते हैं।

(घ) सोंठ, पीपल, कालीमीरच, चित्रक, नागरमोथ, वायवडींग और त्रिफला इनके चूर्णमें गुग्गुल मिलाकर घृतके साथ खानेसे कफके, वायुके और मेदके रोग मिटते हैं।

(च) पटोल, नीम्ब, त्रिफला, गिलोय, खैर, हलदी, आंबाहलदी, सफेद सरगवेकी छाल, इनमेंसे एकभी वस्तुके क्वाथमें गुग्गुलका सेवन किया जाय और पथ्य पालन करनेमें आवे तो भयंकर व्याधियें जैसे कि सोथ, रतवा, व्रण, भगंदर, वीर्यदोष, स्त्रियोंके दस्तान सम्बन्धी व्याधियें, मानसिक दोष, प्रमेह, त्वचारोग और पांडुरोग मिटते हैं।

१४ आंवलेका रस, शहद, सक्कर और घृत इन सबको एकत्रकर चाटनेसे वृद्धावस्थाके विकार दूर होते हैं।

१५ शितावरीके क्वाथमें चौथे भागका गौका घृत मिलाना और उस घृतमें चौथे भागका शितावरीका कल्क डालकर उसको हलकी आंचसे उकालनेपर पानीका भाग जलजाय और जो घृत बच जाय उस घृतको प्रतिदिन सुबह

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

चार तोला भर वजनमें शहद व सक्कर मिलाकर सेवन करना।

१६ असगंधका चूर्ण दूधके साथ वा घृतके साथ खानेसे शरीरमें पुष्टि आती है।

सात्विक वाजीकरणके उपायोंमें ऊपर लिखे हुए रसायन वाजीकरण उपायोंका भी समावेश किया जा सक्ता है; क्योंकि रसायन उपाय और वाजीकरण उपाय प्रायः एक ही स्वभावके रहते हैं।

२ सात्विक वाजीकरण.

१ गोखरू, एखरा, उरद, कौंच, शितावरी, इन सबका चूर्ण करके शक्तिके अनुसार दूधके साथ पीनेसे क्षीण बने हुए पुरुषको भी परम पुरुषातन मिलता है।

२ शितावरीका चूर्ण, सक्करके साथ खाना और उसके ऊपर ताजा दूध पीना।

३ मुलेठीका चूर्ण प्रतिदिन एक तोला भर लेकर घृत व शहदके साथ मिलाकर खानेसे कामेच्छा जागृत रहती है।

४ कौंच वा गोखरूका चूर्ण सक्करके साथ खाना और उसके ऊपर ताजा दूध पीना।

५ कौंच व गेहूं किम्वा कौंच तथा उरदको समान भागसे लेकर दूधमें बफाकर और पीछे उसे घृत और शहदके साथ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

खाना । उसके ऊपर तरुणी गौका दूध पीनेसे परम पुरुषानन्द मिलता है ।

६ गोखरू और तिल इन दोनोंका चूर्ण करना, उस चूर्ण को बकरीके दूधमें पकाना । ठंडाकर भीतर शहद मिला करके खाना, इससे नपुंषकत्व दुर होता है ।

७ उरदको १६ गुने जलमें पकाना । और जब ४ भागका जल बाकी रहे तब उस ओसामनमें साठी चावल और घृत खानेसे और उसके ऊपर दूध पीनेसे पुरुषत्वकी अभिवृद्धि होती है ।

८ कौंचका बीज, उरद, खजूर, शितावरी, सिंघाड़े, द्राक्ष इन सबको आठ आठ तोला लेना । उसे ६४ तोले दूध व ६४ तोले जलमें डालकर पकाना । जब आधा जल बाकी रह जाय; तब छानकर उसमें २४ तोला बांसकपूर, और २४ तोला ताजा घृत डालना इस प्रकार तैयार हुई औषधीको शहदमें मिलाकर पीना और उसके ऊपर साठी चावलका भात खाना । इस प्रयोगसे निर्बल व वृद्ध पुरुष भी तरुण पुरुषके समान हर्षका प्राप्त करते हैं। और स्तम्भन प्राप्त कर सके हैं ।

९ विदारी कदका चूर्ण ४०० तोला, सक्कर ४०० तोला, गौका घृत ६४ तोला, पीपलका चूर्ण ६४ तोला, बांसकपू-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

एका चूर्ण १२८ तोला, नवीन शहद १२८ तोला, इन सबको एकत्रकरके घृतके पुराने पात्रमें भर रखना और उसमेंसे प्रति दिन सुबहको एकबार पाचनशक्तिके प्रमाणसे खाना। इससे वीर्यकी वृद्धि होती है।

१० उत्तम दूधका बना हुआ सफेद दही ले उसका पानी निकालकर सक्कर, शहद, वांसकपूर और इलायचीको महीन पीस उसके साथ मिलाकर मिट्टीके पात्रमें सफेद वस्त्रसे उस दहीको छान लेना और उसमें घृत मिला उसके बरोबर पकाके ठंडे किये हुए साठी या बरीके चावलके साथ खानेसे बल, स्वर और कान्तिकी प्राप्ति होती है।

११ बांसकपूर, विदारीकंद, उरदका पिसान, जवका पिसान, कालीमिरचका चूर्ण इन सबको एकत्र करके उसमें सक्कर व घृत मिलाकर दूधमें छान उसकी पूरियें घृतमें तलकर सुबहको दूधके साथ खाना।

१२ जव, गेहूं और उरदके छिलके निकालकर उसका आटा तैयार करना। पीछे उसमें थोड़ा दूध व ईखका रस डालना। पीछे उसे घृतमें भूंजकर दाना पाड़ लेना, और सक्कर मिलाकर लड्डू बनाना। सुबहमें एक २ लड्डू खाना और ऊप-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

रसे छोटी पीपल और सक्कर मिलाया हुआ और कढा हुआ दूध पीना। इससे वीर्यवृद्धि होती है।

१३ गिलोय, शितावरी, कौंच, वालदाना और सालम इन पांच वस्तुओंका चूर्ण करके गौके दूधमें पीनेसे वीर्यकी वृद्धि होती है, और पुरुपत्व बढता है।

१४ विदारीकंद, पीपल; ऊषके मूल, चारोली, एखरा, और कौंचका मूल। इन हरएक वस्तुओंको १६–१६ तोला लेकर चूर्ण तैयार करना। उसमें शहद तोला १६ डालना, २०० तोला सक्कर पीसकर डालना, ३२ तोला ताजा घृत डालना. और उन सबको घृतके पुराने पात्रमें भरकर उसमेंसे प्रतिदिन सुबहमें एक तोला खाना। सम्पूर्ण पुरुषातन मिलता है।

१५ विदारीकंदको सुखाकर चूर्ण करना। उस चूर्णको विदारीकंदके ही रसकी कई भावनायें देनी। पीछे सुबहमें एक तोला चूर्ण शहद व घृतके साथ खाना इससे पुरुषातन मिलता है।

१६ आंवला व छोटी पीपलके चूर्णको हरे आंवलेके रसकी कई भावनायें देनी, पीछे सक्कर, घृत तथा शहदके साथ खाना और ऊपर दूध पीना, इससे भी वृद्ध मनुष्य भी तरुणके समान बनता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

१७ उरद, कौंच, गेंहूं और साठी चावल, सबको समान भागसे लेकर उसका आटा बनाना। पीछे सक्कर, बिदारीकंद, और चावलका चूर्ण समान भागसे मिलाना पीछे उसमें थोड़ा घृत मिलाना। और उसको दूधसें भिगो कर घृतमें पूड़िय बना कर दूधके साथ खाना।

१८ काकरासिंगीको जलमें पीसकर एक तोलेकी लुगदीको दूधमें मिलाकर पीना। और दूध, चावल और सक्करका भोजन करना।

१९ वरधारेका चूर्ण, तो. ४० और असंगध तोला ४० इन दोनोंको घृतके पुराने पात्रमें रख छोडना। उसमेंसे रातको १ तोला चूर्ण गौके दूधमें मिलाकर पीना।

२० सक्कर तो. ४ और मोचरस तो. ०॥ गौके दुधमें पीनेसे वीर्यकी वृद्धि होती है।

२१ गोखरूका चूर्ण, शहद, गौका घृत, और सक्कर इन सबको समान भागसे मिलाकर उसमेंसे दो तोला चूर्ण गौके दूधमें पीना।

२२ शेमलेके मूलके रसमें सक्कर मिलाकर खाना।

२३ शेमलेके मूल और कालीमूसलीका चूर्ण घृत व दूधके साथ खाना।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

२४ शितावरी, बालदाना, असगंध, कौंच, एखरी, गोखरू कालीमूसली, मुलेठी, इन सबका समान भागसे चूर्ण करना चूर्णके समान गौका दूध और समस्त पदार्थोंसे दोगुनी सकर इनका पाक बनाकर चार चार तोळेके लड्डू बनाना। इच्छा होनेपर उसके भीतर दालचीनी, तमालपत्र, इलायची, नागकेसर वांसकपूर, प्रभृति थोड़ा २ डालना।

२५ कौंचके बीज तो. ६४, को २५६ तोळे गौके दूधमें उकाळना। फिर उसकी छालको निकाळ कर भीतरके सफेद गोलको पत्थर पर घोंटकर दो २ माशेकी गोळियें बनाना और उन गोलियोंको गौके घृतमें तल लेना। पीछे उन गोलियोंके वजनसे दोगुनी सकरकी चासनी कर उसमें ऊपर कही गोळियोंको डालकर पीछे फिर शहदमें डालना। संध्या सुबह प्रतिदिन आधे २ रुपये भरकी गोळियां खाना। इससे वीर्यका स्तम्भन होता है।

२६ पके आमका रस १०२४ तोला, सकर २५६ तोळा घृत ६४ तोला, शहद ३२ तोला, सौंठ ३२ तोळा, काली मिरच १६ तोळा; पीपळ ८ तोळा; जळ २५६ तोळा और हरड़ा धनिया, जीरा, चित्रक, नागरमोथा, तज कलौंजीजीरा, पीपरीमूल, इळाइची, जायफळ, लौंग; नागकेसर, और अभ्रक

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भस्म इन हरएकको चार २ तोले जलमें सकरका पाककर सब वस्तुयें डालनी और ठंडा होनेके पश्चात् शहद डालना। शक्तिके अनुसार खानेसे पुरुषातन बढता है।

२७ पारेकी भस्म, (यदि शुद्ध भस्म हो तो) तो. ४, बंग भस्म तो. ८, अभ्रक भस्म तो. १६, शितावरीका चूर्ण तो. २८, दालचीनी तमालपत्र, इलायची, नागकेसर, जावत्री, सोंठ, कालीमिरच, पीपल, लौंग, और जायफल इन सबको आठ २ तोला अलग २ कूटकर चूर्ण कर लेना, पीछे १९ तोला घृत, घृतके बराबर सकर और २७२ तोला शहद। इनका धीमी आंचसे पाक बनाना। उसमेंसे चार २ तोलेका लड्डू सायंकालको खाना। और एकसे दो मासतक सेवन करना। इस औषधसे अत्यन्त पुरुषातन बढता है।

२८ पीपल कूटा हुवा ६४ तोले लेकर २५६ तोला गायके दूध में धीमी २ आंच देकर पकाना। फिर १२८ तोला घृत डालकर उसका दाना पाड़ना। पीछे २५६ तोला सकर की चासनी करके उपरोक्त औषधी तथा खैरकी गोंद ६४ तो. तज, तमालपत्र, नागकेसर, और एलायची, इन सबका चार चार तोले चूर्ण, मिलाकर पाक तैयार करना। इस पाक को शक्ति

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्रमाण खाने से शक्तिको बढ़ाता है व जठराग्निको प्रदीप्त करनेके साथही जीर्णज्वर, क्षय, श्वांस, पांडुरोगादिको नष्ट करता है।

२९ बिलाईकंद, शेमलेका मूल, चित्रकमूल, शतावरी, काली और सफेद मूसली इन सबका चूर्ण कर १–१ तोला और अभ्रक भस्म ६ तोला मिलाकर शक्ति प्रमाण रातको दूध के साथ पीनेसे सम्पूर्ण पुरुषातन प्राप्त होता है।

३० अभ्रक भस्म और लोहभस्म प्रत्येक १३ तोला, तथा इलायची, वांसकपूर, दाड़म, कपूरकाचली, तज. सौंठ, पीपर, काकड़ासिंगी, असगंध, लौंग, कालीमिरच, जायफल और तेजपत्र ये प्रत्येक १–१ तोला व इन सब के बराबर सक्कर मिलाकर शक्ति प्रमाणसे (अथवा १ तोला) खाना। इससे प्रमेहादि कितनेक रोग मिटकर शक्ति की प्राप्ति होती है।

३१ बड़ेशेमलेकी छालको छायामें सुखाकर महीन चूर्ण करना। चूर्णके समान शुद्ध गंधक मिलाकर पीछे शेमलेकी छालके रसकी सात भावनायें देनी, इनमेंसे एक, दो या तीन मासा किम्वा शक्तिके अनुसार पाव तोळे तक ले कर घृत और शहदके साथ रातको खाना और गौका दूध पीना।

३२ गंधक व आंवलेके चूर्णको आंवलेके रसकी और शेमलेके रसकी सात २ भावनायें देनी। उसको सक्कर व

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

शहदके साथ प्रतिदिन चाटकर ऊपरसे दूध पीना। इससे ८० वर्षका वृद्ध पुरुष भी स्त्री सेवनमें समर्थ हो सक्ता है।

३३ विदारीकंद, कालीमूसली, आंवला व पुनर्नवा इन सबका एक २ भाग और शुद्ध गंधक आधा भाग, पारा पाव भाग, गंधक पारेकी कजली करके उसमें अन्य वस्तुओंका चूर्ण मिलाना। पीछे उस चूर्णको सफेद शेमले की छालके रसकी और भेंसके दूधकी सात २ भावनायें देनी। इस प्रकार तैयार की हुई औषधमेंसे पाव तोला दवा शहद और घृतके साथ खाकर ऊपरसे दूध पीना।

३ तामसी वाजीकरणके उपाय.

कामी पुरुषोंके लिये ग्रन्थोमें तामसिक उपाय भी अनेक दिये गये हैं। ये उपाय मनुष्यको मदोन्मत बनाकर बुद्धि व विचारशक्तिका अनेकवार नाश करते हैं, क्योंकि उनमें आये हुए द्रव्य वाजीकरण होने पर भी कुछ अंशमें मादक तत्ववाले हैं। ऐसे द्रव्योमें भांग, धतूरा, और वैद्योंकी सलाह के विना उनके उपयोगमें लानेके लिये सम्मति नहीं दे सक्ते।

१ आंवला, सेन्धानमक, कूट, जायफल, पीपल, सौंठ, आजमाईन, अजमोद, मुलेठी, जीरा, शाहजीरा, धनिया, कपू-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

रकाथली, काकडासिंगी, बच, नागकेसर, तालीसपत्र, दाल-चीनी, तमालपत्र, इलायची, कालीमिरच, इन सबका चूर्ण एक १ तोला करना । बीजके सहित भांगको सेंककर उसका चूर्ण तो. २१, सक्कर तो. ४२ और लड्डू बनसके उतने प्रमाणमें घृत और शहद मिलाकर लड्डू बनाना। प्रमाण ½ तोला।

२ कपूर, सौंठ, कालीमिरच, पीपल, कूट, वांसकपूर, भूरे कोलेके बीज, तगर, तालीसपत्र, अकलकरा, गाजरका बीज, असगंध, शितावरी, मोचरस, पुनर्नवा दालचीनी, तेजपत्र, इलायची, चित्रकमूल, पीपरीमूल, सबको आधा २ तोला, और धतूरेका बीज, हिंगोला, गंधक, और शुद्ध पारा ये भी आधा २तोला । शुद्ध वछनाग, अफीम; तालमखाना और बड़के बीज ये हरएक २॥ तोला और लौंग, जावत्री, जायफल, और गिलोयका सत्व ये हरएक आधा तोला । सोनेका वर्क आध टांक, भांग तो ५ इनसबका चूर्ण करना, पीछे१२८ तोला गेहूं और ६४० तोला खसखस, इन दोनोंको चौगुने जलमें उकालकर जब चौथे भागका जल रह जाय, तब छानकर उसमें १२८ तोला चीनी; ६४ तोला घृत और ६४ तोला शहद डालना । चीनीका पाक बनाकर उसमें समस्त वस्तुयें डालनी और पाकके ठंडे हो जानेपर उसमें शहद डालना ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

छोटे बरके बीजके समान गोलियें बनानी और शक्तिके अनुसार एक किम्वा अधिक गोलियें खाकर ऊपर सकर डाला हुआ दूध पीना ।

३ अभ्रकभस्म, जावत्री, जायफल, सोंठ, कालीमिरच, पीपल, मूसली, कौंच, सफेद चंदन, गोखरू, असगंध, शेमछेका मूल, लौंग, तज, तेजपत्र, इलायची, सौंफ, अजमोद, सुगंधीखस, तालमखाना, रुमीमस्तकी, आजमाईन, खुरीसानी आजमाईन, रोउसघास, त्रिफला, भांग, और शितावरी इन सबको एक करके उसमेंसे एक तोलाभर खाकर ऊपरसे गौका दूध पीना।

४ शुद्धपारा और शुद्ध गंधक दो २ तोला, अभ्रकभस्म २ तोला, शुद्ध कपूर १ तोला, वंगभस्म आधातोला, ताम्रभस्म, आधातोला, लोहभस्म १ तोला और वरधारा, जीरा, विदारीकंद, शितावरी, एखरो, सौंफ, कौंच, अतिविष, जावत्री, जायफल, लौंग, भांगके बीज, सफेद राल और आजमाईन ये सब पाव तोला, सबको कूट एकत्र कर उसमेंसे २ तोभर चूर्ण खाकर ऊपर थोड़ा गरम ऐसा दूध पीना। इससे नसोंकी मंदता नष्ट होती हैं ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

५ जावत्री, जायफल, सफेद चंदन, केसर, पीपल, अकलकरा, सौंठ और लौंग इन सबको समान भागसे लेना और इन सबसे आधा अफीम मिलाकर उसमेंसे एक रती चूर्ण शहदके साथ रात्रीको खाना इससे वीर्यका स्तंभनहोता है।

६ केसर १ तोला, अफीम १ तोला, जायफल, कालीमीरच और जावंत्री ये हरएक दो २ तोला, लौंग ५ तोला और कस्तूरी ०॥ तोला, इन सबको साथ मिलाकर उसमेंसे तीन रत्तीभर चूर्ण शहदके साथ खानेसे वीर्यका स्तंभन होता है।

स्त्री उपयोगी उपाय।

जब पुरुषोंके लिये वाजीकरण उपाय है, तब स्वभाविक रीतिसे प्रश्न उपस्थित होता है, कि क्या स्त्रियोंके लिये ऐसे उपाय नही हैं? शरीरकी आरोग्यता, अवयवोंकी द्रढता और सामान्य रीतिसे शरीरकी पुष्टता यही वाजीकरण है। स्त्रियोंको भी आरोग्य रहना चाहिये। और गुह्य अवयवोंकी शुद्धि व द्रढता रखनी चाहिये। वह किस लिये? विषयसुखके लिये ही नहीं; किन्तु उत्तम विषयसुखके साथ २ उत्तम गर्भको धारण करनेके लिये स्त्रियोंको प्रदर प्रभृति रोग हों, तो इस

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

निबंधमें बताये हुए उपाय करके किम्बा कुशल वैद्य या डाक्टरकी सलाह लेकर उन २ रोगोंको निवारण करना। स्त्रियोंको सबसे अधिक प्रबल इच्छा उत्तम सन्तान उत्पन्न करनेकी रहती हैं। स्त्रियोंको गर्भ नहीं रहता हो उनके लिये वैद्यकशास्त्रकी मर्यादा और आज्ञाके अनुसार हम यहांपर कुछ उपाय दे कर "वाजीकरकल्पतरु" की समाप्ति करेंगे।

१ बला, सक्कर, अतिबला, मुलैठी, बड़के अंकुर, नागकेसर इन सबके चूर्णको शहद, दूध व घृतमें पीना।

२ असगंधका क्वाथ करके उसकेसाथ उबाला हुआ दूध घृत डालकर रजस्वला स्त्रीने चौथे दिन स्नान करके पीना चाहिये।

३ पारसपीपलके फलको जीरेके साथ खाना और उसके ऊपर हित अर्थात् उत्तम आहार करना।

४ कटसरैयाका मूल, धवके फूल, बड़के अंकुर, काला कमल इनका चूर्ण करके दुधमें पीना।

५ पुत्रजननी वेलको दूधमें पीसकर उसे पीनेसे और नाकसे सूंघनेसे पुत्रका गर्भ रहता है।

६ एरंडोका बीज और बिजोरेका बीज इनको घृतमें पीसकर पीनेसे गर्भ रहता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

७ एक बिजोरेके समस्त बीज पीसकर स्त्री दस्तानके अन्तमें उसे पीवे तो पुत्रका गर्भ रहे।

८ मासिक धर्म होनेके पश्चात् चौथे दिनसे नागकेसरका चूर्णमासे ४, दूधमें तीन दिन तक पीना। इस विधिके साथ पति सम्बन्ध करनेसे गर्भ रहता है।

९ तिलका तेल, दूध, सक्कर, दहीं, घृत इनको समान भागसे लेकर एकत्र कर उसमेंसे प्रतिदिन ४ तोळा प्रवाहीमें दो मासा पीपलका चूर्ण मिलाकर तीन दिन तक ऋतु को प्राप्त हुई स्त्रीने पान करना चाहिये।

१० सौंफ, भटकटैया, पीपल, और नागकेसर इन सबको समान भागसे लेकर उसका महीन चूर्ण गौके पावभर दूधमें सात दिन तक पीना।

११ वेरीकीछाल, बबूरकी छाल ओर दाड़मकी छाल इन तीनोंको पृथक २ कूट कर कपड़ छन करना, फिर उन्हे १२ सेर जळमें एक कलईके पात्रमें डालके उबालना। उस उकाळे हुए जलको चिनीमाटी (बरणी) के पात्रमें भर देना। उसमेंसे प्रतिदिन २ तोला लेकर १ तोला शहद और १॥ तोला घी डालकर पीना। ४९ दिन पीनेसे वृद्ध स्त्रीको भी गर्भकी प्राप्ति होती है, ऐसा वैद्यक शास्त्रका मत है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

१२ पका केला १, कपूर तोला १ वांसकपूर तोला १ तीनोंको केलाके पत्तेमें लपेटकर तुलसीके नीचे संध्याके समय गाड़ देना। दूसरे दिन संध्या समय निकाल कर तथा बांटकर उसकी ६ अथवा ३ गोलियां करना। फिर मासिक धर्मके चौथे दिनसे सायंकालमें १-१ गोळी खाने व पुरुष संबध करनेसे गर्भ की प्राप्ति होती है।

१३ जायफल, लौंग, कपूर, केसर और शुद्ध सिगरफ १-१ भाग और रुद्रवंती ५ भाग इन सबको गायके दूधमें एक दिन खरल करके २-२ रत्तीकी गोलियां करना। मासिक धर्मके चौथे दिनसे खाना प्रारंभकरना। प्रति दिन २-२ गोळी ४ दिन तक खाना। ऊपरसे गायका पावसेर दूध पीना, दूध भातका भोजन करना, व इन्ही ४ दिन पति संबध करना। इत प्रमाणसे ३ मासिक धर्मतक करनेसे वंध्या स्त्रीको भी पुत्र की प्राप्ति होती है।

१४ पीत-पापरा शहदमें पीसकर योनिमें लेप करके पति सम्बन्ध करना।

गर्भ धारणके ये समस्त उपाय हमने स्वयं नहीं आजमाये हैं, किन्तु वैद्यकशास्त्रमें ये उपाय लिखे गये हैं, और वे उपाय निर्भय हैं, इससे इनकी आजमाईश करनेमें कोई हानि

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

नही हैं । इस विचारसे हमने उन्हें यहां स्थान दिया है । ये उपाय सत्य हैं या असत्य हैं, अनुभव किये विना ऐसा कहना अनुचित है । स्त्रियोंके योनि दोष और गर्भकी विकृतियां गर्भका प्रतिबन्ध कर्ता हैं । ऋतुके समयमें ही इन उपायोंको करना चाहिये ।इससे मालूम होता है,कि ये उपाय गर्भाशयकी विकृतिको दूर करनेमें सहायक बनते होंगे । पुरुषोंके बीज व स्त्रियोंके रजको सुधारनेवाले उपाय हैं, इसमें कुछ भी संदेह नही हैं तो इन उपायोंसे स्त्रियोंका रज सुधर कर गर्भकी स्थिति बंधती हो तो कोई आश्चर्यकी बात नहीं है । वैद्यकशास्त्ररूपी महासागरमें ऐसी अनेक बातें रह गई हैं कि जिनका अभीतक अनुभव नहीं किया गया । ये समस्त गुह्य व गुप्त उपचार हैं, और उपचारकों को ऐसे उपायोंका अनुभव करनेके लिये बहुत कम अवसर मिलता है । इस लिये केवल अनुभवके लिये ही इन उपायोंको यहां पर स्थान दिया है । आग्रही मनुष्योंने अनुभव कर लेना चाहिये ॥

गर्भ धारणके समयमें स्त्रीपुरुषोंके उत्तम आहार और आचार पालन करनेकी जरूरत है, इसी लिये उपरोक्त प्रयोगोमें ऋतु प्राप्तिके पश्चात् गर्भधारणके प्रयोग करनेके समय दूध व चावलको सेवन करनेकी आज्ञा दी है । इन उपायोंके

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विना किये भी ऋतुस्नाता स्त्रीका सम्बन्ध करने पर उत्तम गर्भकी इच्छा रखने वाले स्त्रीपुरुषोंने दूध चावलके समान उत्तम खुराकका पथ्य रखना यह सबसे हितकारी है।

इस सम्पूर्ण निबंधका प्रधान अभिप्राय स्वयं निरोगी रह कर उत्तम प्रजाको उत्पन्न करनेके लिये योग्य उपाय बताने का था, और वह इस छोटेसे निबंधमें जहांतक दिखाया जा सक्ता है वहीं तक दिखानेकी चेष्टा की गई है।

हमने इसकी प्रस्तावनामेंही निवेदन किया है, कि यह निबंध युवकोंको व्यभिचार, अतियोग और दूसरी खराबियोंमें नहीं फसाकर उनमेंसे निकालनेके उद्देशसे लिखा जाता है। मातापिता इन समस्त बातोंको लक्ष्यमें रखकर अपनी तरुण प्रजाके शारीरिक मानसिक व नैतिक सुधारके लिये तरुण प्रजापर पूर्ण द्रष्टि रक्खेंगे तो हमें आशा है, कि संसारमें जो भ्रष्टता, और शारीरिक पाप बढ रहे हैं उनका प्रतिबंध होगा।

सम्पूर्ण.

Acc. C08 / 804

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वैद्यकल्पतरुके सम्पादक द्वारा गुजराती भाषामें वैद्यक सम्बन्धी रचित व प्रकाशित पुस्तकोंकी सूची।

नाम.	मूल्य.
१. घरवैदुं (तृतीय संस्करण)	३–०–०
२. वाग्भट्ट सूत्रस्थान (भाषा टीका समेत)....	१–०–०
३. युवावस्थानो शिक्षक (तृतीय संस्करण)....	१–०–०
३. धात्रीशिक्षा (दो भाग)	१–८–०
५. सारीसन्तति (द्वितीय संस्करण)	१–८–०
६. रोगीपरिचर्य्या (दो भाग)	१–८–०
७. रोगनिवारण नवीन विद्या	०–८–०
८. वाजीकर कल्पतरु (द्वितीय संस्करण)	०–४–०
९. आरोग्य रहेवाना उपायो–(पञ्चम संस्करण)	०–२–०
१०. ब्रह्मचर्य (तृतीय संस्करण)	०–२–०
११. बाललग्न (द्वितीय संस्करण)	०–२–०

सूचना–पोष्टेज पृथक् लिया जाता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu